वनस्पति वीथिका



वनस्पति वीथिका



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

अगस्त 2016 भाद्रपद 1938

पुनर्मुद्रण

जून 2020 ज्येष्ठ 1942

PD 481T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2016

₹ 140.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटर्स प्रैस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मथुरा (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-93-5007-812-9

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टीकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 **फोन : 011-26562708**

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेट
बेंगलुरु 560 085 **फोन : 080-26725740**

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 **फोन : 079-27541446**

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 **फोन : 033-25530454**

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 **फोन : 011-26562708**

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*

मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*

मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरूण चितकारा*

मुख्य व्यापार प्रबंधक : *विपिन दिवान*

संपादक : *ऐस. परवेज़ अहमद*

उत्पादन सहायक : *मुकेश गौड़*

आवरण

अमित श्रीवास्तव

पुरोवाक्

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यपुस्तकों एवं पूरक पुस्तकों के अतिरिक्त समय-समय पर विशिष्ट महत्त्ववाली पुस्तकों का निर्माण एवं प्रकाशन भी करती रही है। ये पुस्तकें विद्यालय स्तर के छात्रों के साथ-साथ सामान्य जिज्ञासुओं के लिए अत्यंत उपयोगी होती हैं।

महत्त्वपूर्ण पुस्तकों के प्रकाशन की कड़ी में भाषा शिक्षा विभाग ने *वनस्पति-वीथिका* नामक पुस्तक का प्रणयन किया है। इस पुस्तक में परिषद् के हर्बल उद्यान में उगाई तथा संरक्षित वनस्पतियों सहित 113 वनस्पतियों का परिचय दिया गया है और यह भी प्रयास किया गया है कि इस पुस्तक में वर्णित वनस्पतियों के औषधीय उपयोग की भी जानकारी प्राप्त हो, जिससे सामान्य स्वास्थ्य तथा पर्यावरण रक्षा में सहायता मिल सके। पुस्तक में वनस्पति के परिचय हेतु संस्कृत ग्रन्थों विशेषत: चरक, सुश्रुत तथा भावप्रकाश ग्रन्थों से श्लोकों का चयन कर हिन्दी तथा अंग्रेज़ी में भावानुवाद देकर विषय को सरल एवं सुगम बनाया गया है।

इस पुस्तक को मूर्त रूप देने के लिए प्रो. कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *अध्यक्ष*, भाषा शिक्षा विभाग, श्री अविनाश पाण्डेय, *जे.पी.एफ.*, संस्कृत तथा पुस्तक निर्माण में विविध सहयोग के लिए परिषद् के हर्बल उद्यान की संयोजिका, प्रो. सुनीता फरक्या, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग विशेष धन्यवाद की पात्र हैं।

आशा है यह पुस्तक विद्यार्थियों सहित जन सामान्य के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। पुस्तक को और उपयोगी बनाने के लिए प्राप्त सुझाओं का सतत् स्वागत है।

हृषिकेश सेनापति
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्

नवदेहली
अगस्त 2016

भूमिका

श्रीमन्महेशनलिनासननिर्जरेन्द्रा -
स्तत्राश्विनावथ ततो त्रितनूद्भवश्च।
धन्वन्तरिश्चरकसुश्रुतसूरिमुख्या -
स्तेऽप्यायुरागमकृत: कृतिनो जयन्तु।।

– राजनिघण्टु:

शंकर, ब्रह्मा, इन्द्र, दोनों अश्वनीकुमार, त्रितनूद्भव (दत्तात्रेय), धन्वन्तरि, चरक तथा सुश्रुत आदि देवता तथा महर्षि आयुर्वेद के प्रवर्तक हुए। प्रस्तुत मंगलपद्य से भारतीय आयुर्वेद-परम्परा का धार्मिक बोध हो जाता है। शिव से समुद्गत तथा चरक - सुश्रुत तक व्याप्त यह आयुर्वेद-परम्परा बहुत ही प्राचीन है।

भारतवर्ष में प्राप्त होने वाली वनस्पतियों में मानव शरीर को स्वस्थ रखने तथा रोगमुक्त करने की अनुपम क्षमता है। इसका ज्ञान प्राचीन वैद्यक ग्रन्थों से प्राप्त होता है। साथ ही लोक-परम्परा में कई पेड़-पौधों के विषय में ऐसी ही धारणा प्रचलित रही है। वनों तथा गाँवों में इनका प्राकृतिक रूप से संवर्धन होता रहा है। अब कुछ नगरों की वनस्पति-शालाओं में भी कृत्रिम रूप से इनका संरक्षण होने लगा है। आज के प्रदूषण-युक्त वायुमण्डल की शुद्धि के लिए भी इनकी महती उपयोगिता है। बहुत से घरों में तात्कालिक उपयोग के लिए अनेक पौधों को उगाया जाता है। जैसे-धनिया, पुदीना, अदरख, घृतकुमारी (एलोवेरा), नींबू, गुलाब आदि। कुछ पौधे सब्जी के रूप में तो कुछ मसालों के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

संस्कृत सप्ताह के आयोजनों के क्रम में परिषद् परिसर में संरक्षित वनस्पतियों के लिए संस्कृत श्लोकों (हिंदी तथा अंग्रेजी अर्थ सहित) की पट्टिकाएं लगवाने का विचार किया गया। पट्टिकाएं लगवाने के साथ-साथ वनस्पतियों का परिचय देने वाली एक लघु पुस्तिका के निर्माण का भी संकल्प किया गया जो *वनस्पति-वीथिका* नाम से प्रस्तुत की जा रही है। इन वनस्पतियों की विशेषताएँ आयुर्वेद के ग्रन्थों में गुणधर्म के रूप में विस्तार से वर्णित हैं। उन विशेषताओं को इस पुस्तक में सम्बद्ध ग्रन्थों से मूल संस्कृत में लेकर उनका भाव सरल अंग्रेजी तथा हिन्दी में प्रस्तुत की जा रही है। यहाँ वनस्पतियों के परिचय के साथ उनके चित्र साथ ही साथ उनके संस्कृत, अंग्रेजी तथा वनस्पतिशास्त्रीय (Botanical) नाम दिये गये हैं। नामों को अकारादिक्रम (Alphabetical Order) में भी रखा गया है।

पुस्तिका में दी गयी अधिकांश वनस्पतियाँ राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के परिसर में संरक्षित तथा संवर्धित हैं। इनके लिए पृथक वनस्पति-उद्यान को विकसित किया गया है, जहाँ पौधों के नाम की पट्टिकाएं लगाई गयी हैं। परिषद् में आने वाले विभिन्न प्रदेशों के प्रतिभागी इस उद्यान को देखने के लिए उत्सुक रहते हैं। इस पुस्तक में दिया गया उन पेड़-पौधों का परिचय जन-

सामान्य एवं वनस्पतिशास्त्रियों के लिए भी उपयोगी होगा। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् अपने भाषा शिक्षा विभाग द्वारा इस प्रकार की उपयोगी पुस्तकों का समय-समय पर निर्माण करती रही है। **वनस्पति-वीथिका** का विकास भी इसी परम्परा की एक कड़ी है जो परिषद् परिसर के उद्यान में संवर्धित-संरक्षित वनस्पतियों के सम्यक् ज्ञान के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रो. बी.के. त्रिपाठी, निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. हमारे प्रमुख प्रेरणास्रोत रहे हैं जिन्होंने समय-समय पर उत्साहवर्धन करने के साथ हमारा मार्गदर्शन भी किया है। उन्हीं के निर्देश पर विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग की प्रो. सुनीता फरक्या ने वनस्पतियों की सूची प्रदानादि द्वारा अनेकविध सहयोग किया है। इस पुस्तक के टायपिंग कार्य के लिए कु. अनिता, पवन कुमार बरियार, *डी.टी.पी. ऑपरेटर,* प्रकाशन प्रभाग तथा संपादन सहयोग के लिए रणवीर पराशर, *प्रूफ रीडर,* प्रकाशन प्रभाग धन्यवाद के पात्र हैं।

आशा है यह पुस्तक विशेषज्ञों, आधुनिक वनस्पतिशास्त्रियों तथा सामान्य जिज्ञासुओं की वनस्पस्ति विषयक प्राचीन भारतीय मेधा के योगदान के प्रति जिज्ञासा का शमन करने में सफल होगी।

औषधियों से ही रोगों का नाश संभव है और रोगों के नाश से ही मनुष्य स्वस्थ रह सकता है।

यथा प्रज्वलिते दीपे गाढं विघ्वंसते तम:।

रोगा दरं पलायन्ते तथा सति महौषधे।।

संपादक

पुस्तिका-निर्माण में सहयोग प्रदान करने वाले विद्वानों की सूची

अभिराज राजेन्द्र मिश्र, *पूर्व कुलपति*, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

अविनाश पाण्डेय, *जे.पी.एफ.*, संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

ददन उपाध्याय, *अतिथिप्राध्यापक*, वैदिक दर्शन विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

नवल किशोर, *बैंक मैनेजर* (सेवा निवृत्त)

प्रभाकर पाण्डेय, *जे.पी.एफ.*, संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

बी.के. त्रिपाठी, *निदेशक*, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

मधु गौतम, *पी.जी.टी.,* अंग्रेज़ी (सेवा निवृत्त), केन्द्रीय विद्यालय

लता अरोरा, *पी.जी.टी.*, संस्कृत (सेवा निवृत्त), केन्द्रीय विद्यालय

हीरालाल शर्मा, *विभागाध्यक्ष*, आयुर्वेदिक, अनुसंधान-विभाग, पतञ्जलि योगपीठ, हरिद्वार

श्यामदेव मिश्र, *वरिष्ठ सहायकाचार्य* एवं *संयोजक* (ज्योतिष), राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)

सी.के.आर्य, *प्राचार्य* (सेवा निवृत्त), केन्द्रीय विद्यालय

सुनीता फरक्या, *प्रोफ़ेसर*, वनस्पति शास्त्र, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

सदस्य समन्वयक (संपादक)

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *अध्यक्ष*, भाषा शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

जतीन्द्र मोहन मिश्र, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

संकेताक्षर-सूची

आम्रा.व.	आम्रादि वर्ग
गुडू.व.	गुडूच्यादि वर्ग
धा.व.	धात्वादि वर्ग
ध.नि.	धन्वतरि निघण्टु
पु.व.	पुष्प वर्ग
फला.व.	फलादि वर्ग
भा.व.	भावप्रकाश
शा.व.	शाक वर्ग
सुश्रु.सं.	सुश्रुत संहिता
ह.व.	हरितक्यादि वर्ग
प्र.व.	प्रथम वर्ग
वटा.व.	वटादि वर्ग

निवेदन -

पुस्तक में वनस्पतियों पर दी गई सामग्री ज्ञानवर्धन के लिए है। वनस्पतियों का औषधि के रूप में प्रयोग विशेषज्ञ के परामर्श पर ही करें।

विषय–सूची

1. आम (Aām) 1
2. अदरक (Ādarak) 2
3. अडूसा (Adūsa) 4
4. अजवायन (Ajvāyan) 6
5. आक्, मदार (Āk, Madār) 8
6. आमला (Āmala) 10
7. अमलतास, सोनहाली (Amaltās, Sonahālī) 12
8. अमियाहल्दी (Amiyāhaldī) 14
9. अनन्तमूल, सलसा (Anantmula, Salasā, Krsnasveta) 15
10. अरनी (Aranī) 17
11. अर्जुन (Arjun) 19
12. अरुई (Arui) 21
13. अश्वगन्ध, असवगन्ध (Asgandh, Aśvagandha) 23
14. अशोक (Aśoka) 25
15. बादाम (Badama) 27
16. बैंगन (Baigan, Bagan, Bhanta) 29
17. खीरा (Balam Khira, Khira) 31
18. बथुआ, चिल्लीशाक् (Bathua, Cillisak) 32
19. बेल, श्रीफल (Bel, Sriphal) 34
20. बेला (मोगरा, मोतिया) (Belā) 36
21. बेरा (Berā) 37
22. भाँग, बूटी, गाँजा (Bhānga, Būti, Gānjā) 38
23. भृङ्गराज, भङ्गरइया (Bhrngarāja, Bhangaraiyā) 39
24. भूई-आमला (Bhūīamalā) 41
25. ब्राह्मी, मण्डूकपर्णी, जलनीम (Brāhmī, Maṇḍūkaparnī, Jalanīma) 42
26. चन्दन (Candana Safeda) 44
27. चाङ्गेरी (Cāngerī, Tinapatiyā) 46
28. चनसूर (Canasūra, Halon) 47
29. चौपतिया (Caupatiyā, Sunsuniya) 48

30. चकवड़, पावँड़ (Chakavad) 49
31. छोटी-दन्ती और बड़ी दन्ती (Chotī Dantī and Badī Dantī) 51
32. चिचिण्डा (Cicindā) 53
33. चिरचिरा, लाल चिरचिरा (Ciracirā, Lāl Ciracirā) 55
34. चिरौंजी (Ciraunjī) 57
35. चिरायता (Cirāyatā Ciretā) 59
36. धनियाँ (Dhaniyām) 61
37. धतूर (Dhatūra) 63
38. दूधिया (Dudhiyā) 65
39. एरंड, रेड़ (Erand) 67
40. घीकुआँर (Gheekuar) 69
41. गिलोय (Giloy, Guruca, Guduca) 71
42. छोटा गोखरु, हथीचिकार (Gokharu, Hathicikar) 73
43. गुलाब (Gulāb) 74
44. गूलर (Gular, Gullar) 76
45. हल्दी (Haldī) 77
46. हींग (Hīng) 78
47. जामुन, फरेन्द्रा (Jāmun, Pharendrā) 79
48. जीरा (Jirā) 80
49. कचनार (Kacanar) 82
50. कागजीनिम्बु (Kagazinimbu) 84
51. काजू (Kaju) 86
52. बनकंघी, ककहिया (Kakahiya) 88
53. कालासेमर (Kalasemar) 89
54. कलिहारी (Kalihari) 90
55. कमलगट्टा (Kamalgatta) 91
56. कनैल (Kaner, Kanail) 93
57. कपूर (Kapur) 95
58. करेला (Karela, Karaita) 97
59. कसौंदी (Kasaundi) 99
60. कठगूलर (Kathgūlar) 101
61. कठजामुन (Kathjamun) 103
62. केवड़ा (Kevada) 104

63. खजूर (Khajura) 105
64. खर्बूजा (Kharbuja) 107
65. खस (Khas) 109
66. ककोड, खेखसा (Khekhasa, Kakodā) 111
67. कुश (Kuśa, Dharbh, Kuśaghas) 113
68. लहसुन (Lahasun, Lasun) 114
69. लाजवन्ती (Lajavanti) 116
70. माधवी (Madhavi) 118
71. महुआ (Mahua) 119
72. मकोय (Makoy) 121
73. मरिच (काली मरिच) (Marich) 123
74. मौलसिरी (Maulsiri) 124
75. मेथी (Methi) 125
76. मोगरा (मोतिया, बेला) (Mogra, Motiya, Bela) 126
77. मोरपंखी (Morpankhi) 127
78. मोथा, नागरमोथा (Motha, Nagara Musta) 128
79. मुलेठी (Mulethi) 130
80. मूली (Muli, Murai) 131
81. मुरई का पत्ता (Murai ka patta) 133
82. मुश्क (Musk dana, Latakasturi) 134
83. नरसल, नरकट (Narsal, Narakata) 136
84. नीम (Neem) 137
85. नेनुआ, बड़ी तोराई (Nenuā, Badi torai) 139
86. पाचोली (Pācolī) 140
87. पालक (Pālak) 141
88. परवल, परोरा (Pārval, Parora) 142
89. पीप्पली (Pīppalī) 143
90. प्याज़, पियाज (Pyaj, Piyāja) 145
91. सदाबहार (Sādabāhar) 147
92. सफेद कद्दू (Safed Kaddu) 149
93. सफेद पुनर्नवा, रक्त पुनर्नवा
(Safed Punernavā, Rakta Punernavā) 150
94. सहतूत, तूत (Sahatūta, Tūta) 152

95. सहिजन (Sahijan) 153
96. संतरा, नारङ्गी (Santarā, Nāraṅī) 155
97. शालवन (Śārivan, Śālavan) 157
98. शतावरी, शतमूली (Śatāvari, Satamuli) 158
99. सेम (Sema) 160
100. शङ्खहुली (Shankhhuli) 161
101. सिंदुवार, निर्गुण्डी (Sinduvāra) 163
102. सौंफ, बड़ी सौंफ (Somph, Badi Somph) 165
103. सोंठ (Sonṭ) 167
104. सुदर्शन (Sudarsan, Sukhadarsan) 169
105. सुपारी (Suparī) 170
106. सूरन (Sūran) 172
107. तरबूज (Tarbuj) 173
108. तुलसी (Tulasī) 174
109. तुम्बी, लौकी (Tumbī, Laukī) 176
110. वच, बच (Vac, Bac) 177
111. वकायन (Vakāyan) 178
112. वृद्धारु (Vriddhadāru) 179

1. आम
Aām

संस्कृत – *आम्र:*
अंग्रेज़ी – Mango
बोटेनिकल –*Mangifora indica*



आम - Aām

आम एक फलदार वृक्ष होता है। इसका फल सब फलों का राजा माना जाता है। इसका वृक्ष 30 से 40 फीट लम्बा तथा छत्राकार होता है। इसके पत्तों एवं लकड़ियों का पूजन में भी प्रयोग होता है। यह भारत के सभी क्षेत्रों में पाया जाता है।

Aām is a fruit tree. This fruit is considered to be the king of all fruits. Its tree is approximately 30 to 40 feet tall having the shape of umbrella. Its leaves and wood are used on auspicious occasions and in the worship of deities. It is found in all the parts of India.

आमं बालं कषायाम्लं रुच्यं मारुतपित्तकृत्।
तरुणं तु तदत्यम्लं रुक्षं दोषत्रयास्रजित्॥

(भा.प्र.आम्रा.व.3)

छोटा आम कषाय, अम्लीय एवं स्वादिष्ट होता है। यह वात-पित्त में वृद्धि करता है। यदि कच्चा हो तो वह अत्यन्त अम्लीय (खट्टा) और यदि सूखा हो तो वह तीनों दोषों (वात, पित्त, कफ) तथा रक्त में संवृद्धि करता है।

Small fruit of *āmra* is astringent, sour and tasty. It increases vāta and pitta. When raw it is very sour and if dry it aggravates all three *doshas* and rakta.

2. अदरक
Ādarak

संस्कृत – *Ārdrakam (आर्द्रक:)*
अंग्रेज़ी – Green ginger
बोटेनिकल – *Zingiber officinable roscoe*



अदरक - Ādarak

अदरक एक प्रकार की प्रकन्द है। इसका पौधा हल्दी के समान होता है। यह लगभग 1½ से 2 फुट ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ 15 से 35 से.मी. लम्बी तथा 2 से 3 से.मी. चौड़ी और सीधी होती हैं। पौधे की जड़ में गाठें सी बन जाती हैं, ये गाठें अदरक कहलाती हैं। इसकी जड़ (अदरक) में औषधीय गुण होता है। यह भारत में सभी जगह होता है।

Ādarak (Ardrakam) is a bulb (root). It is approximately 1½ to 2 feet high. The leaves of ā*draka* are 15 to 35 cm long and 2 to 3 cm wide-straight. The plant develops bulbs at roots. These bulbs are called ā*draka*. Ādarak (roots) has great medicinal value. It is found all over India.

कटुका मधुरा पाके रूक्षा वातकफापहा।
ये गुणा: कथिता शुण्ठ्यास्तेऽपि सन्त्यार्द्रकेऽखिला: ॥
भोजनाग्रे सदा पथ्यं लवणार्द्रकभक्षणम्।
अग्निसन्दीपनं रुच्यं जिह्वाकण्ठविशोधनम् ॥
कुष्ठपाण्ड्वामये कृच्छ्रे रक्तपित्ते व्रणे ज्वरे ॥
दाहे निदाघशरदोर्नैव पूजितमार्द्रकम् ॥

(भा.प्र.ह.वर्ग. 50, 51, 52)

अदरक कटुरसयुक्त विपाक (पाचन के पश्चात्)में मधुर रसयुक्त, रूखा, वात तथा कफ को नष्ट करने वाला होता है। जितने गुण अदरक में बताए जा रहे हैं वही सब सोंठ (सूखी अदरक) में भी पाए जाते हैं। भोजन करते समय सर्वप्रथम सर्वदा सेंधा नमक के साथ

अदरक खाना चाहिए क्योंकि यह अग्नि को दीप्त करने वाला, रुचिकारक, जिह्वा तथा कण्ठ का शोधन करने वाला होता है। कुष्ठ, पाण्डुरोग (पीलिया), मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त (पित्त युक्त रक्त अर्थात् दूषित रक्त) रोग, व्रण (घाव, चोट), ज्वर, दाह (जलन) तथा शरद एवं ग्रीष्म ऋतु में हितकर नहीं होता है।

Ārdrak is purgative, hot in potency, augments digestive fire, pungent in taste, sweet after digestion causes dryness, mitigates vāta and kapha (phlegm). The dried ā*darak* (sonth) carry the properties of fresh ā*darak*.

Chewing a small quantity of lavana (saindhava) and *ārdrak* (both together) before meals is good for health, it enhances digestive fire, taste and purifies the tongue and throat.

Consuming ā*rdarak* is not advisable in diseases like leprosy, jaundice, dysuria, bleeding diseases, ulcers, fever, burning sensation, during nidāgha (summer) and śarad seasons. (autumn).

3. अडूसा
Adūsa

संस्कृत – *Atrushah (अटरुष:)*
अंग्रेज़ी – Malabar Nut
बोटेनिकल – *Adhatodavasica Nees*



अडूसा - Adūsa

अडूसा एक औषधीय पौधा है जो छोटे आकार वाला झाड़ीनुमा होता है। इसका तना मज़बूत और पत्तियाँ 4 से 8 इंच लम्बी और 1.25 से 3 इंच तक चौड़ी होती हैं और आगे की ओर नुकीली होती हैं। इसकी प्रत्येक फली में चार बीज होते हैं। यह शिरोरोग, नेत्ररोग, मुखरोग, वक्षरोग, उदररोग इत्यादि में लाभप्रद है। इसके पुष्प, मूल तथा पत्र सभी औषधीय दृष्टि से लाभदायक हैं। यह पौधा भारत के लगभग हर क्षेत्र में पाया जाता है।

Adūsa (Atrushah) is a small size shrub having medicinal value. Its stem is strong and leaves are pointed. These are 4 to 8 inches long and 1.25 to 3 inches wide. Each legume of plant has four seeds. Its flower, stem and leaves are full of medicinal properties. It is beneficial in diseases of head, eyes, mouth, chest and stomach. This plant grows everywhere in India.

अटरुषो वृषस्ताम्र: सिंहपर्णश्च स स्मृत:।
वासको वातकृत्स्वर्य: कफपित्तास्रनाशन: ॥

(भा.प्र.गुडु.व. 6/89)

तिक्तस्तुवरको हृद्यो लघुशीतस्तृडर्त्तिहृत्।
श्वासकासज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापह: ॥

(वही, 6/90)

अटरुष या अडूसा के पर्याय हैं – वृष, ताम्र (ताम्रवर्णी), सिंहपर्ण और वासक (वसाका)। यह वात को दूर करने वाला है।

अडूसा कफ, पित्त, गले के लिए लाभप्रद होता है। यह तिक्त एवं कड़वा होता है, हृदयरोग में लाभप्रद होता है। यह सरलता से पच जाता है एवं प्यास बुझाने में कारगर होता है। यह श्वास, कफ, ज्वर, वमन (उल्टी), मधुमेह, कुष्ठ एवं क्षय रोगों को हरने वाला होता है।

There are several synonyms of Atrusha (or Adusa) like : Vrisha, Tamra (Tamra-parni), Simha-Parna and Vasaka.

Adūsa (vasāka) calms *vāta*, helps in (speech) voice, mitigates *Kapha*, *pitta*, asra (blood).It tastes bitter and astringent, good for the heart, easily digestible, cold in potency, relieves thirst and pain. It cures dyspnoea, cough, fever, vomiting, diabetes, leprosy and some other skin diseases and consumption.

4. अजवायन
Ajvāyan

संस्कृत – *Pārasīka, Yavāni*
(पारसीक, यवानी)
अंग्रेज़ी – Henbae
बोटेनिकल – *Hyoscyamus niger*



अजवायन - Ajvāyan

अजवायन एक औषधीय पौधा है जो 30 से 90 से.मी. तक ऊँचा होता है। यह शाखा-प्रशाखायुक्त, चिकना या किञ्चित् मृदुरोमश होता है। इसके पत्ते छोटे चन्द्रसूर या *धनियाँ* के पत्तों के समान कुछ कटीले तथा अनेक भागों में विभक्त होते हैं। पुष्प सफेद रंग के छत्रकों में होते हैं और इन छत्तों के पककर सूख जाने के बाद निकला हुआ विशिष्ट गन्धयुक्त फल अजवायन के रूप में प्रयोग होता है। इसके सेवन से अन्न का पाचन ठीक होता है। कहा गया है 'एका यवानी शतमन्नपाचिका' अर्थात् अकेली अजवायन ही सैंकड़ों प्रकार के अन्न को पचाने में सक्षम है।

Ajvāyan, medicinal plant, is 90 cm tall, having multiple branches. Its texture is smooth or slightly covered with silky hairs. Its leaves are small, similar to that of chandrasur or dhania, somewhat thorny, and divided in multiple parts. The white flowers of plant are in umbels,which when ripe and dry produce aromatic fruit *ajvāyan.* The use of *ajvāyan* help in digestion of food. It is said that *ajvāyan* alone can digest hundred types of food.

सैवोक्ता दीप्यका दीप्या तथा स्याद्यवसाह्वया।
यवानी पाचनी रुच्या तीक्ष्णोष्णा कटुका लघुः॥
दीपनी तथा तिक्ता पित्तला शुक्रशूलहृत्।
वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मप्लीहकृमिप्रणुत्॥
विशेषात्पाचनी रुच्या ग्राहिणी मादिनी गुरुः॥

(भा.प्र.ह.व. 6 (II), 76/77, 80)

अजवायन के अन्य पर्यायवाची नाम हैं - दीप्यका, दीप्या, यवसा एवं यवानी। यह पाचनी (पाचन में सहायक), रुच्या (रुचि को बढ़ाने वाला), गन्ध में तीक्ष्ण, स्वाद में कटु एवं गरम-तासीर वाली होती है। यह सरलता से पचती है। यह दीपनी (भूख बढ़ाने वाली), तिक्त, पित्तवर्द्धक एवं शुक्र-शूल रोग को हरती (समाप्त करती) है। यह वात, श्लेष्म (कफ), उदरशूल,विसूची, प्लीहा-राग (तिल्ली का बढ़ना), कृमि (पेट के कीड़े) का नाश करती है। विशेष रूप से यह भोजन को पचाने में सहायक, रुचि-वर्धक, ग्राहिणी (मल को बाँधने वाली) एवं मादिनी (मद अर्थात् हल्के नशे को) बढ़ाने वाली होती है।

Yavāni has other synonyms like: dipyaka, dipya, yavasā and yavānī. Yavānii is degestive, helps to develop taste, penetrating, hot in potency, pungent in taste, easily digestible, increases digestive fire, bitter in taste, increases pitta, destroys seminal pain, mitigates *vata slesma,* cures enlargement of the abdomen, flatulence, abdominal tumours diseases of spleen and worms. It enhances the mild stupefaction.

5. आक्, मदार
Āk, Madār

संस्कृत – *Arkha अर्क:*
अंग्रेज़ी – *Gigantic swallowwori*
बोटेनिकल – *Calotropis gigantea*
Calotropis procera



आक्, मदार - Āk, Madār

आक् एक दिव्य वनौषधीय पौधा है। यह लगभग 10 फीट ऊँचा होता है। इसके पौधों के सभी अंग रुई की तरह सफेद रोयों से आच्छादित रहते हैं। इसके पत्रवृन्त बहुत ही छोटे तथा पत्ते 10 से 15 से.मी. लम्बे, 2.5 से 7 से.मी. चौड़े मांसल व हृदयाकार होते हैं। इसके पुष्प सुगन्धित, गुच्छों में सफेद या लाल बैंगनी रंग के होते हैं। इसके फल भी 10 से 15 से.मी. लम्बे, 2.5 से 5 से.मी. तक चौड़े, अण्डाकार, बीच में कुछ मुड़े हुए होने के कारण तोते की चोंच जैसे लगते हैं। परिपक्व होने पर फल जब फटते हैं तब बीज हवा में उड़कर सब जगह फैल जाते हैं। आक् का सम्पूर्ण पौधा एक प्रकार के दुग्धमय एवं चरपरे रस से परिपूर्ण होता है। इसके किसी भी भाग को तोड़ने से सफेद रसमय दूध निकलता है। इसके पत्र, पुष्प, मूल, त्वक् इत्यादि सभी का अत्यधिक औषधीय महत्त्व होता है।

Āk is a divine wild medicinal plant. It is about ten feet tall. All its parts are covered with cotton wool like layer. Its petiole/ leafstalk are very small with heart shaped plump leaves which are 10 to 15 cm long and 2.5 to 7 cm wide. Its flowers are fragrant and white or red, purple and form panicles. Its fruits are 10 to 15 cm long and 2.5 to 5 cm wide. They are egg shaped, look like beak of a parrot. On being fully ripe its fruits explode with seeds flying and spreading all around. The whole plant is full of bitter milky juice. Milky juice is secreted on plucking any part of the plant. Its roots, leaves, flowers and skin all have great medicinal value.

अर्कद्वयं सरं वातकुष्ठकण्डूविषव्रणान् ।
निहन्ति प्लीहगुल्मार्श:श्लेष्मोदरशकृत्कृमीन् ॥

(भा.प्र.गुडू.वर्ग, 69)



आक्, मदार - Āk, Madār

दोनों प्रकार के *आक्* पेट साफ करने वाले होते हैं तथा वात-रोग, कुष्ठ, खुजली, विष, व्रण (अल्सर), प्लीहा-रोग, अर्श (बवासीर), गुल्म तथा श्लेष्म या कफ से उत्पन्न आमाशय-सम्बन्धी रोग तथा मल में उत्पन्न कृमियों के नाश करने में सहायक है।

Both types of *ākas* are laxative, cure diseases of *Vata*, leprosy (and other skin diseases), itching, poison, wounds, ulcers, enlargement of spleen, abdominal diseases and tumours, piles, caused by *Slesma* (kapha) and all kinds of worms in the intestine.

रक्तार्कपुष्पं मधुरं सतिक्तं कुष्ठकृमिघ्नं कफनाशनञ्च ।
अर्शो विषं हन्ति च रक्तपित्तं संग्राहि गुल्मे श्वयथो हितं तत् ॥
क्षीरमर्कस्य तिक्तोष्णं स्निग्धं सलवणं लघु ।
कुष्ठगुल्मोदरहरं श्रेष्ठमेतद्विरेचनम् ॥

(भा.प्र.गुडू.व, 71, 72)

रक्त *आक्* का पुष्प हल्की तिक्तता से युक्त, मधुर रस वाला, वात, कुष्ठ, खुजली, विष, व्रण और कफ का नाश करता है, अर्श (बवासीर), विष, रक्त -पित्त, गुल्म (फोड़ा) एवं सूजन को समाप्त करता है। *आक्* का दूध स्वाद में थोड़ा नमकीन युक्त तीखा होता है एवं कुष्ठ, गुल्म, उदर रोग को हरने वाला होता है। यह रेचन की अच्छी औषधि है।

Flower of *rakta arka* is sweet with slight bitter taste, cures vata leprosy, itching, mitigates *kapha*, haemorrhoids, poison, *rakta-pitta* (Bleeding) disease, abdominal tumours. *Āka* milk is the hot in potency, unctuous, slightly salty, cures leprosy (and other skin diseases), enlargement of the abdomen and is a best purgative drug.

6. आमला
Āmala

संस्कृत – *Āmalakī (आमलकी)*
अंग्रेज़ी – Embelic myrobalam
बोटेनिकल – *Emblica afficinalis geartre; Phyllantus emblica*



आमला - Āmala

आमला एक औषधीय वृक्ष है जो भारत में उद्यानों एवं जंगलों में सर्वत्र पाया जाता है। यह पेड़ मंझोले आकार वाला लगभग 30 से 35 फीट ऊँचा शाखा-प्रशाखाओं में फैला हुआ, छत्राकार का होता है। इसके पत्ते छोटे 8 से 12 मि.मी. लम्बे, 3 मि.मी. चौड़े, द्विपंक्तिक, हल्के हरित वर्ण के होते हैं। इसके फल के बीच में बीजयुक्त षट्कोणीय गुठली रहती है। *आमला* रसायन द्रव्यों में सर्वश्रेष्ठ है। इसके सेवन से वृद्धावस्था मनुष्य पर अपना प्रभाव नहीं डाल पाती है। इसलिए इसे अमृतफल कहा गया है। फलों का स्वाद पहले कुछ कसैला तथ खट्टापन युक्त होता है। इन्हें खाकर जल पीने से मिठास का अनुभव होता है। इसका पुष्पकाल मार्च से जून एवं फलकाल नवम्बर से मार्च तक होता है।

Āmala (Amalaki) is a medicinal tree. It grows in the wild and is also cultivated. It is a medium sized tree, approximately 30 to 35 feet high. Its multiple branches form the shape of a canopy. It has small leaves which are 8 to 12 mm long 3 mm wide, light greenish and in two rows. Inside the fruit there is a six sided seed. *Āmala* is one of the best medicinal preparations. Consumption of ā*mala* rejuvenates human body hence it is named as Amarphal. In taste it is pungent and sour. It tastes sweet if one takes water after consuming it. The tree flowers from March to June and bears fruit during November to March

रक्तपित्तप्रमेहघ्नं परं वृष्यं रसायनम् ।
हन्ति वातं तदम्लत्वात्पित्तं माधुर्यशैत्यत: ।
कफं रूक्षकषायत्वात्फलं धात्र्यास्त्रिदोषजित् ॥
यस्य यस्य फलस्येह वीर्यं भवति यादृशम् ।
तस्य तस्यैव वीर्य्येण मज्जामपि च निर्दिशेत् ॥

(भा.प्र.ह.व. 6/39, 40, 41)

आमला रक्त पित्त और प्रमेह को हरने वाला परम वीर्य वर्धक रसायन है। यह मधुर और शीतयुक्त होता है, जिससे वात का नाश होता है। इसका रूखापन व मिठास कफनाशक है। इस प्रकार यह धात्रीफल (आमला) त्रिदोष हारक होता है, आमले के फल का वीर्य (पाक) जिस प्रकार (गुण-धर्म) का होता है, *आमले* के मज्जा (गूदा) का पाक भी उसी प्रकार का होता है।

Ā*mala* cures *rakta-pitta* (bleeding) diseases, prameh (a kind of urinary infection or preliminary symptom of diabetes). It is a best aphrodisiac and rejuvenator, mitigates *vāta* by its sweet and cold nature and *pitta* by its sweetness and dry potency. Thus, fruit of dhatri mitigates all the three (*dosas*).

Property of the essence of ā*mala* depends on its various stages. And the property of essence of pulp also varies according to the pulp.

7. अमलतास, सोनहाली
Amaltās, Sonahālī

संस्कृत – *Aragradh आरग्वध:*
अंग्रेज़ी – Leguminoseae
बोटेनिकल – *Cassia fistula Linn*



अमलतास, सोनहाली -
Amaltās, Sonahali

अमलतास एक औषधीय पेड़ होता है। यह लगभग 15 से 24 मी. तक ऊँचा होता है तथा 2 से 2.5 फीट तक गोलाई में चौड़ा होता है। इसकी शाखाएँ खूब घनी और मोटी होती हैं। इसकी पत्तियाँ हरी तथा अत्यन्त चमकीली, रोयेंदार, जामुन की तरह होती हैं। इसका पुष्पकाल अप्रैल से मई तथा फलकाल अक्टूबर तक होता है। पुष्पकारी लम्बी और नीचे लटकती रहती है। फली 1 से 2 फीट लम्बी, बेलनाकार, 1 इंच व्यास की कच्ची अवस्था में हरी तथा पकने पर लाल व काली हो जाती है। फली में 25 से 100 तक चपटे पीताभ धूसर वर्ण के बीज होते हैं। इसके पत्र, पुष्प, फल, बीज, मूल, काण्डत्वक् तथा फलमज्जा इत्यादि सभी का औषधीय प्रयोग होता है। भारत के सभी क्षेत्रों में होने वाला यह पेड़ बाग-बगीचों में भी लगाया जाता है।

Amaltas is a tree of medicinal value. It is upto 15 to 24 m tall and 2 to 2.5 feet in diameter. Its branches are very dense and thick. Its leaves are green, very lustrous and villous like blackberry. The *amaltas* trees flower during April to May and bear fruits during October. The clump of its flowers are long and hang downwards from the tree. The legumes are shaped like the rolling pins, 1 to 2 feet long and about an inch in diameter, green in the raw form and became brown to black as they ripen and get dry. These legumes contain yellow dust coloured flat seeds (25-100). Its leaves, flowers, fruits, seeds, root, tree bark and fruit pulp are all used for medicinal purpose. This tree found all over India is also grown in gardens.

आरग्वधो दीर्घफलो व्याधिहा चतुरङ्गुल: ।
अरेवतस्तथा कर्णी कर्णिकारोऽथ रेचन: ॥
आरग्वध रसे तिक्तो गुरूष्ण: कृमिशूलनुत् ।
कफोदरप्रमेहघ्न: कृच्छ्रगुल्मत्रिदोषजित् ॥
(ध.नि., गुडू, प्र,व. 219, 220)

आरग्वध (अमलतास) के दीर्घफल, व्याधिहा, चतुरंगुल, आरेवत, कर्णी, कर्णिकार और रेचन पर्याय हैं ।

अमलतास के रस में तिक्त, गुण में गुरु तथा वीर्य में उष्ण होता है । यह कृमिशूल, कफ, उदररोग, प्रमेह का नाशक, मूत्रकृच्छ्र, गुल्म और त्रिदोष को जीत लेता है ।

The other names of aragradh are dirghafal, viyadhita, chaturangula, arevata, karni, karnikara and rechana.

It tastes bitter, full of beneficial properties and hot in potency. It also mitigates, prameh, dysuria, tumour, kaphodai (a types of abdomina disease) and tridosa.

8. अमियाहल्दी
Amiyāhaldī

संस्कृत – *Āmragandhā haridrā-karpurā haridrā*
(आम्रगन्धि-कूर्पर हरिद्रा)
अंग्रेज़ी – Mango-ginger
बोटेनिकल – *Curcuma amada Roxb*


अमियाहल्दी - Amiyāhaldī

अमियाहल्दी अदरक की तरह प्रकन्द होती है। इसका पौधा 2 से 3 फुट ऊँचा, सुगन्धित और शाकीय होता है। इसके पत्ते कुछ-कुछ केले के पत्ते की तरह लम्बे और आगे की तरफ नुकीले से होते हैं। इसकी गाँठें आम की तरह गन्धयुक्त होती हैं इसलिए इसे *अमियाहल्दी* कहते हैं। सुगन्धित होने के कारण इसे चटनी आदि में प्रयोग किया जाता है। मिठाइयों में आम की गन्ध लाने के लिए इसके फाण्ट का उपयोग किया जाता है। मुख, उदर, त्वचा इत्यादि रोगों में इसका प्रयोग लाभदायक है। यह भारत के सभी क्षेत्रों में पाया जाता है।

Amiyāhaldī is like the root of ginger. Its plant is 2 to 3 feet high. It is a fragrant plant. Its leaves are pointed in the front and are long like the banana leaves. Its bulbs are fragrant like mangoes hence it is called *amiyāhaldī*. Owing to fragrance it is used in sweets to give the flavour of mango. It is used to cure skin, mouth, stomach diseases. It is found all over the India.

आम्रगन्धिर्हरिद्रा या सा शीता वातला मता।
पित्तहृन्मधुरा तिक्ता सर्वकण्डूविनाशिनी ॥

(भा.प्र.,ह.व. 6 (॥), 199)

अमियाहल्दी को आम्रगन्धि और हरिद्रा भी कहते हैं। यह शीतल, वातनाशक, पित्त रोग हरने वाली, तिक्त और सभी चर्म रोगों में लाभप्रद होती है।

Amiyāhaldī is also known as *Amragandhi* and *Haridra*. It is cold in nature, reduces *vata*, mitigates *pita*, sweet-bitter in taste and cures all kinds of itching.

9. अनन्तमूल, सलसा
Anantmula, Salasā, Krsnasveta

संस्कृत – *शारिवा (कृष्णश्वेता)*

अंग्रेज़ी – Sarsaparilla

बोटेनिकल – *Cryptolepis buchanani roem and schult*



अनन्तमूल, सलसा - Anantmula, Salasā

अनन्तमूल अथवा *शारिवा* वृक्षाश्रित आरोही लता है। इसकी लताएँ 10 से 15 फीट तक लम्बी होती हैं, शाखाएँ गोल एवं रोएँदार होती हैं। इसकी पत्तियाँ हरी और चिकनी होती हैं। इसकी पत्ती, फल अथवा शाखा कुछ भी तोड़ने पर एक दूधनुमा अर्क निकलता है जो औषधीय गुणों के लिए जाना जाता है। यह भारत के सभी क्षेत्रों में पाया जाता है।

Anantmula (*shariva*) is a tree climbing creeper. It is 10 to 15 feet long, the branches being round and villous. Its leave are green and smooth. If any of its fruit, leave or branch is plucked, milk juice comes out. This juice has medicinal properties. *Anantmula* grows all over India.

धवला शारिवा गोपा गोपकन्या कृशोदरी।
स्फोटा श्यामा गोपवल्ली लताऽऽस्फोटा च चन्दना॥
सारिवायुगलं स्वादु स्निग्धं शुक्रकरं गुरुम्।
अग्निमान्द्यारुचिश्वासकासामविषनाशनम्।
दोषत्रयास्रप्रदरज्वरातीसारनाशनम्॥

(भा.प्र.गुडू.व.237, 238)

शारिवा या *सरिवा* दो प्रकार की होती है– धवला एवं श्यामा। धवला के अपर नाम गोपा, गोपकन्या, कृशोदरी एवं स्फोटा है। श्यामा के अपर नाम गोपवल्ली लता, अस्फोटा एवं चन्दना है। दोनों प्रकार की *शारिवा* (सलसा) स्वादिष्ट, स्निग्ध (चिकनाई युक्त) शुक्र बढ़ाने वाली, गुरु (पाचन में कठोर), अग्निमान्द्य, अरुचि, श्वास-रोग, कास (खाँसी),

आम (आम-वातक) रोग, विष का नाश करती है। यह दोष – यम (वात, पित्त एवं कफ), रक्त-प्रदर,ज्वर अतिसार-रोग का भी नाश करती है।

There are two types of *śarivā, dhawala* and *syāmā. Dhawala's* other names are *gopā, gopakanyā, kriśosadarī, syāmā* also called as *lattā, asphotā.*

Both types of *Sarivā* are sweet, unctuous, produce semen, hard to digest, cure dyspepsia, loss of taste, dyspnoea, cough, amavisa (endotoxim), mitigates all three *dosas*, *rakta-pitta* or bleeding diseases, menorrhagia, fever and diarrhoea.

10. अरनी
Aranī

संस्कृत – *Agnimantha*
(अग्निमन्थ, अरनी)
अंग्रेज़ी – Headache
बोटेनिकल – (ksudragmimantha)
1. Premna integrefolia
2. Clerodendrum phlonidis


अरनी - Aranī

अरनी एक औषधीय वृक्ष होता है। जिसकी ऊँचाई 25 से 30 फीट होती है। इसके पत्ते 2 से 6.5 इंच लम्बे अण्डाकार और दोनों छोर पतले होते हैं। इसका फूल हल्का हरा और सफेद रंग का होता है। इसका फल 2 से 5 इंच चौड़ा गोलाकार काले या बैंगनी रंग का होता है। इसके पत्ते, जड़ एवं छाल में औषधीय गुण होता है। मुख्यत: यह भारत के पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाता है।

Arnī (agnimantha) is a medicinal tree which is 25 to 30 feet high. Its leaves are 2 to 6.5 inches long eggshaped and are thin on both ends. Its flower is light green and white in colour. Its fruit is 2 to 5 inches wide round shaped and black or purple in colour. Its leaves, root and bark have medicinal value. Mostly it is found in hilly areas.

अग्निमन्थो जय : सस्याच्छ्रीपर्णी गणिकारिका।
जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका॥
अग्निमन्थ: श्वयथुनुद्वीर्योष्ण: कफवातहृत्।
पाण्डुनुत्कटुकस्तिक्तस्तुवरो मधुरोऽग्निद:॥
(भा.प्र.गुडू.व. 23, 24)

अग्निमन्थ अर्थात् *अरनी* के पर्यायवाची नाम – जय, श्रीपर्णी, गणिकारिका, जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी एवं वैजयन्तिका हैं। यह सूजन (श्यवथु) का नाश करता है। यह वीर्य को गरम करने वाला है अर्थात् इसकी तासीर गर्म है। यह कफ एवं वात का नाश करता है। यह पाण्डु (पीलिया) रोग को समाप्त करता है।

Agnimantha has other names like: jaya, srīparnī, gaṇkārikā, jayā, jayanti, tarkārī, nādeyī and vaijayantikā.

Agnimantha cures swelling (dropsy), hot in potency, mitigates kapha, vata, cures jaundice.

11. अर्जुन
Arjun

संस्कृत – *Kakubha (ककुभः, अर्जुन)*
अंग्रेज़ी – Arjun Tree
बोटेनिकल – *Terminalia arjuna*



अर्जुन - Arjun

अर्जुन एक औषधीय गुणों वाला वृक्ष होता है। इसकी ऊँचाई 25 से 30 फीट होती है तथा 2 फीट तक गोलाकार चौड़ा होता है। इसकी पत्तियाँ आयताकार हरे रंग की होती हैं। इसके फूल छोटे-छोटे गुच्छों में होते हैं, जिनका रंग हल्का पीला होता है। इसकी जड़, छाल, पत्ती तथा फल का औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह भारत के सभी क्षेत्रों में पाया जाता है।

Arjun (*kakubha*) is a tree having medicinal properties. Its height is 25 to 30 feet. It is cylindrical in shape having a diameter up to 2 feet. Its leaves are green and rectangular in shape. Its flowers are in small clusters and have light yellow colour. Its root, bark, leaf and fruit are used in medicine. It is grown in all over India.

ककुभोऽर्जुननामाख्यो नदीसर्जश्च कीर्त्तितः।
इन्द्रद्रुर्वीरवृक्षश्च वीरश्च धवलः स्मृतः॥
ककुभः शीतलो हृद्यः क्षतक्षयविषास्रजित्।
मेदोमेहव्रणान् हन्ति तुवरः कफपित्तहृत्॥

(भा.प्र.वटा.व. 26, 27)

ककुभ के अन्य नाम *अर्जुन*, नदीसर्ज, इन्द्र, दुर्वीरवृक्ष, वीर एवं धवल हैं। ककुभ शीतल (ठंडक प्रदान करने वाला) हृदय रोग, क्षय रोग, रक्त शोधन, मधुमेह, कफ, पित्त में लाभप्रद होता है।

Kakubha or Arjun has other synonyms such as: nadīsarja, indra, durvīravrīkṣa, vīra and dhavala.

Kakubha is cold in potency, good for the heart, cures diseases of lungs, consumption, removes poison of blood, diabetes and mitigates *kapha* and *pitta*.

12. अरुई
Arui

संस्कृत – ***Alukam*** (आलुकम्)
अंग्रेज़ी – Green Taro
बोटेनिकल – *Colocasia Esculenta*



अरुई - Arui

अरुई एक कन्द होता है। इसका पौधा 3 से 4 फीट ऊँचा मंझोले आकार का होता है जिसे मुख्यत: सब्जी के लिए उगाया जाता है। इसके पत्ते हरे रंग के चिकने कमलपत्र के समान गूद्देदार होते हैं। इसके कन्द (अरुई) पत्ती, डंठल का औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह भारत के सभी क्षेत्रों में तथा घरों में भी उगाया जाता है।

Arui (*Alukam*) is a tuber which is 3 to 4 feet medium sized plant. It is primarily cultivated as a vegetable. Its leaves are green pulpy and smooth like that of lotus leaf. All parts: bulb root, leaf and stem are used as medicine. It is grown all over India and in homes.

आरुकमप्यालुकं तत्कथितं वीरसेनकम् ॥
काष्ठालुकशङ्खालुकहस्त्यालुकानि कथ्यन्ते।
पिण्डालुकमध्वालुकरक्तालुकानि चोक्तानि ॥
आलुकं शीतलं सर्वं विष्टम्भि मधुरं गुरु ॥
कफानिलकरं बल्यं वृष्यस्तम्भविवर्द्धनम् ॥

(भा.प्र.शा.व. 94, 95, 96, 97)

अरुई के अन्य पर्याय– आरुक, आलुक, वीरसेन हैं। यह काष्ठालुक, शङ्खालुक, हस्त्यालुक, पिण्डालुक, मध्वालुक एवं रक्तालुक भेद से कई प्रकार का होता है। आलुक (अरुई) की तासीर ठंडी होती है। यह स्वाद में मधुर एवं कठिनता से पचने वाला होता है।

यह कब्ज (कोष्ठबद्धता) को बढ़ाता है। यह वात एवं कफ बढ़ाता है। यह बल प्रदान करता है एवं वीर्य के स्तम्भन व वर्द्धन (बढ़ने) में सहायक होता है।

Kāṣthāluka, sańkhāluka, hastyāluka, piṇḍāluka, madhvāluka and *raktāluka* are the kinds of *a*ŕuka or āluka. *Ā*ruka or *Ā*luka also named as vīrsenaka. *Āluka* is cold in potency, cause constipation, sweet in taste, hard for digestion. It increases the strength and semen.



अरुई - Arui

13. अश्वगन्ध, असवगन्ध
Asgandh, Aśvagadha

संस्कृत – Aśvagandhā (अश्वगन्धा)
अंग्रेज़ी – Winter cherry
बोटेनिकल – *Withania somnifera*



अश्वगन्ध, असवगन्ध -
Asgandh, Aśvagadha

अश्वगंध एक औषधीय जड़ होती है। इसका पौधा 2 से 2.5 फुट ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ हरे रंग की 5 से 10 से.मी. लम्बी 2.5 से 7 चौड़ी अण्डाकृति वाली होती हैं। इसके फूल हल्के हरे अथवा पीले रंग के होते हैं। इसके फल 6 से 8 से.मी. मोटे, मटर या मकोय के समान हरे रंग के गोलाकार होते हैं, इसके पके हुए फWल लाल रंग के होते हैं। इसकी जड़, पत्ती, फल और बीज में औषधीय गुण होते हैं। यह भारत के सभी क्षेत्रों में पाया जाता है।

Asgandh (Asvagandha) is a medicinal root. Its plant is 2 to 2.5 feet tall. It has 5 to 10 cm long and 2.5 to 7 cm wide, egg shaped green leaves. Its flowers are greenish or yellow. Its fruits are spherical like peas, 6 to 8 cm in size. These are green when raw and became red when ripe. Its root, leaves, fruit and seeds all have medicinal properties. It is found all over India.

गन्धान्ता वाजिनामादिरश्वगन्धा हयाह्वया।
वराहकर्णी वरदा बलदा कुष्ठगन्धिनी॥
अश्वगन्धाऽनिलश्लेष्मश्वित्रशोथक्षयापहा।
बल्या रसायनी तिक्ता कषायोष्णाऽतिशुक्रला॥

(भा.प्र.गुडू.व., 189, 190)

अश्वगंध (असवगन्ध) के अपर नाम हया, वराहकर्णी हैं। यह अत्यन्त गुणकारी है। यह बल को बढ़ाने वाला *अश्वगन्ध* वात, श्लेष्म (कफ), श्वित्र (चर्मरोग), शोथ (आन्त्रशोथ), क्षय (टी.बी.रोग) का नाश करता है। यह बलदा रसायन है। *अश्वगन्ध* वात, कफ, श्वेत दाग, क्षय रोग को हरने वाली, बल प्रदान करने वाली, स्वाद में तिक्त, कषाय (कसैला), उष्ण (गरम तासीर वाला), शुक्र बढ़ानेवाली रासायनिक औषधि होती है।

The other names of *aśvagandhā* are *haya, varahkarni.* It is highly beneficial *aśvagandhā* mitigates anila (*vāta*), slesma, (*kapha*), leucoderma, consumption and bestows strength. It is rejuvenator, bitter and astringent in taste, hot in potency and a great producer of semen.

14. अशोक
Aśoka

संस्कृत – Asoka (अशोक:)
अंग्रेज़ी – False Ashok
बोटेनिकल – *Saraca indica*



अशोका - Aśoka

यह न केवल जंगल, बाग-बगीचों (अपितु छायादार होने के कारण) तथा शहरों में घरों के बाहर भी देखा जाता है। यह 20 से 25 फुट लम्बा और सुडौल पेड़ होता है। इसके पत्ते 3 से 9 इंच लम्बे आम के पत्तों की तरह और नुकीले होते हैं। इसके पत्ते सूखने पर लाल रंग के हो जाते है। फरवरी-मार्च के महीने में नारंगी रंग के फूल भी होते हैं। कई बीमारियों के उपचार के लिए इसकी छाल का विशेष प्रयोग किया जाता है।

Aśoka tree is not only available in forests, garden but also found outside the houses in cities for shade. It is 20 to 25 feet tall and well formed tree. Its leaves are 3 to 9 inches long and are pointed like mango leaves. The dried leaves become red. Flowers are orange in the month of February and March. The bark of this tree is used significantly for curing various diseases.

अशोको हेमपुष्पश्च वञ्जुलस्ताम्रपल्लव:।
कङ्केलि: पिण्डपुष्पश्च गन्धपुष्पो नटस्तथा॥
अशोक: शीतलस्तिक्तो ग्राही वर्ण्य: कषायक:।
दोषापचीतृषादाहकृमिशोषविषास्रजित्॥

भा.प्र.पु.व. 47, 48)

अशोक के अन्य नाम हेमपुष्पा, वञ्जुल, ताम्रपल्लव, कङ्केलि, पिण्डपुष्प,गन्धपुष्प तथा नट हैं । अशोक शीतल, स्वाद में तिक्त कषायक, (मल को बाँधने वाला) होता है। यह सौन्दर्य (रूप) को निखारता है। ग्राही (कसैला), यह दोष (वात-कफादि) को दूर करता है। यह अपची (कण्ठमाला) रोग(प्यास, जलन, कृमि (कीड़े), सूखे का रोग विष एवं दूषितरक्त सम्बन्धी विकारों का नाश करता है।

The other names of Aśhoka is Hemapuşpa, Vanjula, Tāmrapllava, Kańkeli, Piņdapuşpa, Ġandhapuşpa and Nut.

Aśoka is cold in potency, bitter, causes constipation, imports colour/complexion, astringent, mitigates all three *doşas*, cures goitre, thirst, burning sensation, worms, consumption, poison and diseases of *rakta*.

15. बादाम
Badama

संस्कृत – Vātadā (वाताद:)
अंग्रेज़ी – Almond nut
बोटेनिकल – *Prunus amygdalus Batsch*



बादाम - Badama

बादाम उत्तम औषधीय वनस्पति होता है। इसका वृक्ष 8 मी. ऊँचा होता है, इसके पत्ते लम्बे भालाकार होते हैं। इसका फल 1 से 2 इंच लम्बा और कठोर होता है। इसकी जड़ फल के छिलके तथा फल (के बीज अर्थात्) गिरी और तेल का प्रयोग औषधि के रूप में किया जाता है। बादाम गिरी अत्यन्त पौष्टिक, बलवर्धक तथा रुचिकारक होती है। इसकी गिरी, फलत्वक्, मूल तथा तैल सभी का औषधीय महत्त्व है। यह मूलत: एशिया, सीरिया, तुर्की एवं ईरान में कृषित किया जाता है।

Badam (vatada, almond) is a mdicinal plant. Its tree is 8 m high and leaves are long, spear shaped. Its fruit is 1 to 2 inch long and hard. All its parts (roots, peel and fruit, oil) are used as medicine. Badam (Almond) kernel is nutritious, vital and tasty. All its parts (kernel, peel, root and oil) have medicine value. It is mainly cultivated in Asia, Syria, Turkey and Iran.

वाताद उष्ण: सुस्निग्धो वातघ्न: शुक्रकृद् गुरु: ॥
वातादमज्ज मधुरो वृष्य: पित्तानिलापह: ।
स्निग्धोष्ण: कफकृन्नेष्टो रक्तपित्तविकारिणाम् ॥

(भा.प्र.आम्रा.व.123, 124)

बादाम गरम-तासीर वाला, अच्छे स्वाद वाला स्निग्ध होता है। यह वात, पित्त, उदर रोग एवं मज्जादोष निवारक है। यह पौष्टिक,वीर्यवर्धक एवं सुस्वादु होता है। यह स्निग्ध, उष्ण (गरम तासीर वाला), कफ बढ़ाने वाला तथा *रक्त-पित्त* रोगों में लाभप्रद नहीं होता है।

Vātādā is hot in potency, slightly unctuous, mitigates *vāta*, increases semen. Its marrow (seed) is sweet, aphrodisiac, mitigates *pitta* and *vāta*, unctuous, hot in potency, increases *kapha* and not good for those suffering from diseases of *rakta* and *pitta*.

16. बैंगन
Baigan, Bagan, Bhanta

संस्कृत – Vṛntākam (वृन्ताकम्)
अंग्रेज़ी – Brinjal
बोटेनिकल – *Solanum melongena*



बैंगन- Baigan, Bagan, Bhanta

बैंगन एक सब्जी की प्रजाति होती है। जिसमें औषधीय गुण भी होते हैं। इसका पौधा 2 से 3 फुट ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ 2 से 5 इंच चौड़ी हरे रंग की होती हैं। इसका फल गोल तथा लम्बा दोनों प्रकार का होता है। इसके फल का रंग बैंगनी तथा हरा भी होता है। यह भारत के समस्त क्षेत्रों में उगाया जाता है। इसके फल का प्रयोग सब्ज़ी एवं औषधि के रूप में किया जाता है।

Baigan is a vegetable plant having medicinal value. It is 2 to 3 feet high. Its leaves are 2 to 5 inches wide. Its fruit is round and elongate. Its fruit is purple and also green in colour. Its fruit is used as vegetable and in medicine. It is cultivated in all the parts of India.

वृन्ताकं स्वादु तीक्ष्णोष्णं कटुपाकं पित्तलम्॥
ज्वरवातबलासघ्नं दीपनं शुक्रलं लघु।
तद्वलं कफपित्तघ्नं वृद्धं पित्तकरं गुरु॥
वृन्ताकं पित्तलं किञ्चिदङ्गारपरिपाचितम्।
कफमेदोऽनिलामघ्नमत्यन्तं लघु दीपनम्॥
तदेव हि गुरु स्निधं सतैलं लवणान्वितम्।
अपरं श्वेतवृन्ताकं कुक्कटाण्डसमं भवेत्॥
तदर्शःसुविशेषेण हितं हीनं च पूर्वत:॥

(भा.प्र.शा.व. 79, 80, 81, 82)

वृन्ताक या बैंगन स्वाद में मधुर, तीक्ष्ण एवं गरम तासीर वाला होता है। पाचन के पश्चात् कड़वा तथा पित्त को बढ़ाने वाला होता है। यह ज्वर (बुख़ार) वात तथा शक्ति को क्षीण करता है। यह भूख बढ़ाता है, पाचन में हल्का एवं शुक्र को बढ़ाने वाला होता है।

बैंगन का बाल-स्वरूप (अर्थात् प्रारम्भिक अवस्था वाला बैंगन) कफ और पित्त का नाश करता है तथा वृद्ध-बैंगन (अर्थात् पका हुआ बैंगन) पित्त को बढ़ाने वाला एवं पाचन में कठिन होता है।

यदि बैंगन को भून लिया जाए तो वह अत्यल्प मात्रा में पित्त को बढ़ाता है। यह कफ, मेद (चर्बी) एवं वात का नाश करने वाला, सरलता से पचने वाला एवं दीपन अर्थात भूख को बढ़ाने वाला होता है।

वही बैंगन यदि नमक लगाकर तेल में पकाया जाये तो वह स्निग्ध अर्थात् वात को बढ़ाने वाला एवं गुरु अर्थात् कठिनता से पचने वाला होता है। श्वेत बैंगन मुर्गी के अण्डे के समान होता है जो विशेष रूप से बवासीर-रोग में लाभप्रद होता है किन्तु यह पूर्वोक्त प्रकारों से कम हितकारी होता है।

Vṛntāka is sweet, penetrating, hot in potency, pungent after digestion, increases pitta cures fever, vāta and kapha diseases, increases digestive fire, semen and is light for digestion.

Its young fruit mitigates kapha and pitta, while the well grown one increases pitta, and is hard for digestion.

If cooked over fire, it increases pitta slightly, mitigates kapha, medas, vata, flatulence and is very light for digestion. It increases appetite.

Cooked with oil and added with salt it becomes hard for digestion unctuous. The white Vrintaka or Brinjal looks like an egg of hen. It is beneficial in piles but it is not more virtuous than other varieties described earlier.

17. खीरा
Balam Khira, Khira

संस्कृत – Trapusa (त्रपुसम्)
अंग्रेज़ी – Cucumber
बोटेनिकल – *Cucumis sativus*



खीरा - Balam Khira

खीरे की बेल (लता) होती है। खीरे का प्रयोग सलाद के रूप में किया जाता है। इसकी पत्तियाँ 2 इंच तक चौड़ी होती हैं। इसकी डंडी मुलायम एवं हरे रंग की होती है। इस पर पीले रंग के फूल आते हैं। इसका फल 4 से 6 इचं तक लम्बा होता है। यह अनेक औषधीय गुणों वाला फल है। यह भारत के सभी क्षेत्रों में पाया जाता है।

Balam (*Trapusa*) is a creeper which is consumed in the form of salad. Its leaves are 2 inch wide. Its stem is green and tender. Its flowers are yellow. Its fruits is 4 to 6 inches long. It is a plant of great medicinal value. It is found all over India.

स्वादु पित्तापहं शीतं रक्तपित्तहरं परम्।
तत्पक्वमम्लमुष्णं स्यात्पित्तलं कफवातनुत्॥
तद्बीजं मूत्रलं शीतं रूक्षं पित्तास्रकृच्छ्रजित्॥

(भा.प्र.आम्रा.व. 48)

कच्चा खीरा स्वादिष्ट, शीत, पित्त, रक्तदोष को हरने वाला होता है। परन्तु पका हुआ खीरा अम्लीय, उष्ण, पित्तवर्द्धक, कफ, वात निवारक तथा इसके बीज मूत्रल (मूत्रवर्द्धक), ठण्डा, रूक्ष तथा रक्तपित्त के कृच्छ्र का नाशक है एवं रक्तदोष में लाभकारी होता है।

Trapusa which is blue (green) and fresh is easy for digestion, cure fatigue and burning sensation, sweet, mitigates *pitta*, cold in potency, cures bleeding diseases especially; the same after ripening is sour, hot in potency, aggravates *pitta*, mitigates *kapha* and *vata*. Its seed is diuretic, cold in potency, causes dryness, cures bleeding diseases and dysuria.

18. बथुआ, चिल्लीशाक्
Bathua, Cillisak

संस्कृत – *Vāstuka (वास्तूक द्वयम्)*
अंग्रेज़ी – Lambs quarters
बोटेनिकल – *Chenopodium album*



बथुआ, चिल्लीशाक् - Bathua, Cillisak

बथुआ एक शाकीय पौधा होता है। इसका प्रयोग औषधि एवं सब्ज़ी दोनों के रूप में होता है। यह 1 से 1.5 फुट लम्बा हरे रंग का होता है। इनमें तुलसी दल की तरह छोटी-छोटी मंजरियाँ होती हैं। इसके पत्ते शंकु के आकार वाले तथा 1 इंच लम्बे होते हैं। यह भारत के अधिकांश क्षेत्रों में प्राप्त होता है।

Bathua is a vegetable plant. It is used as medicine as well as vegetable. It is 1 to 1.5 feet long and green in colour. It has small panicles of seeds as those of the *tulsi* plant. It has 1 inch long and mushroom shaped umbicle leaves. It grows all most parts of India.

प्रायशो यवमध्ये स्याद्यवशाकमत: स्मृतम्।
वास्तूकद्वितयं स्वादु क्षारं पाके कटूदितम्॥
दीपनं पाचनं रुच्यं लघु शुक्रबलप्रदम्।
सरं प्लीहास्रपित्तार्श:कृमिदोषत्रयापहम्॥

(भा.प्र.शा.व. 6, 7)

वास्तूक अर्थात् बथुआ स्वाद में मीठा क्षारीय होता है। पाचनोपरान्त कड़वा लगता है। यह भूख एवं स्वाद को बढ़ाता है एवं पाचक है। यह वीर्य बढ़ाने वाला एवं बलवर्द्धक है। यह पेट साफ करता है एवं प्लीहा-रोग, रक्त-पित्त रोग, बवासीर, कृमि तथा तीनों दोषों का शमन (शान्त या समाप्त) करता है।

Vāstuka are sweet and alkaline in taste and pungent after digestion, kindle digestive fire, digestive, help taste, easy for digestion, bestow semen and strength, laxative, cures diseases of spleen, bleeding disease, piles, worms and mitigates all three *dosas*.



बथुआ, चिल्लीशाक् -
Bathua, Cillisak

19. बेल, श्रीफल
Bel, Sriphal

संस्कृत – Bilva (बिल्व:)
अंग्रेज़ी – Bael fruit
बोटेनिकल – *Aegle mormelos*



बेल, श्रीफल - Bel, Sriphal

बेल भारत में औषधीय गुणों एवं धार्मिक मान्यता की दृष्टि से गौरवशाली वृक्ष माना जाता है। यह 25 से 30 फुट ऊँचा होता है। इसकी शाखाओं में नुकीले कांटे भी होते हैं। इसके पत्ते हरे और एक ही डंठल में तीन अथवा कभी-कभी इससे ज्यादा भी पत्तियाँ निकलती हैं। इसके फल गोल और हरे होते हैं।

In India bel is considered to be a tree of medicinal and religious significance. This tree is 25 to 30 feet high It has thorny branches. Its stem has three or more leaves and green in colour. Its fruit is round and green.

बालं बिल्वफलं ग्राहि दीपनं पाचनं कटु।
कषायोष्णं लघुस्निग्धं तिक्तं वातकफापहम्॥
पक्वं गुरु त्रिदोषं स्याद् दुर्जरं पूतिमारुत॥
विदाहि विष्टम्भरं मधुरं वह्निमान्द्यकृत्॥
फलेषु परिपक्वं यद् गुणवत्तदुदाहृतम्॥
बिल्वादन्यत्र विज्ञेयमामं तद्धि गुणाधिकम्।
द्राक्षाबिल्वशिवाऽऽदीनां फलं शुष्कं गुणाधिकम्॥

(भा.प्र.गुडू.व., 57, 58, 59, 60)

छोटा बेल का फल कब्ज, पाचन में लाभप्रद, कटु, कषाय, उष्ण, हल्का स्निग्ध, तिक्त, कफ और वात को हरने वाला होता है।

पका हुआ बेल पचने में भारी, वात, पित्त, कफवर्द्धक, कठिनाई से पचने वाला, दुर्गन्धित अपानवायु का त्याग, विदाहकारक, कब्ज करने वाला, मधुर रस वाला और मन्दाग्नि करने वाला होता है।

सभी फल पकने पर अधिक गुणों वाले होते हैं किन्तु द्राक्षा, बेल, हरड़ फल सूखने पर अधिक गुणों वाले होते हैं।

Tender biliva mitigates constipation, fruit increases digestive fire, is digestive, pungent, astringent, hot in potency, unctuos, bitter and mitigates *vataand* kapha.

Ripe fruit aggravates all three *dosas*, hard for digestion, increases flatus, causes burning sensation during digestion and constipation, is sweet, produces weakness of digestive fire.

All ripe fruit are beneficial but dries *drāksa*, *bel* and *harad* are beneficial for health.

20. बेला (मोगरा, मोतिया)
Belā

संस्कृत – Varshiki (वार्षिकी)
अंग्रेज़ी – Jasmin
बोटेनिकल – *Jasminum sambac*



बेला - Belā

बेला एक औषधीय गुणों से युक्त वनस्पति है। इसमें सुन्दर एवं सुगन्धित फूल (वर्ष भर) खिलते हैं। इस पौधे के सभी भाग (जड़, छाल, फूल, पत्ती, गोंद सभी) औषधि के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। यह भारत के सभी क्षेत्रों में पाया जाता हैं।

Belā is a plant of great medicinal value. Its flowers are white and fragrant which blossom throughout the year. Its plant is approximately 6 feet high. All the parts of the plant (root, bark, flower, leaf etc.) are used as medicines.

श्रीपदी षट्पदानन्दा वार्षिकी मुक्तबन्धना।
वार्षिकी शीतला लघ्वी तिक्ता दोषत्रयापहा
कर्णाक्षिमुखरोगघ्नी तत्तैलं तद्गुणं स्मृतम्॥

(भा.प्र.,धा.व. 190, 191)

श्रीपदी, षट्पदानन्दा, वार्षिकी, मुक्तबन्धना ये सभी बेला के ही अन्य संस्कृत नाम हैं। यह *बेला* वीर्य में कर्ण, नेत्र, मुख के रोगों को दूर करने वाली है और इसका तेल भी अत्यन्त गुणकारी माना गया है।

Sripadi, satpadananda, varsika, muktabandhana are its names. *Belā* is cold in potency, easy for digestion, bitter,, mitigates all three *dosas*, cures diseases of ear, eyes and mouth. Its oil also possesses same properties.

21. बेरा
Berā

संस्कृत – *Kairavinīphalam*
(कैरविणीफलम्)
अंग्रेज़ी – Jujube Fruit
बोटेनिकल – *Nymphaea alba,*
Seeds of Kumuda



बेर - *Berā*

बेरा एक फल होता है। यह कुमुदिनी (कमलिनी) का फल होता है जिसके बीज खाए जाते हैं। यह रुके हुए पानी में होता है। यह गोलाकार होता है। आरम्भ में बेरा के बीज सफेद होते हैं। पकने पर इनका रंग काला हो जाता है।

Berā is a fruit. It is fruit of lotus. The seeds of this fruit are consumed. It grows in still water. It is spherical in shape. Its seeds are white in the beginning but turn black when ripe.

उक्तं कुमुदबीजन्तु बुधैः कैरविणीफलम्।
भवेत्कुमुद्वतीबीजं स्वादु रूक्षं हिमं गुरु॥

(भा.प्र.आम्रा.व. 94)

विद्वानों ने बेरा के अन्य नाम कैरविणीफल एवं कुमुदबीज बताये हैं। यह स्वादिष्ट, सर्दी में लाभप्रद, पाचक एवं रूक्ष फल होता है।

Scholars have named it as *kairviniphal and kumundbij* also. It is sweet, causes dryness, cold in potency and digestive.

22. भाँग, बूटी, गाँजा
Bhānga, Būti, Gānjā

संस्कृत – *Bhānga (भाँग)*
अंग्रेज़ी – Indian hemp
बोटेनिकल – *Cannabis sativa*



भाँग्, बूटी, गाँजा -
Bhāng, Būti, Gānjā

भाँग स्वयंजात मादक पौधा होता है। यह पौधा गंधयुक्त 3 से 6 फुट लम्बा होता है। इसके एक ही डंठल में ऊपर और नीचे दोनों तरफ हरे रंग की पत्तियाँ होती हैं। इनकी शाखाओं तथा पत्तियों पर जमे राल को चरस कहते हैं। इसके पत्तों, बीज एवं राल का प्रयोग औषधि के रूप में किया जाता है।

Bhānga is a self growing intoxicating plant. It is an odorous plant and, which grows three to six feet long. Its stem has green coloured leaves on both its sides. The secreted substance stuck on its leaves is called charas. Its leaves, seeds and raal are used as medicine.

भङ्गा गञ्जा मातुलानी मादिनी विजया जया ।।
भङ्गा कफहरी तिक्ता ग्राहिणी पाचनी लघु: ।
तीक्ष्णोष्णा पित्तला मोहमदवाग्वह्निवर्द्धिनी ।।

भा.प्र.ह.व.233, 234)

भाँग के अपर नाम *गाँजी, मातुलानी, मादिनी, विजया* एवं *जया* हैं। भाँग, कफनाशक, तिक्त, पाचक, तीक्ष्ण, उष्ण, मोह, मद, एवं प्रलापकारक होता है।

The other names of *bhānga* are *ganji, matulani, vijaya* and *jaya*. *Bhāng*a mitigates kapha, bitter, causes constipation, digestive, easily digestable, penetrating, hot in potency, increases pitta, produces delusions/confusion, intoxication, excess of talk and excess of digestive fire.

23. भृङ्गराज, भङ्गरइया
Bhrngarāja, Bhangaraiyā

संस्कृत – *Bhrngarājah (भृङ्गराज:)*
अंग्रेज़ी – False Daisy
बोटेनिकल – *Eclipta alba Hassk*



भृङ्गराज, भङ्गरइया -
Bhrngarāja, Bhangaraiyā

भृङ्गराज ज़मीन पर फैलने वाली वनस्पति है। भारत में तटीय क्षेत्रों, जलाशयों के किनारों पर यह स्वत: उगता है। यह 1.5 से 2 फुट लम्बा और इस पौधे की पत्ती लम्बी और चमकदार हरे रंग की होती है। यह पौधा तीन प्रकार का होता और तीनों में क्रमश: सफेद, पीले, नीले रंग के फूल होते हैं।

Bhrngaraja is a vegetable plant which spreads on the ground. It flowers and grows on the coastal areas at the near ponds. It is 1.5 to 2 feet long. Its leaves are long and smooth and their colour is lustrous green. There are three kinds of the plant and three different coloured flowers white, yellow and blue grow respectively on these plants.

भृङ्गराजो भृङ्गरजो मार्कवो भृङ्ग एव च।
अङ्गारक: केशराजो भृङ्गार: केशरञ्जन: ॥
भृङ्गर: कटुकस्तीक्ष्णो रूक्षोष्ण: कफवातनुत् ॥
केश्यस्त्वच्य: कृमिश्वासकासशोथामपाण्डुनुत्।
दन्त्यो रसायनो बल्य: कुष्ठनेत्रशिरोऽर्त्तिनुत् ॥

(भा.प्र.,गुडू.व. 239, 240, 241)

भृङ्गराज कटु, तीक्ष्ण, रूक्ष होता है और कफ, वात में लाभप्रद, केश, त्वचा, कृमि, श्वास, कास, शोथ (सूजन), रक्ताल्पता, पाण्डुरोग, दाँत, कुष्ठ, नेत्र, शिरोवेदना में लाभप्रद होता है।

Bhrngarāja is pungent, penetrating, causes dryness, hot in potency, mitigates *kapha* and *vāt*a, good for hairs and skin, cures worms, dyspnoea, cough, dropsy, āma-dosa, anaemia, good for teeth, cures leprosy (and some other diseases of the skin) and headache.

24. भूई-आमला
Bhūīamalā

संस्कृत – *Bhumyāmalakī*
(भूम्यामलकी)
अंग्रेज़ी – Gulf Leaf Flower
बोटेनिकल – *Phyllanthus niruri*



भूई-आमला - Bhūīāmalā

भूई-आमला छोटा पौधा होता है जो 30 से 60 से.मी. तक ऊँचा होता है। इसकी टहनियों और पत्तियों का आकार आँवले की पत्तियों जैसा होता है, परन्तु यह एक लघु पादप है, कदाचित् इसलिए इसको भुई आमला कहते हैं। और इसमें बहुत से पीले फूल होते हैं। भारत में यह हर क्षेत्र में पाए जाते हैं।

Bhūīamalā is a small plant. Its height is 36 to 60 cm. Its branches and leaves look like *amala* leaves. It contains a number of yellow flowers. It is a small plant. So it is called *Bhūīamalā*. It is found everywhere in India.

भूम्यामलिका प्रोक्ता शिवा तामलकीति च।
बहुपत्रा बहुफला बहुवीर्याऽजटाऽपि च॥
भूधात्री वातकृत्तिका कषाया मधुरा हिमा।
पिपासाकासपित्तास्रकफकण्डूक्षतापहा॥

(भा.प्र.गुडू.व. 277, 278)

भूई आँमला को शिवा और तामलकी कहा गया है। यह बहुत पत्तों वाली, बहुत फलों वाली कषाय, मधुर, प्यास बढ़ाने वाला, पित्त, रक्तस्राव, कफ, खुजली, जलन में लाभप्रद होता है।

Bhuiamyamalaki is called shiva and tamalaki also. It has so many leaves, fruits. *Bhuiamyalmalaki* is bitter, astringent, sweet in taste, enhances thirst, mitigates *pitta, kapha,* itching and bleeding.

25. ब्राह्मी, मण्डूकपर्णी, जलनीम
Brāhmī, Maṇḍūkaparnī, Jalanīma

संस्कृत – *Brāhmī/*
Mandūkaparnī /Jalanīma
(ब्राह्मी/मण्डूकपर्णी/जलनीम)
अंग्रेज़ी – Bacopa/Indian pennywort
बोटेनिकल – *Bacopa monniera*
centella asiatica

ब्राह्मी, मण्डूकपर्णी, जलनीम -
Brāhmī, Maṇḍūkaparnī, Jalanīma



ब्राह्मी एक उत्तम औषधीय वनस्पति होती है। यह स्वच्छ पानी की नहर आदि के किनारे तथा गंगा के तटीय क्षेत्रों में बहुतायत से पायी जाती है। इसके पत्ते 1.5 से 3 से.मी. तक चौड़े तथा गोलाकार होते हैं। इसके फूल छोटे-छोटे गुलाबी रंग के होते हैं। यह सालभर हरी भरी रहती है। औषधि के रूप में इस पौधे की जड़, फूल, पत्ती, प्रयोग में आती हैं।

Brāhmī is an excellent medicinal plant. It is found on the banks of clean water canals and abounds on the coastal areas of Ganges. Its circular leaves are 1.5 to 3 cm. It has pink coloured small flowers. It is an evergreen plant. The root, flower, leaves of this plant are used in medicine.

ब्राह्मी हिमासरा तिक्ता लघुर्मेध्या च शीतला।
कषाया मधुरा स्वादुपाकाऽऽयुष्या रसायनी ॥
स्वर्या स्मृतिप्रदा कुष्ठपाण्डुमेहास्रकासजित्।
विषशोथज्वरहरी तद्वन्मण्डूकपर्णिनी ॥

(भा.प्र.गुडू.व. 280, 281)

ब्राह्मी, तिक्ता, बुद्धिवर्धिनी, जुखाम में लाभप्रद, शीतल, कषाय, मधुर, आयु को बढ़ाने वाली एवं रसायनी औषधि है। सुर एवं स्मरणशक्ति को बढ़ाने वाली होती है। कुष्ठ, पाण्डु, मधुमेह, रक्तस्राव में लाभप्रद होती है।

Brāhmī is cold in potency, bitter, easily digestible, improves intelligence, astringent, sweet after digestion, prolongs life, rejuvenator, good for voice, intelligence, cures leprosy, anaemia, diabetes, bleeding disease.

26. चन्दन
Candana Safeda

संस्कृत – *Śveta Candanam*
(श्वेतचन्दनम्)
अंग्रेज़ी – Sandal wood
बोटेनिकल – *Santalum album*



चन्दन - *Candana Safeda*

चन्दन एक मध्यम आकार का औषधीय वृक्ष होता है। इसका पेड़ सदाबहार 30 से 40 फुट ऊँचा होता है। बाहर से छाल का रंग मटमैला और काला अन्दर से लालिमा युक्त होता है। यह पेड़ श्वेत तथा लाल दो प्रकार का होता है। यह जंगली भी होता है और इसको उगाया भी जाता है। इसकी पैदावार तमिलनाडु, मालाबार और कर्नाटक में अधिक होती है। इसके काष्ठ एवं तेल का प्रयोग औषधि के रूप में करते हैं।

Candana (*Sveta Candanam*) is a medium sized tree having medicinal value. It is an evergreen tree which is 30 to 40 feet high. The bark from outside is brownish black but reddish purple from inside. It is wild as well as cultivated. Its produced more in Tamil Nadu, Malabar and Karnataka. Its wood and oil have medicinal value.

स्वादे तिक्तं कषे पीतं छेदे रक्तं तनौ सितम्।
ग्रन्थिकोटरसंयुक्तं चन्दनं श्रेष्ठमुच्यते॥
चन्दनं शीतलं रूक्षं तिक्तमाह्लादनं लघु।
श्रमशोषविषश्लेष्मतृष्णापित्तास्रदाहनुत्॥

(भा.प्र.कर्पूर.व. 12, 13)

चन्दन शीतल तथा आनन्दवर्धक होता है। यह स्वाद में तिक्त, रूक्ष और लघु होता है। यह श्रम, शोष, विष, कफ, प्यास, रक्तपित्त के रोगों में लाभदायक होता है। इसके अन्दर की लकड़ी सुगन्धित होती है।

Bitter in taste, yellow on rubbing, red on cutting, white in body, having knots and hollows spaces inside. Such a wood of candana is considered best.

Candana is cold in potency, dry (causes dryness), bitter in taste, soothing in burning sensations. It cures tiredness, poison, kaph, thirst and *rakta pitta*. It's wood has very good smell.

27. चाङ्गेरी
Cāngerī, Tinapatiyā

संस्कृत – *Cāṅgerī (चाङ्गेरी)*
अंग्रेज़ी – Indian sorrel
बोटेनिकल – *Oxalis corniculata*



चाङ्गेरी - Cāngerī, Tinapatiyā

चाङ्गेरी बारहमासी ज़मीन पर फैलने वाला झाड़नुमा पौधा होता है। यह 2 से 4 फुट ऊँचा होता है। जिसको हिन्दी में तीन पत्तियाँ कहते हैं, इसकी पत्ती औषधीय गुणों से युक्त होती है तथा 1 इंच लम्बी हरे रंग की होती है। इसमें एक ही फूल पीले रंग का होता है। इसकी दो प्रजातियाँ होती हैं – छोटी चाङ्गेरी और बड़ी चाङ्गेरी। इसके पत्ते खट्टे स्वाद वाले होते हैं। यह समस्त भारत में पाया जाता है।

Cāngerī is a perennial bushy plant. The plant is 2 to 4 feet tall. It is called teen patti in Hindi which is full of medicinal value. Leaf is 1 inch long and green in colour. It has only one flower which is of yellow colour. It is of two types:*choti cāngerī* and *bari cāngerī*. Its leaves taste sour. It is found all over India.

अश्मन्तकस्तु शफरी कुशली चाम्लपत्रक: ॥
चाङ्गेरी दीपनी रुच्या रूक्षोष्णा कफवातनुत्।
पित्तलाऽम्ला ग्रहण्यर्श:कुष्ठातीसारनाशिनी ॥

(भा.प्र.शा.व. 23, 24

चाङ्गेरी- उदराग्नि का वर्धन, रुचिवर्धक, दीपनी, रूक्ष, उष्ण, कफ, वात रोग में लाभकारी होती है। यह अम्लपित्तवर्धक, बवासीर (अर्श), कुष्ठ, तथा अतिसार नाशक होती है।

Cāṅgerī augments digestive fire, increases taste, causes dryness, is hot in potency, mitigates *kapha* and *vāta*, increases amla *pitta* (hyperacidity) cures duodenal disease, piles, leprosy (and other skin diseases) and diarrhoea.

28. चनसूर
Canasūra, Halon

संस्कृत – *Candrasūra (चन्द्रशूर)*
अंग्रेज़ी – Common cress
बोटेनिकल – *Lepidium sativum*



चनसूर - *Cansūra, Halon*

यह औषधीय गुणों वाला एक शाकीय पौधा होता है। जो 15 से 45 से.मी. का होता है। इसके पत्ते वृत्तहीन (डण्ठल रहित) होते हैं। इसके फूल छोटे-छोटे सफेद रंग के होते हैं। यह भारत के पहाड़ी इलाकों में पाया जाता है। इसके बीज औषधि के रूप में प्रयोग में लाये जाते हैं।

It is a vegetable plant having great medicinal value. It is 15 to 45 cm high. Its leaves have no stem. It has white, small flowers. It is found in hilly areas of India. Its seeds are used as a medicine.

चन्द्रशूरं हितं हिक्कावातश्लेष्मातिसारिणाम्।
असृग्वातगदद्वेषि बलपुष्टिविवर्द्धनम्॥

(भा.प्र.ह.व. 97)

चनसूर हिक्का, वातरोग, कफरोग, वात-रक्त दोष, अतिसार जैसे रोगों में लाभदायक तथा बलवर्द्धक एवं पुष्टिकारक होता है।

Canasūra is good for those suffering from hiccup, diseases of *vāta* and *kapha*, diarrhoea, diseases of blood and bestows strength and improves nourishments.

29. चौपतिया
Caupatiyā, Sunsuniya

संस्कृत – *Śitivāra (शितिवार:)*
अंग्रेज़ी –
बोटेनिकल – *Marsilia minuta*



चौपतिया-
Caupatiyā Sunsuniya

चौपतिया एक शाकीय पौधा होता है। जो हरे रंग का होता है। इसके एक ही डंठल में चार पत्ते होते हैं। इन पत्तों के बीच में इसकी कली होती है। इसके चपटे बीज होते हैं। यह ठंडी प्रकृति का होता है।

Chaupatiā (*sitivara*) is a vegetable plant. It is green in colour. Its one stem has four leaves. The bud resides among there leaves. Its seeds are flat. It is cold in potency.

सुनिषण्णो हिमो ग्राही मेदोदोषत्रयापह: ।
अविदाही लघु स्वादु: रूक्षदीपन: ।
वृष्यो रुच्यो ज्वरश्वासमेहकुष्ठभ्रमप्रणुत् ।।

(भा.प्र.शा.व. 31, 32)

चौपतिया- शीत वीर्य (पचने के बाद ठंडा होता है), कब्ज़, मोटापा, त्रिदोषनाशक (वात, पित्त एवं कफनाशक), बुखार, अविदाही (जलन न पैदा करने वाला), लघु, स्वादिष्ट, रूक्ष, अग्निवर्धक, वीर्यवर्धक और रुचिवर्धक होता है। यह मधुमेह, श्वास, कुष्ठ और भ्रमी रोगों में लाभप्रद होता है।

Sunisanna is cold in potency, constipation, reduces fat, mitigates all the three *dosas*, does not cause heart-burn during digestion, easily digestible, sweet, astringent, creates dryness, augments digestive fire, is aphrodisiac, increases taste, cures fever, dyspnoea, diabetes, leprosy and other skin diseases and giddiness.

30. चकवड़, पावँड़
Chakavad

संस्कृत – *Chakramard (चक्रमर्द:)*
अंग्रेज़ी – Leguminoseae
बोटेनिकल – *Cassia tora Linn*



चकवड़ - *Chakavad*

चकवड़ औषधीय गुण वाली फली होती है। इसका पौधा 30 से 90 से.मी. तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते हरे रंग के होते हैं। इसके पत्ते 3 से 4.5 से.मी. लम्बे होते हैं। इसके फूल पीले रंग के होते हैं। इसकी फली के भीतर 30 से 50 बीज होते हैं। इसके बीजों का औषधीय प्रयोग किया जाता है। भारत वर्ष में सर्वत्र पाया जाता है।

Chakavad is legume of medicinal properties. Its plant is 30 to 90 cm high. Its leaves are of green colour and 3 to 4.5 cm long. Its flowers are of yellow colour. Its legume has 30 to 50 seeds. Its seeds are used in medicines. It is found everywhere in India.

चक्रमर्दस्त्वेडगजो मेषाक्षिकुसुमस्तथा।
प्रपुन्नाटस्तरवटचकाह्वचक्रिकस्तथा॥
चक्रमर्द: कटूष्ण: स्यात् प्रोक्तो वातकफापह:।
दद्रुकण्डूहर: कान्तिसौकुमार्यकरो मत:॥

(ध.नि.,कर.च.व, 4, 5)

एडगज, मेषाक्षिकुसुम, प्रपुन्नाट, तरवट, चक्राह्व और चक्रिय – ये चक्रमर्द के पर्यायवाची हैं।

चक्रमर्द रस में कटु एवं वीर्य में उष्ण होता है। यह वात-कफ, दद्रु (दाद) तथा कण्डू (खूजली) का नाश करता है। शरीर में कान्ति एवं सुकुमारता प्रदान करता है।

Synonyms of *Chakramarda* are: Edagaja, Meşakşi Kusum, Prapunnata, Taravata, Chakr*ā*hva and cakriya.

Chakramarda is astringent in taste, hot in potency and mitigates Vata and Kapha. It also cures Ring-worm, Itching. It bestows complexion (radiance) and vitalization.

31. छोटी-दन्ती और बड़ी दन्ती
Chot*ī* Dant*ī* & Ba*dī* Dant*ī*

संस्कृत – *Dantī* (लघुदन्ती)
Danti brhat dantī
(बृहद् दन्ती)

अंग्रेज़ी – -

बोटेनिकल – *Baliospermum montanum*



छोटी-दन्ती और बड़ी दन्ती -
Choti Danti & Badi Danti

लघु दन्ती एक छोटा पौधा होता है। ज़मीन से जुड़ी हुई झाड़ियों की तरह फैला हुआ होता है। यह 3 से 6 फुट ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ 2 से 3 इंच लम्बी होती हैं। नीचे की पत्तियाँ अधिक लम्बी होती हैं। इसके फूल हरिताभ वर्ण के होते हैं। इसका फल 1 से 1.5 इंच लम्बा होता है। इसके फल तिकोने होते हैं। प्रत्येक फल में भूरे रंग के तीन बीज होते हैं। लघु दन्ती की तरह दीर्घदन्ती भी होती है। इसलिए इनको दन्तीद्वय कहा जाता है।

Laghu Danti spreads closely over the surface of the soil in the form of a bush. It is 3 to 6 feet tall and its leaves are 2 to 3 inches long, the lower ones being longer. Its flowers have a greenish tinge. Its fruits are 1 to 1.5 inch long and are triangular in shape, containing three brown seeds. Deergh (Bari) Danti is also like laghu danti. Therefore, both together are called Danti Dvay.

द्रवन्ती शम्बरी चित्रा प्रत्यक्पर्ण्याखुपर्ण्यपि ॥
उपचित्रा श्रुतश्रोणी न्यग्रोधी च तथा वृषा।
दन्तीद्वयं सरं पाकं रसे च कटु दीपनम् ॥
गुदाङ्कुराश्मशूलास्रकण्डूकुष्ठविदाहनुत्।
तीक्ष्णोष्णं हन्ति पित्तास्रकफशोथोदरकृमीन् ॥

(भा.प्र.गुडू.व. 198, 199, 200)

द्रवन्ती, शम्बरी, चित्रा, प्रत्यक्पर्णी, आखुपर्णी, उपचित्रा, श्रुतश्रोणी, न्यग्रोधी तथा वृषा ये सभी नाम दन्ती के ही हैं।

छोटी दन्ती - बड़ी दंती (दोनों) बवासीर, अश्मरी (पथरीरोग) रक्त तथा कुष्ठ रोगों में लाभकारी होती हैं। यह कफ, सूजन तथा उदर कृमिनाशक भी होती है।

Dravant*ī*, śambar*ī*, citrā, pratyakparn*ī*, ākhuparni, upacitra, śrutaśron*ī*, nyagrodhi and vrsā— are synonyms.

Both *dantī* are laxative, pungent both in taste and after digestion, increase digestive fire, cures piles, renal calculus, colic, piles, bleeding diseases, itching, leprosy, burning sensation during digestion; are penetrating, hot in potency, cure bleeding diseases, dropping due to *kapha*, enlargement of the abdomen and worms.

32. चिचिण्डा
Cicindā

संस्कृत – *Cicindā (चिचिण्डा)*
अंग्रेज़ी – Snake gourd
बोटेनिकल – *Trichosanthes anguina*



चिचिण्डा- Cicindā

चिचिण्डा यह ज़मीन पर लता की तरह फैलता है। जिसकी लम्बाई 60 से 150 से.मी. तक होती है। यह मूल की तरफ गोल, मोटा तथा ऊपर की ओर बहु शाखा युक्त तथा चौपहल होता है। इसका फल लम्बा बेलनाकार, धारीदार होता है। इसके पत्ते सरल 5 से 8 से.मी. लम्बे पञ्चकोणीय होते हैं। इसका पुष्पकाल मई से जुलाई तक एवं फलकाल जून से नवम्बर तक होता है। इसके पंचांग (पत्र, पुष्प, फल, मूल बीज) का प्रयोग करते हैं।
Cicindā spreads as a creeper on the soil and is 60 to 150 cm long. It is round and thick towards the root and multi branched and four sided upwards. Its fruit is long strips and like a rolling pins. Its leaves are five sided 5 to 8 cm long. It flowers in the period from May to July and bears fruit from June to November. All parts of plants, root, seed, flower, fruit and leaves are used.

चिचिण्ड: श्वेतराजि: स्यात्सुदीर्घो गृहकूलक: ।
चिचिण्डो वातपित्तघ्नो बल्य: पथ्यो रुचिप्रद: ।
शोषणोऽतिहित: किञ्चिद् गुणैर्न्यून: पटोलत: ॥

(भा.प्र.शा.व. 62)

श्वेतराजि, सुदीर्घ तथा गृहकलक चिचिण्डा के ही अन्य नाम हैं। चिचिण्डा - वात-पित्त, बलवर्धक, पथ्य (हितकर), रुचिकारक, उष्ण और अधिक लाभदायक होता है। यह परवल के गुणों से कम गुणों वाला होता है।

Svetaraji, sudirgha and *grhkulka* are other names of *cicindā. Cicind*ā mitigates *vāta* and *pitta*, bestows strength, good for health, increases taste, very good for patients of consumption. It is slightly inferior to patola in qualities.

33. चिरचिरा, लाल चिरचिरा
Ciracirā, Lāl Ciracirā

संस्कृत – *Apāmārga (अपामार्ग)*
अंग्रेज़ी – Primary chaft flower
बोटेनिकल – *Achyranthes aspera*



चिरचिरा, लाल चिरचिरा - Ciracirā, Lāl Ciracirā

चिरचिरा उत्तम औषधीय गुणों वाला झाड़नुमा पौधा होता है, जो सूखे क्षेत्रों में पाया जाता है। इसकी ऊँचाई 60 से 120 से.मी. होती है। *चिरचिरा* दो प्रकार का होता है – लाल और सफेद। इसका पत्ता 1 से 5 इंच लम्बा होता है। इसके फूल 2 इंच लम्बे गुच्छों में होते हैं। इसकी जड़, पत्ती, फूल और छाल सभी का औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह भारत में सभी जगह पाया जाता है।

Ciracirā (Ciracira) is a bushy plant of significant medicinal utility. It is found in dry area. It is 60 to 120 cm high. *Ciracira* is of two types : red and white. Its leaf is 1 to 5 inch long. Its flowers are 2 inch long found in panicles. All the parts of *apamarga* (root, leaves, flowers and bark) are utilised as medicine. It is found all over India.

अपामार्ग: सरस्तीक्ष्णो दीपनस्तिक्तक: कटु:।
पाचनो रोचनश्छर्दिकफमेदोऽनिलापह:।
निहन्ति हृद्रुजाध्मार्श: कण्डूशूलोदरापची:॥

(भा.प्र., गुडू.व., 0/219, 220)

चिरचिरा सारक, तीक्ष्ण, दीपन, तिक्त, कटु, पाचक, रेचक, वमन (उल्टी), कफ, मेद तथा वातनाशक है। हृदय के रोग में लाभप्रद होता है। इसके साथ-ही-साथ बवासीर, कण्डू (खुजली), शूलरोग, उदररोग और अपची (कण्ठमाला) इत्यादि रोगों को भी नष्ट करता है।

Ciracirā is laxative, penetrating, increases digestive fire, bitter, pungent, digestive,increases taste, cures vomiting, diseases of *Kapha,* medas (fat) and anila (*vata*), pain/ diseases of the heart, flatulence, piles, itching, pain in the abdomen, enlargement of abdomen and scrofula/ goitre.

34. चिरौंजी
Ciraunjī

संस्कृत – *Priyālah (प्रियाल:)*
अंग्रेज़ी – -
बोटेनिकल – *Bucchanania lanzan spreng*



चिरौंजी - Ciraunjī

चिरौंजी एक औषधीय गुणों वाला बीज होता है। इसका पेड़ लगभग 50 फीट ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ हरी व सीधी और समानान्तर होती हैं। इसमें पिरामिड के आकार के सफेद फूल होते हैं। इसके वृक्ष की छाल अधिक मोटी एवं अत्यन्त खुरदरी होती है। इसके फूल छोटे सघन 6 मि.मी व्यास के होते हैं। इसके फल 8 से 12 मि.मी. अण्डाकार एवं काले रंग के होते हैं।

Ciraunjī (*priyalah*) is a medicinal seed. Its tree is about 50 feet tall. Its leaves are green and grow in straight and parallel form. It has small white flowers in pyramid shape. The bark of tree is quite thick and rough. Its flowers are small dense and have size of 6 mm diameter. The fruits are of 8 to 12 mm size, egg shaped and black in colour.

चार: पित्तकफास्रघ्नस्तत्फलं मधुरं गुरु।
स्निग्धं सरं मरुत्पित्तदाहज्वरतृषाऽपहम्॥
प्रियालमज्जा मधुरो वृष्य: पित्तानिलापह:।
हृद्योऽतिदुर्जर: स्निग्धो विष्टम्भी चामवर्द्धन:॥

(भा.प्र.आम्रा.व. 84, 58)

चिरौंजी पित्त, कफ, रक्तदोषनिवारक, मधुर फल होता है। यह स्निग्ध, मलसारक, वायु, पित्त, दाह, ज्वर, प्यास को हरने वाला होता है। यह मज्जा मधुर, वीर्यवर्धक, पित्त-वात, हृदय के लिए हितकर, कठिनाई से पचने वाला, स्निग्ध (चिकना), कब्ज़ करने वाला और आम दोष वाला होता है।

Ciraunjī mitigates *pittā, kapha* and *rakta*, its fruit is sweet, heavy for digestion, unctuous laxative, mitigates *vāta*, *pitta*, cures burnings sensation, fever and thirst. *Priyal*ā majjā (marrow) is sweet, aphrodisiac, mitigates pitta and vata, good for heart, very hard to digest, unctuous, constipating and increases āma (undigested material in alimentary tract, tissues etc.).

35. चिरायता
Cirāyatā Ciretā

संस्कृत – *Kirāta tikta (किराततिक्त)*
अंग्रेज़ी – Chireta
बोटेनिकल – *Swertia chirata (Bunch)*



चिरायता - Cirāyatā Ciretā

चिरायता एक प्रकार की औषधीय वनस्पति होती है। इसका पौधा 2 से 4 फुट ऊँचा होता है। इसका पत्ता नुकीला होता है जो 2 से 3 इंच लम्बा तथा 3 से 4 इंच चौड़ा हेाता है। यह हिमाचल, काश्मीर तथा अरुणाचल प्रदेश में काफी ऊँचाई पर होता है।

Cirāyatā is a medicinal plant which is 2 to 4 feet high. Its leaf is pointed 2 to 3 inches long and 3 to 4 inches wide. It is cultivated in Himachal, Kashmir and Arunchal Pradesh at quite high places.

किराततिक्त: कैरात: कटुतिक्त: किरातक: ॥
काण्डतिक्तोऽनार्यतिक्तो भूनिम्बो रामसेनक: ॥
किरातकोऽन्यो नैपाल: सोऽर्द्धतिक्तो ज्वरान्तक: ॥
किरात: सारको रूक्ष: शीतलस्तिक्तको लघु: ।
सन्निपातज्वरश्वासकफपित्तास्त्रदाहनुत् ।
कासशोथतृषाकुष्ठज्वरव्रणकृमिप्रणुत् ॥

(भा.प्र.,आम्रा.ह.व. 153, 154, 155)

चिरायता के अन्य नाम किरातितक्त, कैरात, कटुतिक्त, किरातक, काण्डतिक्त, अनार्यतिक्त, भूनिम्ब तथा रामसेनक हैं। *चिरायता* – मलसारक, रूक्ष, शीत, वीर्य, तिक्त रस वाला एवं लघु होता है। श्वास, कफ, पित्त, रक्तस्राव एवं दाह में लाभप्रद होता है। इसके साथ-ही-साथ यह कास, शोथ, (सूजन), प्यास, कुष्ठ,ज्वर (बुखार), व्रण (फोड़ा) और कृमिनाशक भी है।

Other names of *Cirāyatā* are kiratatikta-kairata, katutikta, kirataka, kandtikta, anaryatikta, bhunimba, ramasenaka. Kirāta is laxative, causes dryness, cold in potency, bitter in taste, easily digestible, cures sannipata jvara (fever caused by all the three dosas together), dyspnoea, diseases of kapha, pitta, asra (rakta), burning sensation, cough, dropsy, thirst, leprosy (and other skin diseases) fever, ulcers and worms.

36. धनियाँ
Dhaniyām

संस्कृत – *Dhānyaka (धान्यक)*
अंग्रेज़ी – Coriander
बोटेनिकल – *Coriandrum sativum*



धनियाँ - Dhāniyām

धनियाँ औषधीय गुणों से युक्त शाकीय पौधा होता है। यह सुगन्धित, चिकना, शाखा - प्रशाखायुक्त पौधा होता है। इसकी ऊँचाई लगभग 12 से.मी. होती है। इसका पत्ता हरे रंग का होता है। इस पौधे के बीज तथा पत्तों दोनों का ही प्रयोग हर घर में किया जाता है। यह भारत में सभी जगह पाया जाता है। इसका पंचांग (हरी धनिया का) और फल तथा तेल का प्रयोग करते हैं।

Dhaniayām (coriandar, dhanyaka) is a vegetable plant, it is full of medicinal properties. Its height is approximately 12cm. Its leaf is of green colour. Its dried seeds and leaves are used in every household. It is found everywhere in India. All the parts of this plant (fruit, flower, root, stem etc.| are used as medicine. Its oil is also have medicinal value.

धान्यकं तुवरं स्निग्धमवृष्यं मूत्रलं लघु।
तिक्तं कटूष्णवीर्यश्च दीपनं पाचनं स्मृतम्॥
ज्वरघ्नं रोचकं ग्राहि स्वादुपाकि त्रिदोषनुत्।
तृष्णादाहवमिश्वासकासकार्श्यक्रिमिप्रणुत्॥

(भा.प्र.,ह.व. 87, 88)

धनियाँ कसैला, स्निग्ध, वीर्यनाशक, मूत्रवर्धक, पाचन में हलका, रस-तिक्त और वीर्य उष्ण होता है। यह अग्निवर्धक, पचाने वाला, ज्वरनाशक, रुचि को बढ़ाने वाला, मल को रोकने वाला, पचने के पश्चात् मधुर और त्रिदोष (वात, पित्त एवं कफ) नाशक, प्यास, दाह (जलन), उल्टी (वमन), श्वास, कास, कृशतानाशक, कृमि आदि को नष्ट करता है।

Dhānyaka is astringent, unctuous, non-aphrodisiac, diuretic, easily digestible, bitter, pungent, hot in potency, increases digestive fire, digestive anti-febrile, improves taste, water absorbant (constipating) sweet after digestion, mitigates all the three *dosas*, thirst, burning sensation, vomiting, dyspnoea, cough, emaciation and intestinal worms.

37. धतूर
Dhatūra

संस्कृत – *Dhattūrah (धत्तूरः)*
अंग्रेज़ी – Thorn apple
बोटेनिकल – *Datura metel*



धतूर - Dhatūra

धतूर एक मध्यम आकार की (वार्षिक) मादक वनस्पति होती है। यह स्वयंजात होने से समस्त भारत में पाया जाता है। यह पौधा 2 से 5 फुट ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ गहरी हरी तथा आगे की ओर नुकीली होती हैं। इसके फूल बाहर की तरफ बैंगनी तथा अन्दर की तरफ सफेद चिलम के आकार के होते हैं। इसके फल 3 से 4 से.मी. गोलाकार, नुकीले कण्टकों से आवृत होते हैं। इसके बीज एवं फल में औषधीय गुण होता है।

Dhatūra is an intoxicating a medium sized annual herb. It is a self growing herb and hence it is found everywhere in India. This plant is 2 to 5 feet high. Its leaves are pointed dark green in colour. Its flowers are tubular (chillum shaped) white from inside and purplish from outside. Its fruit is globular, 3 to 4 cm in diameter covered with spines. Its fruit and seed have medicinal value.

धत्तूरो मदवर्णाग्निवातकृज्ज्वरकुष्ठनुत् ॥
कषायो मधुरस्तिक्तो यूकालिक्षाविनाशकः।
उष्णो गुरुर्व्रणश्लेष्मकण्डूकृमिविषापहः ॥

(भा.प्र.गुडू.व. 86, 87)

धतूर- मदकारक, वर्णवर्धक तथा अग्निवर्धक है। यह कषाय रस, मधुर एवं तिक्त रस वाला होता है। यह वातजन्य ज्वर, कुष्ठरोग, यूका (ढील), लिक्षा (लीख, चीलर) को नष्ट करता है। उष्ण, गुरु, व्रण (फोड़ा), कफ, (खुजली), कृमिरोग और विष को नष्ट करता है।

Dhattūra produces intoxication, improves colour complexion and digestive fire and aggravates vāta, cures fever, leprosy (and some other skin diseases), astringent, sweet bitter, destroys lice of the head and body, hot in potency, hard for digestion, cures wounds, diseases of kapha, itching, worms (bacteria etc.) and poison.

38. दूधिया
Dudhiyā

संस्कृत – *Dugdhikā (दुग्धिका)*
अंग्रेज़ी – Gulf sandmat
बोटेनिकल – *Euphorbia thymifolia, Euphorbia hirta*



दुधिया - Dudhiya

दूधिया औषधीय गुण वाला पौधा होता है। इसकी डण्ठल रोएँदार होती हैं। जिससे पत्तियाँ दाँत के आकार की होती हैं। छोटे-छोटे सफेद फूल होते हैं। दूधी की कोमल शाखाओं को तोड़ने से दूध जैसा द्रव निकलता है। दूधी छोटी तथा बड़ी दो प्रकार की होती है। इसके पंचांग का प्रयोग औषधियों में किया जाता है।

Dudhiyā (*Dudhika*) is a medicinal plant. Its stem is villous from which produces teeth like leaves. Stems secrete milk like liquid. It has white small flowers. It is of two types. Small and large. All the five parts of this plant are used in medicine.

दुग्धिका स्वादुपर्णी स्यात्क्षीरा विक्षीरिणी तथा।
दुग्धिकोषणा गुरु रूक्षा वातलागर्भकारिणी॥
स्वादुक्षीरा कटुस्तिक्ता सृष्टामूत्रा मलापहा।
स्वादुविष्टम्भिनी वृष्या कफकुष्ठकृमिप्रणुत्॥

(भा.प्र., गुडू.व. 275, 276)

दूधिया के अन्य नाम दुग्धिका, स्वादुपर्णी, क्षीरा तथा विक्षीरणी हैं। दूधिया किंचित् उष्ण, स्वादु क्षीरयुक्त और बिना दूध वाली, उष्ण, गुरु, रूक्ष, वातकारक गर्भधारण कराने में सहायक होती है। इसका रस आमाशय, मूत्ररोग, कफ, कुष्ठ रोगों में लाभप्रद तथा वीर्यवर्धक होता है।

Other names of *Dugdhika* are : svaduparni, ksira, viksirini. *Dugdhika* is hot in potency, dry (causes dryness), increases *vāta*, helps formation of faces; its sap is sweet, pungent and bitter, helps elimination of urine and faeces, aphrodisiac, mitigates *kapha*, cures leprosy and worms.



दुधिया - Dudhiya

39. एरंड, रेड़
Erand

संस्कृत – *Erand (एरण्ड:)*
अंग्रेज़ी – Euphorbiaceae
बोटेनिकल – *Ricinus communis linn*



एरंड, रेड़ - Erand

एरण्ड मध्यम कद का वृक्ष होता है। यह 15 से 20 फुट ऊँचा होता है। इसके फल के बीज में औषधीय गुण होता है। इसके पत्ते हरे 30 से 60 से.मी. चौड़े तथा 5 से 11 खण्डों में विभक्त होते हैं। इसके बीज तेल, पत्ते तथा जड़ का प्रयोग औषधि के रूप में किया जाता है। यह भारत में सभी जगह पाया जाता है।

It is a medium size tree. It is 15 to 20 feet high. The seeds of this fruit have medicinal properties. Its leaves are green, 30 to 60 cm wide and are divided into 5 to 11 parts. Its seeds, oil, leaves and stem are used for medicine purposes. It is found everywhere in India.

एरण्डस्तरुण: शुक्लश्चित्रो गन्धर्वहस्तक:।
पञ्चाङ्गुलो वर्धमान आमण्डो दीर्घदण्डक:।
रक्तोऽपरो हस्तिकर्णी व्याघ्रो व्याघ्रदलो रुबु:।
रुबुको हस्तिकर्णी च चञ्चुकोत्तानपत्रक:॥
एरण्डोऽपि रसे तिक्त: स्वादूष्णोऽनिलनाशन:।
उदावर्तप्लीहगुल्मवस्तिशूलान्त्रवृद्धिनुत्॥
गुरुर्वातप्रशमनो विकाराञ्शोजिताञ्जयेत्।
फलं स्वादु च सक्षारं लघूष्णं भेदि वातजित्॥
एरण्डयुगलं वृष्यं स्वादु पित्तसमीरजित्।

(ध.नि,प्र.व., 295, 296, 297, 298)

तरुण, शुक्ल, चित्र, गन्धर्वहस्तक, पञ्चाङ्गुल, वर्धमान, आमण्ड, दीर्घदण्डक – ये एरण्ड के पर्याय हैं। दूसरे प्रकार का एरण्ड लाल होता है, जिसके पर्याय व्याघ्र, व्याघ्रदल, रुबु, रुबुक, हस्तिकर्णी, चञ्चुक और उत्तानपत्रक हैं।

एरण्ड रस में तिक्त, विपाक में मधुर, वीर्य में उष्ण तथा वातनाशक है। यह उदावर्त, प्लीह, गुल्म, वस्तिशूल, आन्त्रवृद्धि, गुण में गुरु, वात का प्रशमन करने वाला, रक्तगत विकारों का नाश करने वाला है। इसका फल रस में मधुर, क्षारयुक्त, गुण में लघु, वीर्य में उष्ण, भेदन करने वाला तथा वातनाशक होता है। दोनों ही प्रकार के *एरण्ड* वृष्य, रस में मधुर तथा पित्त और वायु के नाशक हैं।

There are two kind of *erand*: white and red. Its other names like: tarun, sukla, chitra, gandharva, hastak, panchangula, vardhaman, amand and dirghadandaka. Red erand is also called as hastikarni, vyaghra, vyaghradala, rabu, rabuka, hastikarni, chanchuka and rutan patrak.

It tastes bitter, hot in potency, sweet after digestion and mitigates *vata*. It cures gastric problems, *vata*, Spleen-diseases, tumour, abdominal pain and enlargement of intestine. It also cures *rakta-vikara* or bleeding diseases. The fruit of *erand* tastes with slightly alkline. It digests easily both types of *erand* are sweet mitigate *pitta* and *vata* and augment semen.

40. घीकुआँर
Gheekuar

संस्कृत – *Kumarī (कुमारी)*
अंग्रेज़ी – Common Indian aloe
बोटेनिकल – *Aloe barbadensis*



घीकुआर - Gheekuar

घीकुआँर एक बारहमासी वनस्पति है। इसकी तने एवं जड़ छोटे प्रारूप की होती हैं या छोटी होती हैं जो उत्तम चिकित्सकीय गुणों से युक्त होती हैं। यह 2 से 3 फुट ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ गूदेदार लम्बी तथा किनारों पर कांटेदार होती हैं जो भाले के आकार की 2½ से 4 इंच तक चौड़ी तथा नुकीली होती हैं। इसके पुराने पौधों में पीले तथा लाल रंग के पुष्प निकलते हैं। यह पौधा भारत के सभी स्थानों पर मिलता है एवं इसको उगाया भी जाता है।

It is a perennial herb with short stem and shallow roots. It is an excellent medicinal plant which is approximately 2 to 3 feet high. Its spear shaped leaves are pulpy, long often crowded with horny prickles on the edges. Normally they are 2½ to 4 inches wide and pointed. Its old plants bear red coloured flowers. It grows on its own and is also cultivated.

कुमारी गृहकन्या च कन्या घृतकुमारिका।
कुमारी भेदनी शीता तिक्ता नेत्र्या रसायनी॥
मधुरा बृंहणी बल्या वृष्या वातविषप्रणुत्।
गुल्मप्लीहयकृद्वृद्धिकफज्वरहरी हरेत्॥
ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटपित्तरक्तत्वगामयान्॥

(भा.प्र.गुडू.व. 229, 230)

घीकुआँर के अन्य पर्यायवाची शब्द कुमारी, घृतकुमारी, गृहकन्या तथा कन्या हैं । *घीकुआँर* - शीतल, तिक्त, नेत्र में लाभकारी होता है। यह, बलदा, वात एवं विष का नाशक है, (यकृत, तिल्ली वृद्धि में बढ़े हुए) गुल्म, प्लीह, कृच्छ, कफ एवं ज्वर में लाभदायक होता है। गाँठ में, आग से जले पित्त वृद्धि में तथा फफोला, रक्तगत रोग , त्वचारोग एवं आमदोष आदि में अत्यन्त लाभप्रद होता है।

Kumari, ghritkumari, grihkanya and kanya are the other names of gheekuar. Kumari is purgative, cold in potency, bitter, good for eyes (vision), rejuvenator, sweet, nutrient, strengthening, aphrodisiac, mitigates *vata* and poison, cures abdominal tumours, enlargement of spleen and liver, fever, arising from *kapha*, tumours, burns, small poxblebs, diseases of *pitta*, *rakta* diseases and amavisa of the skin.

41. गिलोय
Giloy, Guruca, Guduca

संस्कृत – *Guducī (गुडूची)*
अंग्रेज़ी – Tinospora
बोटेनिकल – *Tinospora cordifolia*



गिलोय -
Giloy, Gurudca, Guduca

यह आयुर्वेदिक औषधीय गुण वाली लता होती है। इसका तना पतली छाल युक्त होता है। इसका पत्ता पान के आकार का होता है, जो 4 इंच चौड़ा और 1 से 3 इंच तक लम्बा होता है। गिलोय के पुष्प पीले रंग के होते हैं, जो ग्रीष्म ऋतु में निकलते हैं। यह वात, पित्त तथा कफ – इन तीनों दोषों में संतुलन बनाए रखती है।

Giloy (*Guducī*) is a medicinal creeper. Its trunk is of thin bark. Its leaf is beetle shaped, which is 4 inches wide and 1 to 3 inches long. The *giloy* flowers are yellow in colour. They emerge in summer. It balances all the three '*vaat*', '*pitt*' and *kaph doshas*.

गुडूची कटुका तिक्ता स्वादुपका रसायनी।
संग्राहिणी कषायोष्णा लघ्वी बल्याऽग्निदीपिनी।
दोषत्रयामतृड्दाहमेहकासां च पाण्डुताम्॥
कामलाकुष्ठवातास्रज्वरकृमिवमीन् हरेत्।
प्रमेहश्वासकासार्श: कृच्छ्रहृद्रोगवातनुत्॥

(भा.प्र.गुडू.व. 8, 9, 10)

गिलोय कटु, तिक्त तथा कषाय रसयुक्त एवं पाचनोपरान्त मधुर, रसयुक्त, रसायन,मल को बाँधने वाला, उष्णवीर्य, लघु बलदायी, अग्निदीपन करने वाला, त्रिदोष नाशक, तृषा, दाह, मेह, श्वास, कास, बवासीर, मूत्र कृच्छ्र, पाण्डुरोग, कामला, कुष्ठरोग, वातजन्यरोग, रक्तजरोग, ज्वर, कृमि, वमन (उल्टीरोग) हृद्रोग और वात इन सब रोगों का नाशक होता है।

Guduci is pungent bitter, sweet after digestion, rasayani (rejuvenator), tissue vitaliser, water absorbant (causing constipation), astringent, hot in potency, easily digestible, strength giving and appetizer. It cures thirst, burning sensation, urinary diseases, cough, jaundice, arthritides with skin lesions, fever, dyspnoea, cardiac problems and vat diseases and alleviates all the three *doshas*.

42. छोटा गोखरु, हथीचिकार
Gokharu, Hathicikar

संस्कृत – *Goksura (गोक्षुर:)*
अंग्रेज़ी – Small Caltrops
बोटेनिकल – *Tribulus terristris*



छोटा गोखरु, हथीचिकार - Gokharu, Hathicikar

गोखरु (हथीचिकार) एक कण्टक लता होती है। इसकी बेल छोटी-छोटी घनी तथा ज़मीन पर दूर तक फैली होती है। इसका तना श्वेत रोम से युक्त होता है। इसकी पत्तियाँ एक ही जगह से निकली हुई आमने-सामने होती हैं। जिसकी लम्बाई 2 से 3 इंच होती है। इसके फूल पीले रंग के तथा छोटे होते हैं। इसका फल गोल तथा कांटेदार होता है।

Gokharu (*Hathicikar*) is a thorny creeper. It spreads in small dense patches over the ground for long distance. Its trunk has white silky hair. Its leaves grow 2 to 3 inches long opposite each other from the same point. It bears small yellow flowers and the fruit is spherical and has thorns over its surface.

गोक्षुर: शीतल: स्वादुर्बलकृद्धस्तिशोधन: ॥
मधुरो दीपनो वृष्य: पुष्टिदश्चाश्मरीहर: ।
प्रमेहश्वावाकासार्श: कृच्छ्रहृद्रोगवातनुत् ॥

(भा.प्र.गुडू.व. 45, 46)

गोखरू शीतल, मीठा, शक्तिवर्द्धक, मूत्रशोधक, कफ, पाचन में लाभप्रद, मधुर, भूख को बढ़ाने वाला, वीर्यवर्द्धक, बलवर्द्धक, पथरी का नाशक प्रमेह, हृदय रोग श्वास रोग, मूत्र कृच्छ्र रोग तथा वातजन्यरोगों में लाभप्रद होता है।

Goksura is cold in potency, sweet, gives strength, purifies the urinary bladder, sweet in digestion, increases hunger, is aphrodisiac nourishing, cures urinary calculi, diabetes, dyspnoea, cough, haemorrhoids, dysuria, heart disease and mitgates *vata.*

43. गुलाब
Gulāb

संस्कृत – *Satapatrī (शतपत्री)*
अंग्रेज़ी – Rose flower
बोटेनिकल – *Rosa centifolia*



गुलाब - Gulab

गुलाब पुष्पीय प्रजाति का पौधा होता है। जिसकी ऊँचाई 4 से 6 फुट होती है। तने में कांटे लगे होते हैं। ये विभिन्न प्रकार के होते हैं। मूलत: इसका फूल गुलाबी या लाल होने से ही इसे *गुलाब* कहते हैं। आजकल यह सफेद, पीले और गहरे लाल रंग में भी पाए जाते हैं।

Gulāb is an erect thorny shrub which is 4 to 6 feet high. There are different varieties of this plant. Mostly its flower is pink or red hence, it is called *gulab*. Now a days it is also available in white, yellow and deep red colour.

शतपत्री तरुण्युक्ता कर्णिका चारुकेशरा।
महाकुमारी गन्धाढ्या लाक्षापुष्पाऽतिमञ्जुला॥
शतपत्री हिमा हृद्या ग्राहिणी शुक्रला लघु:।
दोषत्रयास्रजिद्व्रण्या कट्वी तिक्ता च पाचनी॥

(भा.प्र.,पु.व. 22, 23)

शतपत्री, तरुणी, युक्ता, कर्णिका, चारुकेशरा, महाकुमारी, गन्धाठ्या, लाक्षापुष्प तथा अतिमञ्जुला *गुलाब* के ही अन्य नाम हैं। *गुलाब* शीतल, हृदय रोगों में लाभकारी, मल को बाँधने वाला, वीर्यवर्द्धक, पचने में हल्का, वात, पित्त, कफ तीनों दोषों का नाशक, उग्रवीर्य, तीक्ष्ण तथा पाचक होता है।

Sataparti, taruni, yukta, karnika, charukeshara, mahakumari, gandhathya, lakshapushpa and atimanula are synonyms. *Satapatri* is cold in potency, good for heart, constipating, increases semen, easily digestible, mitigates all three *dosas* and blood, bestows colour/ complexion, is pungent, bitter and digestive.



गुलाब - Gulab

44. गूलर
Gular, Gullar

संस्कृत – *Udumbara (उदुम्बर:)*
अंग्रेज़ी – Cluster fig
बोटेनिकल – *Ficus glomerata*



गूलार - Gular, Gullar

गूलर एक औषधीय गुण वाला वृक्ष है। यह वृक्ष 60 से 70 फुट ऊँचा और विशाल होता है तथा पत्तियाँ 1½ इंच चौकोर आकार वाली एवं हरे रंग की होती हैं। इस वृक्ष के छाल, पत्ती, लकड़ी सभी औषधीय गुणों वाले होते हैं। इसके फल अंजीर की तरह दिखाई देते हैं और काटने पर इनमें से कीट निकलते हैं।

Gular is a tree with medicinal properties. The tree is very large and 60 to 70 feet high. Its leaves are square 1½ (or half to one) inch wide and are light green in colour. All the parts (bark, leaves, wood) of the tree are used as medicine. Its fruit look like fig and are infested with maggots which came out as the fruit is cut.

उदुम्बरो हिमो रूक्षो गुरु: पित्तकफास्रजित्।
मधुरस्तुवरो वर्ण्यो व्रणशोधनरोपण: ॥

(भा.प्र.वटा.व. 9)

उदुम्बर शीतल, स्वाद में रूखा तथा पचने में भारी है। पित्त, कफ, रक्त दोषों को हरने वाला, यह कसैला युक्त माधुर्य मूल वाला होता है। रक्तशोधन एवं घाव के भरने में सहायक होता है।

Udumbara is cold in potency, dry (causes dryness), hard for digestion, mitigates pitta, kapha and asra (rakta), sweet, astringent, bestows colour/complexion, purifies and heals ulcers.

45. हल्दी
Haldī

संस्कृत – *Haridrā (हरिद्रा)*
अंग्रेज़ी – Turmeric
बोटेनिकल – *Curcuma longa*



हल्दी - Haldī

हल्दी एक औषधीय पौधा होता है। इसकी गणना कन्दीय फलों में होती है। इसका जड़भाग औषधि व मसाले के रूप में प्रयुक्त होता है। इसका पौधा 2 से 2.5 फुट ऊँचा एक डंठल वाला होता है, जिसमें हरे रंग के शंकु के आकार वाले 8 से 10 पत्ते होते हैं। इसमें सफेद मिला हुआ हल्का बैंगनी रंग का एक फूल भी होता है। यह भारत के उत्तरी क्षेत्रों में अधिक पाया जाता है।

Haldī is a medicinal plant. It belongs to family of tubers. Its bulb (root) is used in medicine and spices. Its height is approximately from 2 to 2.5 feet only. It has only one stem. Its leaves are pyramid in shape. The colour of the leaves is green and they are 8 to 10 in numbers. There is one flower in it which is purple in colour mixed with white. It grows in the northern part of the India.

हरिद्रा कटुका तिक्तरूक्षोष्णा कफपित्तनुत्।
वर्ण्या त्वग्दोषमेहास्रशोथपाण्डुव्रणापहा॥

(भा.प्र.,ह.व. 197)

हल्दी कटु, तिक्त, रूक्ष, उष्ण, कफ तथा पित्त में लाभकारी होती है। सुन्दरवर्ण की त्वचा, मधुमेह, पाण्डुरोग तथा रक्त दोष में भी लाभप्रद होती है।

*Haridr*ā is pungent, bitter, dry (causes dryness), hot in potency, mitigates kapha and pitta, bestows colour, cures diseases of the skin, diabetes, diseases of blood, dropsy, anaemia, and ulcers.

46. हींग
Hīng

संस्कृत – Hingu *(हिङ्गु)*
अंग्रेज़ी – Asafoetida
बोटेनिकल – *Ferula narthex Boiss*



हींग - Hīng

हींग एक औषधीय पौधा है। यह पौधा 2 से 4 फीट ऊँचा तथा हरे रंग का होता है। इस पौधे में छोटी-छोटी पत्तियाँ होती हैं। इसके गुच्छेदार पीले फूल होते हैं। इससे निकलने वाले गोंद को हींग कहते हैं। जिसका प्रयोग औषधि तथा मसाले के रूप में होता है। इसके पौधे विशेष रूप से ईरान, अफ़गानिस्तान, कश्मीर, तुर्कमेनिस्तान, काबुल आदि पहाड़ी क्षेत्रों में पाये जाते हैं।

Hīng is a herb of great medicinal value. Its plant is 2 to 4 feet high. It is green in colour. This plant has small leaves. Its yellow flowers form panicles. This plant is found in hilly areas like Iran, Afganistan, Turkmenistan, Kashmir and Kabul etc. The gum resin obtained from the trunk is called *hīng* which is used in medicine and spices.

हिङ्गूष्णं पाचनं रुच्यं तीक्ष्णं वातबलासनुत्।
शूलगुल्मोदरानाहकृमिघ्नं पित्तवर्द्धनम्॥

(भा.प्र.ह.व. 101)

हींग उष्ण, पाचक, रुचिकर एवं तीक्ष्ण होता है। यह वात एवं कफ, ट्यूमर, उदरकृमि नाशक आँतशोधक एवं पित्तवर्धक है।

Hungu is hot in potency, digestive, enhances taste, penetrating, mitigates *vata* and balasa (*kapha*), cures colic, abdominal tumour, enlargement of the abdoment, flatulence and worms and aggravates *pitta*.

47. जामुन, फरेन्द्रा
Jāmun, Pharendrā

संस्कृत – *Rāja Jambu (राज जम्बू)*
अंग्रेज़ी – Jva plum
बोटेनिकल – *Syzygium cumini*



जामुन, फरेन्द्रा -
Jamun, Pharendrā

जामुन एक औषधीय गुणों वाला फल होता है। इसका वृक्ष 70 से 75 फुट तक ऊँचा होता है। यह फल पकने पर काले रंग का होता जाता है। इसके पत्ते 2 इंच लम्बे गहरे हरे रंग के होते हैं। इसकी गुठली का पाउडर मधुमेह में लाभप्रद होता है। भारत में यह सभी क्षेत्रों में पाया जाता है।

Jāmun is a medicinal fruit. Its tree is 70 to 75 feet high. This fruit turns black when ripe. Its leaves are two inches long and are dark green coloured. Its seed powder is used in diabetes mellitus. It is found all over India.

फलेन्द्रा कथिता नन्दी राजजम्बूर्महाफला।
तथा सुरभिपत्रा च महाजम्बूरपि स्मृता॥
राजजम्बूफलं स्वादु विष्टम्भि गुरु रोचनम्॥

(भा.प्र.आम्रा.व. 69)

फलेन्द्रा, नन्दी, राजजम्बू, महाफल, सुरभिपत्रा तथा *महाजम्बू* – ये सभी जामुन के ही अन्य नाम हैं। यह फल स्वादिष्ट, कब्ज़कारी, पचने में भारी तथा रुचि को बढ़ाने वाला होता है।

Phalendrā, nandī, rājajambu, mahāphala, surabhipatrā and *mahājambu* are synonyms. This fruit is sweet, constipating, hard for digestion and helps taste.

48. जीरा
Jirā

संस्कृत – *Jīraka (जीरक)*
अंग्रेज़ी – Cumin plant
बोटेनिकल –
1. Sukla - Cuminum cyminum
2. Krsna - Carium carvi
3. Kalika - Nigella sativa



जीरा - Jirā

जीरा एक गुणकारी वनस्पति होता है। प्राय: इसका मसाले के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसका पौधा 2 से 2.5 फुट ऊँचा अनेक शाखाओं वाला हरे रंग का होता है। इसकी पत्तियाँ छोटी-छोटी धनियाँ की पत्ती के समान हरे रंग की होती हैं तथा इसके फल छोटे सफेद रंग के होते हैं। इसके बीज (जीरा) का औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह भारत में सभी जगह पाया जाता है।

Jirā (jiraka cuminum cyminum) is a useful plant. It is normally used as a spice. Its plant is green in colour 2 to 2.5 feet high and have multiple branches. Its leaves are small like those of the coriander leaves. Its flowers are white and small. The seeds are utilized as medicine. It is cultivated all over India.

जीरकत्रितयं रूक्षं कटूष्णं दीपनं लघु।
संग्राही पित्तलं मेध्यं गर्भाशयविशुद्धिकृत् ।।।
ज्वरघ्नं पाचनं वृष्यं बल्यं रुच्यं कफापहम्।
चक्षुष्यं पवनाध्मानगुल्मच्छर्द्यतिसारहृत् ।।

(भा.प्र.ह.व. 84, 85)

तीनों प्रकार का *जीरा* रूक्ष, कटु, उष्ण, लघु, संग्राही तथा पाचक होता है यह पित्तवर्द्धक, बुद्धिवर्द्धक, गर्भाशय के शुद्धिकरण में उपयोगी होता है। यह ज्वरनाशक , पाचक, वीर्य-बल वर्द्धक, कफनाशक, रुचिवर्द्धक, चक्षुदोष, वातरोग, आध्मान (अफारा), गुल्मरोग, एवं अतिसार में लाभप्रद होता है।

All the three types of *jiraka* are dry (cause dryness), pungent in taste, hot in potency, increase digestive fire, easy for digestion, water absorbent (constipating), increase *pitta*, good for intelligence, purifies the uterus, cures fevers, digestive, aphrodisiac, bestows strength, improves taste, mitigates *kapha*, good for the eyes (vision), cures diseases of *vātā*, tympanitis, abdominal tumour, vomiting and diarrhoea.

49. कचनार
Kacanar

संस्कृत – *Kāñcanārah, Kovidārah*
(काञ्चनार:, कोविदार:)
अंग्रेज़ी – Mountain ebony
बोटेनिकल – *Bauhilni a variegata*



कचनार - Kacanar

कचनार एक औषधीय वृक्ष है। *कचनार* का वृक्ष 50 से 60 फुट ऊँचा होता है। इस वृक्ष की छाल, पुष्प एवं पत्तियों में औषधीय गुण होता है। इसकी पत्तियाँ हरे रंग की पान के आकार वाली होती हैं। इसके पुष्प गुलाबी, श्वेत तथा पीले रंग के होते हैं इसलिए इसके *श्वेत कचनार, रक्त कचनार* एवं *पीत कचनार* तीन रूप माने जाते हैं। इसके मूल, पत्र, त्वक् तथा पुष्प सभी अंगों का औषधीय महत्त्व है।

Kachnar (Kāñcanārah) is a medicinal tree. It is 50 to 60 feet tall. All the parts (bark, flower and leaves) of this tree have medicinal properties. Its leaves are green and betel shaped. It has various coloured (white, pink and yellow) flowers, hence it is named as *shvet kachnar, rakt kachnar* and *peet kachnar*. All its parts (root, leaves, bark and flowers) have medicinal value.

काञ्चनार: काञ्चनको गण्डारि: शोणपुष्पक:।
कोविदारश्च मरिक: कुद्दालो युगपत्रक:।
कुण्डली ताम्रपुष्पश्चाश्मन्तक: स्वल्पकेशरी॥
काञ्चनारो हिमो ग्राही तुवर: श्लेष्मपित्तनुत्।
कृमिकुष्ठगुदभ्रंशगण्डमालाव्रणापह:॥

(भा.प्र.गुडू.व. 101, 102, 103)

काञ्चनार, काञ्चनक, गण्डारि, शोणपुष्पक, कोविदार मरिक, कुद्दाल, युगपत्रक, कुण्डली, ताम्रपुष्प, अश्मन्तक, तथा स्वल्पकेसरी – ये सभी समानार्थक नाम हैं। (लाल रंग वाला) *कचनार शीतल,* कब्ज़कारी, तिक्त, कफ एवं पित्तनाशक, कृमिनाशक, कुष्ठ (तथा कुछ त्वचारोगों में) गुदभ्रंश, गले तथा अल्सर रोगों को दूर करने वाला है।

Kāñcanārah Kāncanka, gandāri, soṇapuspaka, kovidara, marika, kuddala, yugpatraka, kundali tamarpuspa, asmantaka and svalpkesari are synonyms. Kāncanāra (that with red flowers) is cold in potency, causes constipation, astringent, mitigates *kapha*, and *pitta*, cures worms, leprosy (and some diseases of the skin), prolapse of the rectum, scrofula (chain of enlarged lymph glands in the neck) and ulcers.

50. कागजीनिम्बु
Kagazinimbu

संस्कृत – *Nimbuka (निम्बूकम्)*
अंग्रेज़ी – Lime
बोटेनिकल – *Citrus medica-varacida*



कागजीनिम्बु - Kagazinimbu

कागजीनीम्बू एक औषधीय गुण युक्त कांटेदार पौधा होता है। इसका पौधा सघन झाड़ीदार होता है इसकी शाखाएँ काँटेदार, पत्तियाँ छोटी, डंठल पतला तथा पत्तीदार होता है। नींबू का फल हरे रंग का गोल होता है किन्तु पकने पर पीले रंग का हो जाता है। इसका पौधा 10 फुट तक ऊँचा हो जाता है। यह भारत के सभी क्षेत्रों में पाया जाता है।

Kagazinimbu (nimbrika) is a densely brushy plant. It has thorny branches, small leaves, slender stem with shoots. *nimbu* fruit is spherical, green when raw and becomes yellow when ripe. Its plant grows up to 10 feet. It is found all over India.

निम्बू: स्त्री निम्बुकं क्लीबे निम्बूकमपि कीर्त्तितम्।
निम्बूकमम्लं वातघ्नं दीपनं पाचनं लघु॥
निम्बुकं कृमिसमूहनाशनं तीक्ष्णमम्लमुदरग्रहापहम्।
वातपित्तकफशूलिने हितं कष्टनष्टरुचिरोचनं परम्॥
त्रिदोषवह्निक्षयवातरोगनिपीडितानां विषविह्वलानाम्।
मन्दानले बद्धगुदे प्रदेयं विसूचिकायां मुनयो वदन्ति॥
(भा.प्र.आभ्रा.व. 136, 137, 138)

नीम्बू, निम्बुका तथा नीम्बुकम् – ये तीनों इसके नाम हैं। नीम्बू अम्ल, वातनाशक, पाचक, लघु, है। कृमिनाशक, तीक्ष्ण, आँत्रशोथ निवारक, रुचिकर, आँत्रवृद्धि की दशा में लाभकारी होता है। त्रिदोषनाशक, वातजनित रोग, विष अपच आदि में लाभकारी है। इसे मुजि गण कहते हैं।

Nimbu, nimbuka and *nimbukam* are its names. *Nimbuka* is sour, mitigates *vāta*, increases digestive fire, digestive and easy for digestion.

Others say—
Nimbuka destroys scores of worms (bacteria etc.) is penetrating, sour, cures enlargements of the abdomen, colic produced by *vāta*, *pitta* and kapha, improves taste, mitigates all three *dosa*s and diseases of digestive fire, diseases due to *vāt*a, poison, poor digestive fire, obstruction of the rectum and visucika (advanced stage of indigestion) so say the sages.

51. काजू
Kaju

संस्कृत – *Vikankata (विकङ्कत:)*
अंग्रेज़ी – Governor's Plum
बोटेनिकल – *Flacaurtia indica Merr.*



काजू - Kaju

काजू का वृक्ष 32 फुट तक ऊँचा होता है। सदा हरा-भरा रहने वाला होता है। इसकी शाखाएँ मुलायम होती हैं तथा इसकी छाल से पीतवर्ण निर्यास निकलता है। इसके पत्ते लम्बे तथा चिकने होते हैं। इसमें हल्के लाल रंग के पुष्प गुच्छ होते हैं। इसका फल 2.50 से.मी. लम्बा नाशपाती के आकार का होता है जिसमें बीज की तरह से *काजू* बाहर निकलता है। यह भारत के समुद्र तटीय पठारी गोवा, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु प्रान्तों में पाया जाता है।

The *kaju* tree is an evergreen tree. It is 32 feet high. Its branches are soft and tender and leaves are long and smooth. Its fruit is 2.50 cm long and is pear shaped and is attached to the fruit at the bottom. Yellow coloured substance is secreted from bark of the tree. It is found along the coastal plateaus of Goa, Maharashtra, Karantaka, Andhra Pradesh and Tamil Nadu.

विकङ्कत: स्रुवावृक्षो ग्रन्थिल: स्वादुकण्टक:।
स एव यज्ञवृक्षश्च कण्टकी व्याघ्रपादपि॥
विकङ्कतफलं पक्वं मधुरं सर्वदोषजित्॥

(भा.प्र.आम्रा.व. 88)

काजू ग्रन्थिल, स्रुवावृक्ष, स्वादुकण्टक, यज्ञवृक्ष, कण्टकी तथा व्याघ्रपाद भी कहा जाता है। काजू पकने पर मधुर एवं सर्वदोषहारक फल होता है।

Vikankata, granthila, survavrksa, swadukanta, yajnavrksa, kantaki and vyrghrapada are synonyms. *Vikankata* fruit when ripe is sweet and mitigates all the *dosas*.

52. बनकंघी, ककहिया
Kakahiya

संस्कृत – *Atibala (अतिबला:)*
अंग्रेज़ी – Indian nallow
बोटेनिकल – *Abutilon indicum*



बनकंघी, ककहिया - Kakahiya

बनकंघी एक झाड़ीदार औषधीय गुणों वाला पौधा होता है। यह 90 से 150 से.मी. ऊँचा होता है। इसके पत्ते 2.5 से 5 से.मी. लम्बे 2 से 5 से.मी. चौड़े तथा अग्रभाग नुकीले होते है। इसके फूल 2.5 से.मी. चौड़े पीले रंग के होते हैं। इसका फल गोलाकार तथा हरे रंग का होता है। इसके पाचों भाग तना, जड़, पत्ती, फूल और बीज का औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह भारत में सभी जगह पाया जाता है।

Bankanghi (atibala) is a large shrub having medicinal properties. It is 90 to 150 cm high. Its leaves are 2.5 to 5 cm long and 2.5 cm wide and are pointed in the front. Its flower is yellow and 2 to 5 cm wide. Its fruit is round and green in colour. All its five parts (roots, stem leaf, flower and seed) are used in medicine. It is found all over India.

बलामूलत्वचश्चूर्णं पीतं सक्षीरशर्करम्।
मूत्रातिसारं हरति दृष्टमेतन्न संशय: ॥

(भा.प्र.गुडू.व.45)

बनकंघी के जड़ तथा छाल का चूर्ण दूध के साथ बलदायक तथा शर्करा के साथ मूत्रदोष में लाभ करता है, इसमें कोई संशय नहीं है।

Powder of root and bark of bala consumed with milk and sugar cures polyuria, this is seen and there is no doubt about it.

53. कालासेमर
Kalasemar

संस्कृत – *Kutsitsalmali*
(कूटत्सितशाल्मलि)
अंग्रेज़ी – White silk cotton tree
बोटेनिकल – *Ceiba pentandra geartn*



कालासेमर - Kalasemar

कालासेमर का वृक्ष 50 से 60 फुट का होता है। इसका फल सेमर कहलाता है जो लगभग 2 इंच लम्बा होता है। इससे प्राप्त रूई 'कपारु' कहलाती है। मूलत: यह केन्द्रीय अमेरिका का वृक्ष है किन्तु यह भारत में भी पाया जाता है।

'Kalasemar' tree is 50 to 60 feet tall. Its fruit is called semar which is approximately 2 inches long. The cotton produced by got from the tree is called 'Kaparu'. The origin of this tree is America but found in India also.

कूटशाल्मलिकस्तिक्त: कटुक: कफवातनुत् ॥
भेद्युष्ण: प्लीहजठरयकृद्गुल्मविषापह: ।
भूतानाहविबन्धास्रमेद:शूलकफापह: ॥

(भा.प्र.वटा.व. 58, 59)

कूटशाल्मली (कालासेमर) तीखा, कसैला, कफ तथा वात को नष्ट करने वाला, मल का भेदन करने वाला, तासीर में उष्ण एवं प्लीहा, उदररोग, यकृत, गुल्म, विष, भूतबाधा, आनाह, मलबन्ध, रक्तविकार, भेद, शूल तथा कफ का नाशक है।

Kutasalmali is bitter, pungent, mitigates kapha and vata, is purgative, hot in potency, cures enlargement, of spleen, liver and abdomen, tumour of the abdomen, poison, evil-spirits (bacteria etc.), Flatulence, constipation, diseases of blood, fat and kapha and pain of the abdomen.

54. कलिहारी
Kalihari

संस्कृत – *Kalihari* (कलिहारी)
अंग्रेज़ी – Tigers claws, glory lily
बोटेनिकल – *Gloriosa superba*



कलिहारी- Kalihari

कलिहारी (लांगली) एक औषधीय गुण वाली वृक्षारोही लता होती है। इसकी लम्बाई 20 फुट तक होती है। इसके पत्ते लट्वाकार तथा मालाकार होते हैं। ये 6 से 8 इंच लम्बे होते हैं। इसके फूलों का ऊपर का भाग अग्निशिखा की तरह लाल होता है। इसके फूल बहुत सुन्दर और गुच्छेदार होते हैं। इसके कन्द का प्रयोग औषधि के रूप में करते हैं।

Kalihari is a tree climbing creeper having medicinal properties. It is 20 feet long. Its leaves are 6 to 8 inch long and have shape of spear and that of spinning top. The upper portion of flowers are very pretty, red (like fire) agnishikha and form panicles. Its bulb (root) is used in medicine.

कलिहारी सरा कुष्ठशोफार्शोव्रणशूलजित्॥
सक्षारा श्लेष्मजित्तिक्ता कटुका तुवराऽपि च।
तीक्ष्णोष्णा कृमिहृल्लघ्वी पित्तलागर्भपातिनी॥

(भा.प्र.गुडू.व. 80, 81)

कलिहारी - दस्तावर, कुष्ठ, सूजन, अर्श, व्रण, बवासीर, अल्सर, उदरशूल रोग में लाभकारी होती है। यह किञ्चित् तीक्ष्ण, पित्तकारक, कृमिनाशक तथा गर्भपतन कारक होती है।

Kalihari is laxative, cures leprosy, dropsy, piles, ulcers, pain in the abdomen is slightly alkaline in taste, mitigates *kapha*, bitter, pungent, kills worms (bacteria etc.) easily digestible. aggravates *pitta* and causes abortion.

55. कमलगट्टा
Kamalgatta

संस्कृत – *Padmaksa* (पद्माक्षम्)
अंग्रेज़ी – Seeds of lotus plant
बोटेनिकल – *Nelumbo nucifera Geartn*



कमलगट्टा - Kamalgatta

कमलगट्टा तालाबों में होने वाला जलीय पौधा होता है। यह 12.5 से 25 से.मी. चौड़ी, हल्की हरी पत्तियों वाला होता है। यह अपने सफेद फूल के झड़ जाने पर बीज रूप में पैदा होता है और यही *कमलगट्टा* कहलाता है। यह भारत के सभी क्षेत्रों में पाया जाता है।

Kamalgatta (padmaksa) is a watery plant. It grows in ponds. Its leaves are 12.5 to 25 cm wide. The colour of the leaves is greenish. When its white flower is shed it turns into seeds and is called *kamalgatta*. It is found everywhere in India.

पद्मबीजं हिमं स्वादु कषायं तिक्तकं गुरु ॥
विष्टम्भि वृष्यं रूक्षश्च गर्भसंस्थापकं परम्।
कफवातकरं बल्यं ग्राहि पित्तस्त्रदाहनुत् ॥

(भा.प्र.आम्रा.व. 89, 90,)

पद्मबीज, पद्माक्ष, गालोड्य, पद्माक्षम्, पद्मकर्कटी – ये सभी कमलगट्टा के ही नाम हैं। *कमलगट्टा* सर्दियों में लाभदायक, स्वादिष्ट, कषाय, तिक्त, पाचन में भारी, कब्ज़कारक, कामोद्दीपक, रुक्ष एवं गर्भ स्थिरता में सहायक होता है। कफ, वातवर्धक, बलदायक, पित्त, रक्तदोष में लाभप्रद, उदरदाह नाशक, वीर्यवर्द्धक तथा बलगमजनित खाँसी एवं जलने की पीड़ा को कम करने वाला होता है।

Padmabija, padmaksa, galodya, padmakarkati are synonyms. Seeds of *padma* is cold in potency, sweet, astringent, bitter, heavy for digestion, causes constipation, is aphrodisiac,

creates dryness, good for maintaining pregnancy, aggravates *kapha* and *vata*, constipating, mitigates *pitta, rakta* and relieves burning sensation.



कमलगट्टा - Kamalgatta

56. कनैल
Kaner, Kanail

संस्कृत – *Karavira*
अंग्रेज़ी – Sweet scented oleander
बोटेनिकल – *Nerium indicum.*



कनैल - Kaner, Kanail

कनेर एक विषैला पेड़ है इसकी ऊँचाई 10 से 15 फुट होती है। इसके पुष्प को कनैल कहते हैं। इसके पत्ते 4 से 6 इंच लंबे और 1 से 2 से.मी. चौड़े होते हैं। औषधि के रूप में सफेद कनेर का प्रयोग ज्यादा होता है। यह सफेद, लाल, गुलाबी और पीला चार जाति का होता है। यह भारत के सभी क्षेत्रों में पाया जाता है। इसके मूल एवं मूल त्वक् का प्रयोग औषधि के रूप में करते हैं।

Kaner is a poisonous tree which is 10 to 15 feet high. Its flower is called *'Kanail'*. Its leaves are 4 to 6 inches long and 1 to 2 cm wide. White *Kaner* is mostly used as medicine. It is available in four colours, white, red, pink and yellow. Its root and skin of the root are used in the form of medicine. It is found all over India.

करवीर: श्वेतपुष्प: शतकुम्भोऽश्वमारक: ।
द्वितीयो रक्तपुष्पश्च चण्डातो लगुडस्तथा ॥
करवीरद्वयं तिक्तं कषायं कटुकञ्च तत् ।
व्रणलाघवकृन्नेत्रकोपकुष्ठव्रणापहम् ॥
वीर्योष्णं कृमिकण्डूघ्नं भक्षितं विषवन्मतम् ॥

(भा.प्र.गुडू.व. 82, 83, 84)

श्वेतपुष्प सहित कनेर शतकुम्भ तथा अश्वमारक कहलाता है तथा रक्तपुष्प सहित चण्डात तथा लगुड कहलाता है। दोनों कनेर (लाल तथा सफेद) तिक्त, कषाय कटुरसयुक्त, और व्रण में लघुता कारक होते हैं एवं ये दोनों नेत्रकोप (नेत्रसंबंधी रोग विशेष) कुष्ठ, व्रण, वीर्य में उष्ण, कृमि तथा खुजली को नष्ट करने वाले होते हैं। यह खा लेने पर विष की भाँति हानिकारक होते हैं।

Karvira with *rakta puṣpa* (white flower) is called satakumbha and asvamaraka. The second variety with *rakta puṣpa* (red flower) is called *caṇḍāta* and *laguda*. Both *karavira* are bitter, astringent and pungent, cures ulcers, ophthalmia, leprosy and wounds, hot in potency, cures worms (bacteria), itching and acts as poison when consumed.

57. कपूर
Kapur

संस्कृत – *Karpura (कर्पूरः)*
अंग्रेज़ी – Camphor
बोटेनिकल – *Cinnamomum camphora Nees*



कपूर - Kapur

कपूर शाखा-प्रशाखाओं से युक्त वृहत् वृक्ष होता है। इसकी त्वचा ऊपर से खुरदरी तथा भीतर चिकनी होती है। पत्ते 2 से 4 इंच लम्बे, पीताभ हरितवर्ण, पुष्प, पीताभ श्वेत, छोटे होते हैं। फल गहरे हरे मटर के समान गोल, गुच्छों में होते हैं। पकने पर काले हो जाते हैं। वृक्ष के सभी अङ्गों में कपूर की गन्ध रहती है। कपूर में अत्यधिक औषधीय गुण विद्यमान हैं। इसका प्रयोग वात, पित्त एवं कफ तीनों दोषों से उत्पन्न रोगों में किया जाता है। इसके निर्यास (गोंद/सत्त्व) का प्रयोग औषधार्थ करते हैं।

Kapur (Karpura) is large evergreen tree having multiple branches. Its texture is rough outside but smooth from inside. Its leaves are 2 to 4 inches long, fragrant and green in colour having yellowish tinge. Flowers are small white with yellowish tinge. Fruits are dark green and round like peas in bunches which become black when ripe. All parts of the tree have smell of camphor and it is full of medicinal properties. It is used for treating diseases caused of any of the three vat, *pitta* and *kapha dosas*. The resin/substances secreted from its tree has medicinal use.

पुंसि क्लीबे च कर्पूरः सिताभ्रो हिमवालुकः।
घनसारश्चन्द्रसंज्ञो हिमनामाऽपि स स्मृतः॥
कर्पूरः शीतलो वृष्यश्चक्षुष्यो लेखनो लघुः।
सुरभिर्मधुरस्तिक्तः कफपित्तविषापहः॥

दाहतृष्णाऽस्यवैरस्यमेदोदौर्गन्ध्यनाशन: ।
कर्पूरो द्विविध: प्रोक्त: पक्वापक्वप्रभेदत: ।
पक्वात्कर्पूरत: प्राहुरपक्वं गुणवत्तरम् ॥
चीनाकसंज्ञ: कर्पूर: कफक्षयकर: स्मृत: ।
कुष्ठकण्डूवमिहरस्तथा तिक्तरसश्च स: ॥

(भा.प्र.कर्पूर.व.2-4)

कपूर- शीतल, कामोद्दीपक पाचन में लाभप्रद, सुगन्धित, मधुर, कफ, पित्त, विष में लाभप्रद होता है। जलन की पीड़ा को शान्त करने वाला मुख की स्वाद हीनता, पसीने की दुर्गन्ध तथा जलने पर लाभप्रद होता है। दो प्रकार के *कपूर* कहे गए हैं – पक्व तथा अपक्व। पक्व *कपूर* अर्थात् पकाए गए से बेहतर अपक्व बताया गया है। चीनाक नामक कपूर कफ, क्षय, कुष्ठ, खुजली और उल्टी में लाभप्रद होता है परन्तु स्वाद में तिवत्तरस ही रहता है।

Karpura is cold in potency, aphrodisiac, scarificant, easy for digestion, fragrant, sweet bitter in taste, mitigates kapha, pitta and poison, cures burning sensation, bad taste in the mouth, obesity, bad smell of the body.

Karpura is of two kinds—pakva (cooked) and apakva (uncooked) the wise say that uncooked one is better than the cooked.

The variety known as Cinaka *karpura* brings about decrease of kapha, cures leprosy (and other skin diseases), itching and vomiting and is bitter in taste.

58. करेला
Karela, Karaita

संस्कृत – *Kāravellam (कारवेल्लम्)*
अंग्रेज़ी – Bitter gourd
बोटेनिकल – *Memordica chirantia linn*



करेला - Karela, Karaita

करेला एक औषधीय गुणों वाली लता (बेल) होती है। *करेले* की लता मृदुरोमश होती है। इसके पत्र लगभग गोलाकार 2.5 से 7.5 से.मी. चौड़े, आधार पर हृदयाकार, गहरे कटे हुए किनारों वाले हस्ताकार लता की तरह से फैले होते हैं एवं 5 से 7 भागों में विभक्त रहते हैं। इसके बीज 8 से 13 मि.मी लम्बे, चपटे तथा दोनों पृष्ठों पर खुरदरे होते हैं जो पकने पर लाल हो जाते हैं। *करेले* का रस एवं सब्ज़ी का सेवन मधुमेह के रोगियों के लिए विशेष लाभप्रद है। इसके अतिरिक्त पुराने त्वचा के रोगों में इसके पत्तों का लेप भी किया जाता है। इसके पंचांग (सभी अंग) औषध के रूप में प्रयोग किये जाते हैं।

The *karela* creeper is of medicinal importance soft and woolly nature. Its leaves are nearly circular 2.5 to 7.5 cm wide, heart shaped at the base and cut on the periphery in the form of hand and are divided into 5 to 7 parts. *Karela* seeds are 8 to 13 mm long and flat, rough on both sides. The seeds turn red on ripening. *Karela* in juice and cooked form is specially beneficial for the diabetes patients. Besides this for persistent and old skin diseases, its leaves are used for applications.

कारवेल्लं हिमं भेदि लघु तिक्तमवातलम् ॥
ज्वरपित्तकफास्त्रघ्नं पाण्डुमेहकृमीन् हरेत् ।
तद्गुणा कारवेल्ली स्याद्विशेषाद्दीपनी लघुः ॥

(भा.प्र.शा.व. 63, 64)

करेला- शीत में लाभकारी, तिक्त एवं वातल होता है। ज्वर, पित्त, कफ, रक्त के रोगों में लाभकारी होता है। यह पांडु, मधुमेह तथा पेट के कीड़ों का नाश करता है।

Kāravella is cold in potency, is purgative, easily digestible bitter in taste, but does not increase vata,cures fever, diseases of pitta kapha and rakta, anaemia, diabetes and worms. Karavalli is sindar in properties, kindles digestive fire especially and is easy for digestion.

59. कसौंदी
Kasaundi

संस्कृत – *कासमर्द:*
अंग्रेज़ी – Negro coffee
बोटेनिकल – *Cassia occidentalis*



कसौंदी- Kasaundi

कसौंदी एक औषधीय झाड़ीनुमा पौधा होता है। इसके पत्ते 3 से 4 इंच लम्बे तथा 0.5 से 1.5 इंच चौड़े अण्डाकार तथा भाले की तरह नुकीले होते हैं। इसकी फली 3 इंच लम्बी व 0.5 इंच चपटी और चिकनी होती है। इसकी शाखाएँ काली और बैंगनी होती हैं। इसके जड़, फल और फूल से कस्तूरी जैसी गंध आती है.। इसके पत्र, बीज, त्वक्, मूल तथा पञ्चाङ्ग सभी का औषधीय महत्त्व है।

Kasaundi (kasmard) is a diffuse undershrub, grown as a weed. Its leaves are 3 to 4 inches long, 0.5 to 1 inch wide, egg shaped and pointed as a spear. Its legume is 3 inches long and 0.5 inch wide, flat and smooth. Its branches are black and purple in colour. All its parts (root, flower fruit) smell like musk (kasturi). Its leaves, seeds, bark, root etc. all have medicinal importance.

कासमर्दोऽरिमर्दश्च कासारि: कर्कशस्तथा।
कालंकतक इत्युक्त: स च स्यात् कासमर्दक: ॥
कासमर्द: सुतिक्त: स्यान्मधुर: कफवातजित्।
विशेषत: पित्तहर: पाचन: कण्ठशोधन: ॥

(भा.प्र.शा.व. 43, 44)

अरिमर्द, कासारि, कर्कश, कालंकतक और *कासमर्दक* – ये पार्यय कासमर्द के हैं। *कासमर्द* रस में अति तिक्त-मधुर, कफ-वात को दूर करने वाला, विशेषत: पित्तशामक, पाचन और कण्ठ का शोधन करने वाला होता है।

Arimarda, Kasari, Karkasa, Kalankataka and *Kasamard* these are synonyms of *Kasamard*. *Kasamard* bitter in taste and sweet. It is useful in *pitta,* digestion and throat.

60. कठगूलर
Kathgūlar

संस्कृत – *काकोदुम्बरिका*
Kakodumbarika
अंग्रेज़ी – *Hairy fig.*
बोटेनिकल – Ficus hispida Linn



कठगूलर - Kathgūlar

कठगूलर का गुल्म या छोटा वृक्ष होता है जिसकी शाखाएँ रोमश होती हैं और यह वृक्ष गहरे नीले रंग का होता है। इसके पत्ते 4 से 9 इंच लम्बे, 4 इंच तक चौड़े, ऊपरी पृष्ठ पर खुरदुरे तथा निचले पृष्ठ पर रोमश होते हैं। इसके पत्ते से सफेद द्रव निकलता है। पत्ते छूने से खुजली होती है। इसके फल अंजीर की तरह गोल और पत्रहीन शाखाओं पर स्थित मञ्जरियों में गुच्छों में लगते हैं। ये पकने पर पीले हो जाते हैं। सामान्य दौर्बल्य में इसका पका फल खाना चाहिए। इसके फल, क्षीर, मूलत्वक् इत्यादि सभी अंग प्रयोज्य हैं।

Kathgular is a small tree. Its branches are hairy. The colour of the tree is of dark blue. The length of the leaves are 4 to 9 inches long and 4 inches wide. Its upper surface is rough but lower one is hairy. White substance is secreted from its leaves. Itching is caused on touching the leaves. Its fruits are circular in shape like those of anjeer (fig). These appear in bunches over leafless branches. These fruit became white when ripen. It should be taken in cooked form in general weakness. All its parts (fruit, latex, root bark) are used in medicine.

काकोदुम्बरिका फल्गू राजिफल्गु: शिवाटिका।
फल्गुनी फलसम्भारी मलयू: श्वित्रभेषजा।
काकोदुम्बरिका श्वित्रकण्डूकुष्ठव्रणापहा।
रक्तपित्तहरा शोफपाण्डुश्लेष्महरा च सा॥

(ध.नि., आम्रा. प.व., 81, 82)

फल्गु, राजिफल्गु, शिववाटिका, फल्गुनी, फल-सम्भारी, मलयू और श्वित्रभेषजा – ये *काकोदुम्बरिका* के पर्याय हैं। यह सफेद कुष्ठ, कण्डू, कुष्ठ, व्रण, रक्तपित्त, शोफ (सूजन), पाण्डु (पालिका) और बलगमी कफ का नाश करने वाला होता है।

Kathugular or *Kokodumbarika* has other synonyms like: *Phalgu, Rajifalgu, Sivatika, Falguni, Falsambhari, Malayu* and *Switrabhesaja.* It mitigates leucoderma, itching, leprosy, absess, rakata-pitta or bleeding, oedima (swelling), anaemia and cough with mucus.

61. कठजामुन
Kathjamun

संस्कृत – *Jala jambu (जलजम्बु)*
अंग्रेज़ी – Eugenia heyneana
बोटेनिकल – *Eugenia heynaecana*



कठजामुन - Kathjamun

कठजामुन एक औषधीय वृक्ष होता है जो 35 से 50 फीट तक ऊँचा तथा 12 फीट तक मोटा होता है। इसके पत्ते 7 से 10 से.मी. लम्बे होते हैं। इसके फूल हरिताभ सफेद होते हैं। इसके फल 0.5 से 1.5 इंच लम्बे, अण्डाकार कच्ची अवस्था में हरे तथा पकने पर गाढ़े नीले वर्ण के हो जाते हैं। यह कफ पैत्तिक विकारों में प्रयुक्त होता है। मधुमेह के रोग में भी यह अत्यन्त लाभप्रद है। इसके छाल, पत्ती, फल एवं गुठली का प्रयोग औषधि के रूप में किया जाता है।

Kathjamun (Jala Jambu) is a medicinal tree, which is 35 to 50 feet high and approximately 12 feet thick. Its leaves are 7 to 10 cm long. Its flowers are greenish white. Its fruits is eggshaped 0.5 to 1.5 inches long, which are green when raw and ripen into bluish colour. It is used to cure *kaph* and *pitta* dosa. It is also very effective in diabetes. Its bark, leaves, fruit and seeds all are used in medicine.

क्षुद्रजम्बू: सूक्ष्मपत्रा नादेयी जलजम्बुका।
जम्बू: संग्राहिणी रूक्षा कफपित्तास्त्रदाहजित्॥

(भा.प्र.आम्रा.व. 70)

क्षुद्रजम्बू, सूक्ष्मपत्रा, नादेयी तथा लजम्बुका ये सब जामुन के संस्कृत नाम हैं। छोटी जामुन संग्राही, रूक्ष एवं कफ, पित्त तथा रक्त विकार तथा दाह को दूर करने वाली होती है।

Jalajambu is constipating, causes dryness, mitigates kapha, pitta, rakta vikara and burning sensation.

62. केवड़ा
Kevada

संस्कृत – *Ketaka* (केतक:)
अंग्रेज़ी – Screw pine
बोटेनिकल – *Pandanus odoratissiumus*



केवडा - Kevada

केवड़ा औषधीय वृक्ष होता है। यह सफेद और पीला दो प्रकार का होता है। यह 10 से 15 फीट ऊँचा होता है। इसके पत्ते छत्र की तरह होते हैं। इसके फूल सुगन्धित होते हैं। इसके फल आयताकार या गोलाकार 4 से 10 इंच लम्बे नारंगी रंग के होते हैं। वर्षाऋतु में पुष्प और ग्रीष्मऋतु में फल आते हैं। पेड़ लगने के बाद 3 से 4 वर्षों में फूल देने लगता है। यह त्रिदोषजन्य विकारों विशेषत: कफपित्तजन्य रोगों में प्रयुक्त होता है।

Kevada (ketaka) is a medicinal tree. It is of two types: yellow and white. It is 10 to 15 feet tall. Its leaves form into a canopy and flowers are fragrant. Its fruits are oblong or circular in shape, orange in colour and measure 4 to 10 inches in size. It flowers during rainy season and bears fruit during summers. The tree flowers after it is 3 to 4 years old. It is useful for the diseases related to the three doshas specially kaph and pitta.

केतक: कटुक: स्वादुर्लघुस्तिक्त: कफापह:।
उष्णा तिक्तरसा ज्ञेया चक्षुष्या हेमकेतकी॥

(भा.प्र.पु.व. 43)

केवड़ा, कटुक, स्वादिष्ट, तिक्त, कफ एवं नेत्र के रोग में लाभकारी तथा उष्ण एवं तिक्त होता है।

Ketaka is pungent, sweet, bitter, easily digestible, mitigates kapha, Hemaketaki is hot in potency, bitter in taste and good for the eyes (vision).

63. खजूर
Khajura

संस्कृत – *Kharjuri* (खर्जूरी)
अंग्रेज़ी – Date Palm fruit
बोटेनिकल – *Phoenix sylvestris*



खजूर - Khajaura

खजूर एक लाभदायक विशाल वृक्ष होता है। यह 35 से 40 फुट ऊँचा होता है। इसके पत्ते 2 फीट तक लम्बे और नुकीले हरित वर्ण के होते हैं। इसके फल 2 से 3 से.मी. लम्बे और गोलाकार कच्ची अवस्था में हरे रंग के तथा पकने पर रक्ताभ वर्ण के होते हैं। इसकी पत्तियों, फल, बीज तथा डंठल का औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह भारत में सभी जगह पाया जाता है।

Khajoor (Kharjuri) is a very large and useful tree. It is 50 to 40 feet high. Its leaves are 2 feet long, pointed and are green in colour. Its fruit is 2 to 3 cm long, round, green when raw turn into red when ripe. All the parts of Khajoor (leaf, fruit, stem, seed) are used in medicine. It is found all over India.

खर्जूरीत्रितयं शीतं मधुरं रसपाकयो: ॥
स्निग्धं रुचिकरं हृद्यं क्षतक्षयहरं गुरु: ।
तर्पणं रक्तपित्तघ्नं पुष्टिविष्टम्भशुक्रदम् ॥
कोष्ठमारुतहृद् बल्यं वान्तिवातकफापहम् ।
ज्वरातिसारक्षुत्तृष्णाकासश्वासनिवारकम् ॥
मदमूर्च्छामरुत्पित्तमद्योद्भूतगदान्तकृत् ।
महतीभ्यां गुणैरल्पा स्वल्पखर्जूरिका स्मृता ॥
खर्जूरीतरुतोयं तु मदपित्तकरं भवेत् ।
वातश्लेष्महरं रुच्यं दीपनं बलशुक्रकृत् ॥

सुलेमानी तु मृदुला दलहीनफला च सा।
सुलेमानी श्रमभ्रान्तिदाहमूर्च्छाऽस्रपित्तहृत्॥
(भा.प्र.आम्रा.व. 117, 118, 119, 120, 121, 122)

खजूर तीन प्रकार के होते हैं। यह शीत, मधुर और रस युक्त होता है। यह स्निग्ध, रुचिकर, हृदय रोग एवं क्षय रोग में अत्यन्त लाभकारी है। यह रक्त, पित्त रोगनाशक पौष्टिक एवं शुक्रवर्द्धक होता है। वात, पित्त, कफ, ज्वर, अतिसार, भूख, प्यास, दमा तथा श्वास रोगों का निवारक होता है। मिर्गी, उदरदाह तथा रक्तदोष के रोगों में भी लाभकारी होता है। मद्यपान से उद्भूत रोगों को भी दूर करता है।

छोटे आकार का खजूर बड़े खजूर से कुछ कम लाभदायक होता है। खर्जूर तरुतोय मद्यपान जनित रोग तथा पित्तवर्धक होता है, कफ तथा वातजनित रोगों को कम करने वाला स्वादवर्धक, 'पाचनशक्ति' को बढ़ाने वाला, बल तथा शुक्रवर्धक होता है। सुलेमानी खर्जूरी कोमल, दलहीन फल वाली, श्रम, भ्रान्ति, जलन, मूर्च्छा, रक्तविकार तथा पित्तविकार को दूर करने वाली होती है।

Kharjura tritaya—first three kinds—are cold in potency, sweet in taste and after digestion, unctuous, helps taste, good for heart, cures injury to lungs and consumption, hard for digestion, gives satisfaction, cures bleeding diseases, bestows nourishment, strength and semen, mitigates vāta in the alimentary tract, mitigates vomiting, vāta and kapha, cures fever, diarrhoea, hunger, thirst, cough, dyspnoea, intoxication, fainting, diseases of vāta and pitta, intoxication and other diseases caused by drinking wine.

Small sized kharjura are slightly less in properties than the bigger kind. Kharjuritarutoya (toddy) causes intoxication and aggravation of pitta, mitigates vata and caugh, helps taste, increases digestive capacity, strength and semen. Sulemani kharjuri cures fatigue, giddiness, burning sensation, fainting and diseases of rakta and pitta.

64. खर्बूजा
Kharbuja

संस्कृत – *Kharbuja (खर्बूजम्)*
अंग्रेज़ी – Melon
बोटेनिकल – *Cucumis melo*



खर्बूज- Kharbuja

खर्बूजा एक औषधीय गुणों से युक्त पौष्टिक फल वाली लता (बेल) होती है। पत्तियाँ पञ्चकोणीय गोलाकार होती हैं। इसके पुष्प छोटे पीत वर्ण के होते हैं। इसके फल गोलाकार, अण्डाकार, पकने पर हरिताभ पीतवर्ण के तथा सुगन्धित होते हैं। इसमें शरीर को सशक्त बनाने वाले तत्त्व पाए जाते हैं। इसके फल बीज एवं मूल सभी प्रयोज्य होते हैं।

Kharbuja is a creeper full of medicinal properties. It has circular leaves with five corners. Its fruits are nutritious. Its flowers are small and yellow in colour and its fruits are spherical and egg shaped. These are fragrant and became greenish and yellowish when ripe. It has nutrients which energise the body. Its fruits, seeds and root all parts are useful.

खर्बूजं मूत्रलं बल्यं कोष्ठशुद्धिकरं गुरु।
स्निग्धं स्वादुतरं शीतं वृष्यं पित्तानिलापहम्॥
तेषु यच्चाम्लमधुरं सक्षारञ्च रसाद्भवेत्।
रक्तपित्तकरं तत्तु मूत्रकृच्छ्रकरं परम्॥

(भा.प्र.आम्रा.व. 45, 46)

खर्बूज मूत्रवर्धक, पौष्टिक तथा उदरशुद्धिकर होता है। यह स्निग्ध स्वादिष्ट, शीतल, पित्त, अग्निनाशक एवं पाचन में भारी होता है। यह मूत्र-कृच्छ्र रोग में भी लाभदायक होता है। जो फल अम्लमधुर तथा क्षारीय स्वाद वाला होता है। वह रक्त तथा पित्त को बढ़ाने वाला तथा मूत्रक्रिया में बाधक होता है।

Kharbuja is diuretic, strengthening, cleanses the alimentary tract, hard for digestion, unctuous, very sweet, cold in potency, aphrodisiac, mitigates pitta and vāta, that which is sour, sweet and slightly alkaline in taste, produces bleeding diseases, and dysuria especially.

65. खस
Khas

संस्कृत – *Virana, usira*
(वीरणम्-उशीरम्)
अंग्रेज़ी – Cuscus grass
बोटेनिकल – *Vetiveria zizanoids*



खस - Khas

खस घासनुमा पौधा होता है। यह लगभग 5 से 6 फुट ऊँचा दृढ़, तृणजातीय बहुवर्षायु होता है। इसके पौधे गुच्छों में तथा समूहबद्ध होते हैं। खस के पत्ते 1 से 2 फीट लम्बे और 3 इंच तक चौड़े होते हैं। इसके तने 2 से 5 फीट ऊँचे तथा खुशबूदार होते हैं। इसमें हरे, पीले और लाल रंगे फूल होते हैं। जिसका डंठल 4 से 12 इंच लम्बा होता है। इसकी जड़ ज़मीन मे 2 फुट से भी ज़्यादा गहराई तक जाती है। खस पाचनशक्ति की वृद्धि करती है।

Khas (virana) is a grass like plant. It is about 5 to 6 feet tall, firm and belongs to family of grass. The plants are long living and grow in clusters. *Khas* leaves are 1 to 2 feet long and up to 3 inches wide. Its trunk is 2 to 5 feet tall and fragrant. The flowers are green, yellow and red. It has 4 to 12 inches long shoots. Its roots grows downward up to 2 feet deep. *Khas* is digestive.

वीरणं पाचनं शीतं वान्तिहृल्लघु तिक्तकम् ॥
स्तम्भनं ज्वरनुद् भ्रान्तिमदजित्कफपित्तहृत् ।
तृष्णाऽस्त्रविषवीसर्पकृच्छ्रदाहव्रणापहम् ॥

(भा.प्र.,कर्पूर.व. 84, 85)

खस, पाचन क्रिया शीत और उल्टी में लाभप्रद होता है। यह ज्वर, भ्रान्ति, मद, कफ तथा पित्त रोगों को दूर करने वाला होता है। प्यास, रक्तदोष, विष, दाद, मूत्रदोष, जलन तथा व्रणादि को दूर करने वाला होता है।

Virana is digestive, cold in potency, cures, vomiting, easily digestible, bitter in taste, constipating, cures fever, giddiness, intoxication, mitigates kapha and pitta, cures thirst, bleeding, poison, herpes, dysuria, burning sensation and ulcers.

66. ककोड, खेखसा
Khekhasa, Kakodā

संस्कृत – *Karkoti (ककोटी)*
अंग्रेज़ी – Spine Gourd.
बोटेनिकल – *Momordica diocia Roxb.*



ककोडा - Khekhasa, Kakoda

ककोडा चिकनी, कंदिल मूलयुक्त तथा दुर्गन्धयुक्त बारहमासी आरोही लता है जो अधिकतर पहाड़ी ज़मीन पर पैदा होती है। *ककोड़ा* कच्चा होने पर हरे रंग का तथा पकने पर लाल रंग का होता है। इसके फल के ऊपर कोमल कांटे होते हैं। इसके बीज अण्डाकार, रक्त वर्ण की मज्जा द्वारा ढके होते हैं। इसके फलों का प्रयोग साग के रूप में किया जाता है इसमें गाजर जैसी बहुवर्षायु जड़ होती है जिसका प्रयोग मस्तिष्क विकार, रक्तार्श, ग्रन्थि तथा मधुमेह की चिकित्सा में किया जाता है। इसकी जड़ और कच्चे फल का प्रयोग औषधि में किया जाता है।

Kakodā (Karkote) is a perennial, smooth and odorous creeper (moving upwards), usually grow in hilly areas. Its root is tuberous. *Kakodā* is green when raw and turns into red when ripe. There are soft thorns on its fruit. Its seeds are egg shaped which remain covered with red coloured pulp. Its fruit is used as cooked vegetable. It has a long living root (similar to carrot) which is used to cure mental ailment, thyroid, piles and diabetes. Its root and raw fruit are used in medicines.

कर्कोटी मलहृत्कुष्ठहृल्लापारुचिनाशिनी।
श्वासकासज्वरान्हन्ति कटुपाका च दीपनी॥

(भा.प्र.शा.व. 86)

ककोडा - कब्ज़निवारक, कुष्ठनिवारक एवं अन्य त्वचा संबंधित रोगों में तथा साँस फूलने की स्थिति में लाभकारी होता है। श्वास, कास तथा ज्वर नाशक होता है। यह जठराग्नि को बढ़ाता है।

Karkoti expels the faeces, relieves leprosy (and other skin diseases), nausea, loss of appetite, dyspnoea, cough, fever, becomes pungent after digestion and increases digestive fire.

67. कुश
Kuśa, Dharbh, Kuśaghas

संस्कृत – *Kuśa and Darbha*
[कुशः क्षुरपत्र (दर्भः) च]
अंग्रेज़ी – Halfa Grass
बोटेनिकल – *Desmotycha bipinnata Stapf*



कुश - Kuśa, Dharbh, Kusaghas

कुश एक औषधीय गुणों से युक्त वनस्पति होती है। इसकी ऊँचाई 1 से 3 फुट होती है। इसका फूल सफेद और 6 से 18 इंच लम्बा होता है। इसकी जड़ का प्रयोग औषधि के रूप में किया जाता है। यह बहुधा बंजर ज़मीन में पैदा होती है।

Kusa (Kusa and Darbha) is a plant having medicinal properties. Its height is 1 to 3 feet. Its flower is white and 6 to 18 inches long. Its root is used in medicines. It generally grows in barren land.

दर्भद्वयं त्रिदोषघ्नं मधुरं तुवरं हिमम्।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीतृष्णाबस्तिरुक्प्रदरास्रजित्॥

(भा.प्र.गुडू.व. 166)

कुश के दोनों प्रकार त्रिदोषनाशक, मधुर, वीर्य में शीतल, मूत्र-कृच्छ्र, गुर्दे की पथरी, प्यास रक्त दोषों को हरने वाला एवं मासिक धर्म की अनियमितताओं को दूर करने वाला होता है।

Both kinds of *darbha* mitigate all the three *dosas*, sweet, astringent, in taste, cold in potency, cure dysuria and renal calculus, thirst, pain of bladder and menorrhagia.

68. लहसुन
Lahasun, Lasun

संस्कृत – *Laśuna (लशुन:)*
अंग्रेज़ी – Garlic
बोटेनिकल – *Allium sativum*



लहसुन - Lahasun, Lasun

लहसुन शाकीय पौधा होता है। यह भूमिगत संयुक्त छिल्कों से युक्त होता है। लहसुन में कई सारी कलियाँ होती हैं। यह पौधा 30 से 45 से.मी. तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते पतले, चपटे, सीधे, लम्बे होते हैं। यह औषधीय गुणों वाला होता है और इसका प्रयोग अनेक व्याधियों की चिकित्सा में किया जाता है। लहसुन के कन्द एवं तेल का प्रयोग औषधार्थ किया जाता है।

Lehsun is a perennial herb, falls in the category of vegetables, bulbs covered with thin skin grow under the soil. Its leaves are linear, flat and narrow. Its bulbs are short, compound and consist of several smaller bulbs called cloves. It is used to cure a number of diseases. The bulb and oil of *lehsun* is used in medicine.

यदाऽमृतं वैनतेयो जहार सुरसत्तमात्।
तदा ततोऽपतद् बिन्दु: स रसोनोऽभवद् भुवि॥
पञ्चभिश्च रसैर्युक्तो रसेनाम्लेन वर्जित:।
तस्माद्रसोन इत्युक्तो द्रव्याणां गुणवेदिभि:॥
कटुकश्चापि मूलेषु तिक्त: पत्रेषु संस्थित:।
नाले कषाय उद्दिष्टो नालाग्रे लवण: स्मृता:॥
बीजे तु मधुर: प्रोक्तो रसस्तद्गुणवेदिभि:॥

(भा.प्र.ह.व. 218, 219, 220)

जब वनितापुत्र (वैनतेय) गरुड़ ने देवाधिराज इन्द्र से अमृत का घट छीन लिया तो उस अमृत की एक बूँद पृथ्वी पर गिर कर 'रसोन' नाम से विश्वप्रसिद्ध हुई इसके गुणों के पारखियों ने इसके गुणों के कारण ही इसे 'रसोन' नाम दिया क्योंकि इसमें अम्ल को छोड़कर अन्य पाँचों रस विद्यमान हैं। *लहसुन* की जड़ कटु एवं पत्ते तिक्त होते हैं। इसकी नाल कषाय (कसैला) नालग्र भाग नमकीन तथा बीज भाग मधुर कहा गया है इसको अनेक गुणों वाला कहा गया है।

When Vainateya (garuda) snatched away the pot of nectar from the Lord of the suras, Indra) the drop of nectar that fell on the ground became famous as rasona in the world. It is called rasona by those who know the qualities of substances well, because it has five tastes and devoid of one — the sour taste.

Pungent taste is present in its roots, bitter in its leaves, astringent in its tubes (shoots) salt in its tip of the tubes (shoots) and sweet in its seeds — say the wise.

69. लाजवन्ती
Lajavanti

संस्कृत – *Lajjalu (लज्जालु:)*
अंग्रेज़ी – Sensitive Plants
बोटेनिकल – *Mimosa pudica*



लाजवन्ती - Lajavanti

लाजवन्ती एक गुणकारी वनस्पति होती है। यह गर्म प्रदेशों में अधिक पाई जाती है। इसकी ऊँचाई 30 से 60 से.मी. होती है। इसके पत्ते छोटे-छोटे होते हैं। इसके फूलों का रंग हल्का बैंगनी होता है। इस फूल के ऊपर 4 से 9 से.मी लम्बी गुलाबी रंग की फली लगी होती है। जिसमें 3 से 5 बीज होते हैं। यह पौधा छूने से सिकुड़ जाता है। इसकी जड़, पत्ती, तना, फूल और बीज सभी में औषधीय गुण होते हैं। यह भारत में सभी क्षेत्रों में पाया जाता है।

Lajavanti (lajjalu) is a useful plant which is mostly found in hot regions. Its height is 30 to 60 cm. It has small leaves. The colour of its flowers is purple. On the flower there is 4 to 9 cm long pink coloured legume which has three to five seeds. This plant gets shrunk when touched. Its roots, leaves, stem and seeds – all parts have medicinal importance. It is found all over India.

लज्जालु: स्याच्छमीपत्रा समङ्गा जलकारिका।
रक्तपादी नमस्कारी नाम्ना खदिरकेत्यपि ॥
लज्जालु: शीतला तिक्ता कषाया कफपित्तजित्।
रक्तपित्तमतीसारं योनिरोगान् विनाशयेत् ॥

(भा.प्र.गुडू.व. 272, 273)

लज्जालु, शमीपत्र, समङ्गा, जलकारिका, रक्तपदी, नमस्कारी तथा *खदिरका* – ये सभी *लाजवन्ती* के अन्य नाम हैं। लाजवन्ती शीतल, तिक्त, कषाय, स्वादु होती है। यह कफ, पित्त, रक्तदोष, अतिसार तथा योनि-रोगों का नाश करने वाली होती है।

Lajjalu, smaipatra, smanga, jalakarika, raktpadi, namaskari and khadiraka are its names. *Lajjalu* is cold in potency, bitter, astringent, mitigates kapha and pitta, cures bleeding disease, diarrhoea and diseases of vagina.

70. माधवी
Madhavi

संस्कृत – *Madhavi (माधवी)*
अंग्रेज़ी – Clustered hiptage
बोटेनिकल – *Hiptage bengalensis*



माधवी - Madhavi

माधवी एक औषधीय लता है जो जंगलों तथा बाग-बगीचों में भी पाई जाती है। यह एक दीर्घ आरोही लता है जो धूसर वर्ण की होती है।इसकी पत्तियाँ नुकीली तथा 20 से.मी. तक लम्बी होती हैं। इसके फूल गुच्छों में होते हैं। एक ही गुच्छे में 10 से 30 फूल तक हो जाते हैं। फूल पीले, सफेद और गुलाबी रंग वाले होते हैं। इसके फल 2 से 5 से.मी. लम्बे अण्डाकार होते हैं। इसकी छाल एवं पत्तों का औषधि में प्रयोग किया जाता है। यह भारत में सभी जगह मिलती है।

Madhavi is a medicinal creeper. It is wild plant and grows in garden plant also. It is a large climbing creeper with brownish bark. The leaves of plant are pointed and about 20 cm long. It has white, yellow or pink flowers which are in bunches and one bunch consists of 10 to 30 flowers. Its fruits are 2 to 5 cm long and are eggshaped. Its bark and leaves are used in medicine. It is found everywhere in India.

अतिमुक्तो विमुक्तश्च कामुको भ्रमरोत्सव: ॥
माधवी मधुरा शीता लघ्वी दोषत्रयापहा ॥

(भा.प्र.पु.व. 41)

अतिमुक्त, विमुक्त, कामुक तथा *भ्रमरोत्सव* – *माधवी* के ही नाम हैं। *माधवी*, मधुर, शीतल, पाचन में हल्की तथा त्रिदोषों को हरने वाली होती है।

Atimukta, vimukta, kamuka and *bharmarotsava* are its names. *Madhavi* is sweet, cold in potency, easy for digestion and mitigates all three dosas.

71. महुआ
Mahua

संस्कृत – *Madhuka (मधूक:)*
अंग्रेज़ी – Indian butter tree
बोटेनिकल – *Madhuca indica*



महुआ- Mahua

महुआ एक औषधीय गुणों वाला वृक्ष होता है। यह वृक्ष 12 से 15 मी. तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते 5 से 7 इंच लम्बे तथा अण्डाकार कुछ आयताकार, नुकीली शिराओं से युक्त होते हैं। इसके फूल गुच्छों में होते हैं। जो गूदेदार और मधुर होते हैं। इसके छाल, फूल और तेल में औषधीय गुण होते हैं। यह भारत में सभी जगह पाया जाता है।

Mahua is a medicinal tree. It is 12 to 15 m high. Its leaves are 5 to 7 inches long, eggshaped samewhat oblong, having pointed ends. Its flowers form panicles. They are sweet and pulpy. Its bark, flower and oil have medicinal properties. It is found everywhere in India.

मधूकपुष्पं मधुरं शीतलं गुरु बृंहणम्।
बलशुक्रकरं प्रोक्तं वातपित्तविनाशनम्॥
फलं शीतं गुरु स्वादु शुक्रलं वातपित्तनुत्।
अहृद्यं हन्ति तृष्णाऽस्रदाहश्वासक्षतक्षयान्॥

(भा.प्र.,आम्रा.व. 96, 97)

महुआ के फूल को मधुर, शीतल, पचने में भारी, बलवर्द्धक, शुक्र (वीर्य) वर्द्धक एवं वात, पित्तनाशक बताया गया है। महुआ का फल शीत, पाचन में भारी, स्वादु, शुक्रवर्द्धक, वात एवं पित्त में लाभप्रद होता है। हृदय के लिए अनुपयोगी, तृष्णा को दूर करने वाला, रक्त व्याधियों के लिए उपयोगी, जलन को दूर करने वाला, फेफड़ों के रोगों तथा क्षय को दूर करने वाला है।

Flowers of *madhuka* are sweet, cold in potency heavy for digestion, sweet, increases semen, mitigates vāta and pitta, not good to the heart, cures thirst, diseases of blood, burning sensation, dyspnoea, injury to lungs and consumption.

72. मकोय
Makoy

संस्कृत – *Kakamaci (काकमाची)*
अंग्रेज़ी – Garden nightshade
बोटेनिकल – *Solanum nigrum*



मकोय- Makoy

मकोय छोटा शाकीय पौधा होता है, इसकी ऊँचाई 1 से 1½ फीट होती है। इसकी पत्तियाँ 2 से 3 से.मी. लम्बी तथा 1 से 1½ से.मी. चौड़ी होती हैं। फूल छोटे सफेद रंग के होते हैं जो गुच्छों में खिलते हैं। इसके फल छोटे अपरिक्व अवस्था में हरे रंग के तथा पकने पर नीले या बैंगनी रंग के हो जाते हैं। यह भारत के सभी क्षेत्रों में पाया जाता है।

Makoy is a small vegetable plant. It is 1-1½ feet high. Its leaves are 2-3 cm long and 1-1½ cm wide. Its flowers are small and white. They blossom in bunches. Its fruit is green when raw but turns blue or violet when ripe. It is found everywhere in India.

काकमाची ध्वाङ्क्षमाची काकाह्वा चैव वायसी।
काकमाची त्रिदोषघ्नी स्निग्धोष्णा स्वरशुक्रदा॥
तिक्ता रसायनी शोथकुष्ठार्शोज्वरमेहजित्।
कटुर्नेत्रहिता हिक्काच्छर्दिहृद्रोगनाशिनी॥

(भा.प्र.गुडू.व. 246, 247)

काकमाची, ध्वाङ्क्षमाची, काकाह्वा और वायसी ये सभी नाम मकोय के हैं। मकोय तिक्त तथा कटुरसयुक्त, त्रिदोषनाशक, स्निग्ध, उष्ण, स्वर को ठीक करने वाली, शुक्रजनन, रसायन, नेत्र के लिए हितकर एवं शोथ (सूजन), कुष्ठ, अर्श, बवासीर, ज्वर, प्रमेह, हिक्का, वमन तथा हृद्रोग को दूर करने वाली होती है।

*kakamachi, dhyankshamachi, kakahva (*all the names of Kaka-crow) and *vayasi* are synonyms. *Kakamaci* mitigates all the three dosas, is unctuous, hot in potency, pungent both in taste and after digestion, mitigates kapha, produces vomiting, bitter, cures dropsy, piles, leucoderma and leprosy.

73. मरिच (काली मरिच)
Marich

संस्कृत – *मरिच*
अंग्रेज़ी – Black pepper
बोटेनिकल – *Piper nigrum*



मरिच (काली मरिच)- Marich

काली मिर्च एक लता होती है। इसकी पत्तियाँ चिकनी, अण्डाकार, 10 से 18 से.मी. लम्बी तथा 5 से 12 से.मी. चौड़ी होती हैं। इसके फल हरे रंग के छोटे गोल होते हैं जो सूखने पर काले (काली मिर्च) हो जाते हैं। इसी फल में ही अनेकानेक औषधीय गुण होते हैं। यह भारत के दक्षिणी क्षेत्र में पाया जाता है।

Marich (black pepper) is a creeper. Its leaves are smooth, egg shaped, 10 to 18 cm long and 5 to 12 cm wide. Its fruits are small in size and green in colour which turn into black pepper when dried. It has various medicinal qualities. It is found in South India.

नात्युष्णं नातिशीतं च वीर्यतो मरिचं सितम्॥
गुणवन्मरिचेभ्यश्च चक्षुष्यं च विशेषत:॥

(सुश्रु. सं., सूत्रस्थान 46)

मरिच न अति उष्ण न अति शीतल होने के साथ वीर्यवर्द्धक होती है। *मरिच* आँखों के लिए विशेष लाभकारी होती है।

Marica is neither too hot nor too cold (moderate), and enhances semen. Marica is superior to other peppers particularly in beneficial properties for eyes.

74. मौलसिरी
Maulsiri

संस्कृत – *Bakula (बकुल:)*
अंग्रेज़ी – Bullet wood tree
बोटेनिकल – *Mimuspos elangi*





मौलसिरी- Maulsiri

मौलसिरी मध्यम आकार का वृक्ष है। यह 15 से 20 फुट ऊँचा होता है। इसका तना सीधा और अधिक शाखाओं वाला होता है। इसके पत्ते 5 से10 से.मी. लम्बे तथा नुकीले अग्रभाग वाले होते हैं। इसके पुष्प अत्यन्त सुगन्धित होते हैं। इसका फल नारंगी रंग का जो पकने पर पीत वर्ण का हो जाता है। यह भारत में सभी क्षेत्रों में पाया जाता है।

Maulsiri is a medium sized tree. It is 15 to 20 feet high. Its trunk is straight and has multiple branches. Its flowers are fragrant, leaves are 5 to 10 cm long and pointed. Its fruit is orange in colour and becomes yellow when ripe. It is found all over India.

बकुलो मधुगन्धश्च सिंहकेसरकस्तथा।
बकुलस्तुवरोऽनुष्ण: कटुपाकरसो गुरु: ॥
कफपित्तविषश्वित्रकृमिदन्तगदापह: ॥

(भा.प्र.,पु.व. 33)

मौलसिरी के संस्कृत नाम – बकुल, मधुगन्ध, सिंहकेसरक ये सब हैं। *मौलसिरी*- कषाय रसयुक्त, किञ्चित् उष्ण, पाक तथा रस में कटु, गुरु एवं कफ, पित्त, विष, श्वेतकुष्ठ, कृमि एवं दाँतों के रोगों को दूर करने वाला है।

Maulsiri is called *bakul, madhugandh and simhakesarkh* also. It is astringent, not hot (slightly hot) in potency, pungent after digestion, heavy (not easily digestible) mitigates *kapha* and *pitta*, cures poison, leucoderma and deseases of teeth.

75. मेथी
Methi

संस्कृत – *Methika (मेथिका)*
अंग्रेज़ी – Fenugreek seeds
बोटेनिकल – *Trigonella foenum graeccum*



मेथी - Methi

मेथी एक प्रकार का शाकीय (शाक) पौधा है। यह एक फुट तक लम्बा होता है। इसकी पत्तियों का उपयोग भोजन में किया जाता है। मेथी अपने पौधे का बीज होता है। इसके पत्ते छोटे और गोल होते हैं। यह भारत में सभी जगह पाया जाता है। इसके पत्तों एवं बीजों का प्रयोग औषधि के रूप में किया जाता है।

Methi is a vegetable plant. It is approximately one feet long. Its leaves are used in food. *Methi* is the seeds of its plants, its leaves are short and round. It is found in every part of India. Its leaves and seeds are used in medicine.

मेथिका वातशमनी श्लेष्मघ्नी ज्वरनाशिनी।
तत: स्वल्पगुणावन्या वाजिनां सा तु पूजिता॥

(भा.प्र.ह.व. 95)

मेथी वायु का शमन करने वाली, बलगमी कफ को दूर करने वाली, तथा ज्वर को नष्ट करने वाली है और वनमेथी, मेथी की अपेक्षा कम गुण वाली होती है किन्तु वह घोड़ों के लिए अत्यन्त उत्तम (हितकर) होती है।

Methika mitigates *vāta* and *kapha* with mucus, cures fever vanamethika is slightly less in properties than methika, it is best for horses.

76. मोगरा (मोतिया, बेला)
Mogra, Motiya, Bela

संस्कृत – *Mallika (मल्लिका)*
अंग्रेज़ी – Jasmine
बोटेनिकल – *Jasminum sambac Ait*



मोगरा (मोतिया, बेला) - Mogra, Motiya, Bela

मोगरा झाड़ीदार पुष्पीय पौधा होता है। यह 2-4 फुट ऊँचा होता है। प्राय: यह भारत के सभी क्षेत्रों में पाया जाता है। इसका पुष्प सुगंधित, सफेद रंग का होता है। इसकी पत्तियाँ हरे रंग की छोटी और गोल होती हैं। इसका फल ½ इंच लम्बा और इसके बीज काले रंग के होते हैं। इसकी जड़, पत्ते एवं पुष्प का औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है।

Mogra is bushy flower. It plant is 2 to 4 feet high. It is found in all the parts of India. This flower is white in colour and has pleasant fragrance. Its leaves are short round and green coloured. Its fruit is ½ inch long and seeds are black in colour. Its root, leaves and flowers are used in medicine.

मल्लिकोष्णा लघुर्वृष्या तिक्ता च कटुका हरेत्।
वातपित्तास्यदृग्व्याधिकुष्ठारुचिविषव्रणान्॥

(भा.प्र.पु.व. 40)

मल्लिका उष्ण, लघु, वृष्य, तिक्त तथा कटुरसयुक्त एवं वात, पित्त, मुख-नेत्र-सम्बन्धी रोग, कुष्ठ, अरुचि, विष तथा व्रण को दूर करने वाली है।

Mallika is hot in potency, easily digestible, bitter, pungent, aphrodisiac, mitigates *vāta-pitta*, cures diseases of the mouth and eyes, leprosy, loss of taste, poison and ulcers.

77. मोरपंखी
Morpankhi

संस्कृत – *Mayurasikha*
(मयूर शिखा)
अंग्रेज़ी – Oriental Thuja
बोटेनिकल – *Celosia cristata*



मोरपंखी - Morpankhi

मोरपंखी बारहमासी सुन्दर वनस्पति होती है। इसकी ऊँचाई 20 से 45 से.मी. होती है। इसके पत्ते हरे रंग के गुच्छेदार 10 से 15 से.मी. लम्बे होते हैं। इस पौधे में एक ही फूल होता है। *मोरपंखी* का सभी भाग औषधी में प्रयोग किया जाता है। यह भारत में सभी जगह पाया जाता है।

Morpankhi (mayurasikha) is a perennial fern. It is 20 to 45 cm high. Its leaves are green which form panicle. These are 10 to 15 cm long. This plant has only one flower. All the parts of morpankhi are used in medicine. It is found all over India.

मयूराह्वशिखा प्रोक्ता सहस्त्राहिर्मधुच्छदा।
नीलकण्ठशिखा लघ्वी पित्तश्लेष्मातिसारजित्॥

(भा.प्र.गुडू.व. 309)

मोरपंखी, मयूरशिखा, सहस्राही, मधुच्छदा तथा *नीलकण्ठशिखा* ये सभी *मोरपंखी* के ही नाम हैं। पाचन में हल्की (लघ्वी) पित्त, श्लेष्म (बलगम खाँसी), अतिसार रोगों को हरने वाली होती है।

Mayurshikha, sahasrahi, madhuchada and neelkanthshikha are its names. *Nilakanthasikha* is easily digestible, mitigates *pitta* and slesma *(kapha* with mucus*)* and cure diarrhoea.

78. मोथा, नागरमोथा
Motha, Nagara Musta

संस्कृत – *Musta/ Nagar Musta*
(मुस्तकम्/नागरमुस्तकम्)
अंग्रेज़ी – Nut grass
बोटेनिकल – *Cyperus rotundus*
Cyperus scariosus



मोथा, नागरमोथा -
Motha, Nagara Musta

नागरमोथा भारत में नदी-नहर, बम्बी के किनारे की नमी वाली भूमि में पाया जाता है। यह एक झाड़ीनुमा पौधा होता है। इसकी पत्तियाँ घास की तरह होती हैं जो 2 से 3 इंच लम्बी तथा पतली और हरी होती है। इसमें नारंगी रंग के फूल होते हैं।

Nagarmotha grows in wet soil at the bank of river, canal and spouts. It is bushy plant. Its leaves are like the blades of grass of 2 to 3 inches long, are thin and green in colour. It has orange flowers.

भद्रमुस्तश्च गुन्द्रा च तथा नागरमुस्तक: ।
मुस्तं कटु हिमं ग्राहि तिक्तं दीपनाचनम् ॥
कषायं कफपित्तास्त्रतृड्ज्वरारुचिजन्तुहृत् ।
अनूपदेशे यज्जातं मुस्तकं तत्प्रशस्यते ।
तत्रापि मुनिभि: प्रोक्तं वरं नागरमुस्तकम् ॥

(भा.प्र.कर्पूरा.व. 93, 94)

भद्रमुस्त, गुन्द्रा तथा नागरमुस्तक ये सब नागरमोथा के संस्कृत नाम हैं। मोथा कटुतिक्त तथा कषाय रसयुक्त, शीतवीर्य, ग्राही, अग्निदीपक तथा पाचक होता है और यह कफ, पित्त, रक्तकोप, तृषा, ज्वर, अरुचि तथा कृमि का नाशक होता है। जो 'मोथा' अनूप देश में उत्पन्न होता है वही श्रेष्ठ होता है। उसमें भी मुनियों ने *'नागरमोथा'* को ही सर्वश्रेष्ठ बतलाया है।

Bhadramusta, gundra, and *nagaramustaka* are its other names. *Musta* is pungent, cold in potency, constipating, bitter, increases digestive fire, digestive, astringent, mitigates kapha, pitta, asra (blood) thirst, fever, anorexia and worms;musta grown in marshy regions is best, among the two kinds, great sages consider nagaramusta as best suited.

79. मुलेठी
Mulethi

संस्कृत – *Yastimadhu (यष्टीमधु)*
अंग्रेज़ी – Liquorice root
बोटेनिकल – *Glycerrhiza glabra*



मुलेठी - Mulethi

मुलेठी एक औषधीय पौधा है जो 3 से 4 फुट ऊँचा होता है। इसके पत्ते 7 से 15 से.मी. लम्बे 9-17 से.मी. चौड़े होते हैं। इसका फूल बैंगनी रंग का होता है। इसकी जड़ में औषधीय गुण होता है। यह भारत के सभी क्षेत्रों में पाया जाता है।

Mulethi is a medicinal plant which is 3 to 4 feet high. Its leaves are 7 to 15 cms long and 9 to 17 cm wide. Its flowers are purple in colour. Its roots have medicinal value. It is found all over India.

यष्टी हिमा गुरु: स्वाद्वी चक्षुष्या बलवर्णकृत्।
सुस्निग्धा शुक्रला केश्या स्वर्या पित्तानिलास्रजित्।
व्रणशोथविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहा॥

(भा.प्र.ह.व. 146

मुलेठी शीतल, गरिष्ठ, स्वादिष्ठ, मीठी, नेत्रों के लिए लाभप्रद, स्निग्ध, शुक्रवर्द्धिका, बालों तथा स्वर के लिए लाभकारी, वात, पित्त, रक्त के दोषों में लाभकारी, व्रण, सूजन, विष, वमन, प्यास , श्वास तथा क्षय रोगों में लाभकारी होती है।

Yasti is cold in potency, hard for digestion, sweet, good for eyes (vision), bestows strength and colour, unctuous, increases semen, good for hairs and voice, mitigates pitta, anila (vata) and asra (rakta), cures wounds, oedema, poison, vomiting, thirst, exhaustion and consumption.

80. मूली
Muli, Murai

संस्कृत – *Mulakam (मूलक)*
अंग्रेज़ी – Radish
बोटेनिकल – *Raphanus sativus*



मूली - Muli, Murai

मूली एक प्रकार की कंद (अर्थात् जड़) होती है। यह लाल और सफेद दो प्रकार की होती है। इस पौधे का पत्तियों वाला हिस्सा ज़मीन से बाहर होता है। इस पौधे के डंठल में एक या दो पत्तियाँ 2 से 3 इंच लम्बी और 1 इंच चौड़ी होती हैं। इन पत्तियों का रंग हरा होता है। मूली समस्त भारत में पाई जाती है। *मूली* के मूल, पत्र, फल एवं बीजों का प्रयोग औषधि के रूप में किया जाता है।

Radish is a bulb (root). It is of two types : red and white. The leaves portion of the plant extends over ground. The stem of plant has 1 to 2 leaves which are 2 to 3 inches long and 1 inch wide. These are green in colour. *Radish* is found all over India.

लघुमूलं कटूष्णं स्याद्रुच्यं लघु च पाचनम्।
दोषत्रयहरं स्वर्यं ज्वरश्वासविनाशनम्॥
नासिकाकण्ठरोगघ्नं नयनामयनाशनम्॥
महत्तदेव रूक्षोष्णं गुरु दोषत्रयप्रदम्।
स्नेहसिद्धं तदेव स्याद् दोषत्रयविनाशनम्॥

(भा.प्र.शा. व. 102, 103)

छोटी मूली कटु रसयुक्त, रुचिकारक, लघु, पाचक, त्रिदोषनाशक, कण्ठस्वर को उत्तम करने वाली एवं ज्वर, श्वास, नाक, कण्ठ तथा नेत्र के रोगों को दूर करने वाली होती है।

बड़ी मूली- रूक्ष, उष्ण, गुरु एवं त्रिदोषकारक होती है। बड़ी मूली यदि तेल में पकी हुई हो तो त्रिदोषनाशक होती है।

Small variety is pungent, hot in potency, helps taste, easy for digestion, digestive, mitigates all three dosas, good for voice, cures fever, dyspnoea, diseases of nose, throat and eyes.

Big variety is dry (causes dryness) hot in potency, hard for digestion, increases all the three dosas, the same cooked with fats mitigates all the three dosas.

81. मुरई का पत्ता
Murai ka patta

संस्कृत – *Mulaka patram*
(मूलकपत्र)
अंग्रेज़ी – Raddish leaves
बोटेनिकल – *Leaves of Raphinus*



मुरई का पत्ता - Murai ka patta

मूलकपत्रम् (मूली के पत्ते) शाकीय पौधा होता है। ये पत्ते 8 से 12 इंच लम्बी तथा 2 से 4 इंच गोलाई वाले हरे रंग के होते हैं। ये पत्तियाँ हल्की खुरदुरी होती हैं। पैदावार समस्त भारत में की जाती है। मूली की पत्तियों का प्रयोग खान-पान में किया जाता है इनमें अनेक औषधीय गुण होते हैं।

Mulakpatram (Radish leaves) is a vegetable plant. These leaves are 8 to 12 inches long and having circumference of 2 to 4 inches. These leaves are green in colour and slightly rough in texture. *Radius* leaves are used in food and has medicinal value also. It is grown all over India.

पाचनं लघु रुच्योष्णं पत्रं मूलकजं नवम्।
स्नेहसिद्धं त्रिदोषघ्नमसिद्धं कफपित्तकृत्॥

(भा.प्र.शा.व. 33)

मूली का ताज़ा पत्ता- पाचक लघु (हल्का) रुचिकर तथा उष्ण होता है। तेल में पकाए गए ये पत्ते त्रिदोष नाशक, कफ तथा पित्त में लाभकारी होते हैं। बिना पकाया हुआ, कफ तथा पित्तकारक होता है।

Fresh leaves of *mulaka* are easily digestible, gives taste, hot in potency, when prepared (processed) in oils, it mitigates all the three dosas and when uncooked, it tends to increase kapha and pitta.

82. मुश्क
Musk dana, Latakasturi

संस्कृत – *Latā kasturi*
(लता कस्तूरी)
अंग्रेज़ी – Musk mallow
बोटेनिकल – *Hibiscus abelmoschusv*



मुश्क - Musk dana, Latakasturi

मुश्क का पौधा 80 से.मी. तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते 2 से 8 से.मी. लम्बे तथा 2 से 8 से.मी. चौड़े होते हैं। एक डंठल में पाँच पत्तियाँ होती हैं। इनका फूल सफेद और गुलाबी दो तरह का होता है और यह 3.2 से.मी. का होता है। इस पौधे का फल डिस्क आकार वाला 3 से 6 मि.मी. का होता है। इन फलों में 10 से 16 बीज होते हैं जो सुगन्धित और औषधीय गुणों वाले होते हैं। यह भारत के सभी क्षेत्रों में पाया जाता है।

The height of musk dana (latakasturi) plant is 80 cm. Its leaves are 2 to 8 cm long and 2 to 8 cm wide. There are five leaves in one stalk. There are two types of flowers: white and pink. It is approximately 3.2 cm. The fruit of plant look like a disk and is 3 to 6 cm. There are 10 to 16 seeds in these fruits. These seeds are fragrant and full of medicinal qualities. It is found all over India.

लता कस्तूरिका तिक्ता स्वाद्वी वृष्या हिमा लघु:।
चक्षुष्या छेदिनी क्षयश्लेष्मतृष्णाबस्त्यास्यरोगहृत्॥

(भा.प्र.कर्पूर.व. 9)

मुश्क- तिक्त स्वादु, कोमोद्दीपक, शीत तथा पाचन में लघु होती है। नेत्रतेजवर्द्धिनी, छेदक (गाढ़े कफादि का छेदन करने वाली) क्षय, तृष्णा, कफ, बस्ति तथा मुख आदि के रोगों को दूर करने वाली होती है।

Latakasturi is bitter sweet in taste, aphrodisiac, cold in potency, easily digestible, good for the eyes (vision), breaks up hard layers/covering of dosas, mitigates slesma (kapha with muscus), cures thirst, diseases of urinary bladder and mouth.



मुश्क - Musk dana, Latakasturi

83. नरसल, नरकट
Narsal, Narakata

संस्कृत – *Nala (नल:)*
अंग्रेज़ी – Wild tabacco
बोटेनिकल – *Labelia nicotianac folia heyne*



नरसल - Narsal

नरसल नदी-नालों के किनारे झाड़नुमा पौधा होता है। यह 6 से 12 फुट ऊँचा तथा इसके पत्ते 1 से 2 फुट लम्बे तथा 1 से 2 इंच चौड़े हरे रंग के होते हैं। इसका तना खोखला होता है, इसकी जड़ में औषधीय गुण होता है। भारत में सभी क्षेत्रों में पाया जाता है।

Narsal is a bushy plant which grows along the bank of the river. Its height is 6 to 12 feet and its leaves are 1 to 2 feet long and 1 to 2 inches wide. The colour of the leaves is green. Its trunk is hollow. Its root is full of medicinal qualities. It grows everywhere in India.

नलस्तु मधुरस्तिक्त: कषाय: कफरक्तजित्।
उष्णो हृद्बस्तियोन्यर्त्तिदाहपित्तविसर्पहृत्॥

(भा.प्र.गुडू.व. 157)

नरसल- मधुर, तिक्त, कषाय, कफ, रक्त दोष हरने वाला होता है। यह उष्ण, हृदय पीड़ा को दूर करने वाला, बस्ति तथा योनि की जलन, पित्त तथा दाद को दूर करने वाला होता है।

Nala is sweet, bitter, astringent, mitigates kapha and rakta, hot in potency, cures pain of the heart, urinary bladder and vagina, burning sensation and herpes.

84. नीम
Neem

संस्कृत – *Nimba (निम्ब:)*
अंग्रेज़ी – Neem tree
बोटेनिकल – *Melia azadirachta linn./Azadirachta indica*



नीम - Neem

नीम के पेड़ 50 से 60 फुट के होते हैं। इनके तने की छाल खुरदुरे भूरे रंग की होती है। इनके पत्ते छोटे और नुकीले होते हैं और फल भी छोटे-छोटे कच्चे हरे रंग के तथा पकने पर पीले रंग के होते हैं। नीम के वृक्ष की छाल, पत्ती, लकड़ी आदि सब कुछ औषधीय गुणों से युक्त होती हैं।

Neem (Nimba) tree is 50 to 60 feet high. Its bark is rough and brown in colour. Its leaves are small and pointed. Its fruits are and green in colour but become yellow when ripe. All the parts of neem (bark, wood, leaves etc.) are used for making medicine.

निम्ब: स्यात्पिचुमर्दश्च पिचुमन्दश्च तिक्तक:।
अरिष्ट: पारिभद्रश्च हिङ्गुनिर्यास इत्यपि॥
निम्ब: शीतो लघुर्ग्राही कटुपाकोऽग्निवातनुत्।
अहृद्य: श्रमतृट्कासज्वरारुचिकृमिप्रणुत्।
व्रणपित्तकफच्छर्दिकुष्ठहृल्लासमेहनुत्॥
निम्बपत्रं स्मृतं नेत्र्यं कृमिपित्तविषप्रणुत्।
वातलं कटुपाकश्च सर्वारोचककुष्ठनुत्॥
निम्बफलं रसे तिक्तं पाके तु कटभेदनम्।
स्निग्धं लघूष्णं कुष्ठघ्नं गुल्मार्श:कृमिमेहनुत्॥

(भा.प्र.,गुडू.व. 93, 94, 95, 96)

निम्ब (नीम) पिचुमर्द, पिचुमन्द, तिक्तक, अरिष्ट, पारिभद्र और हिङ्गुनिर्यास ये सब नाम नीम के हैं। *नीम* शीतवीर्य, लघु, ग्राही, पाक में कटुरसयुक्त, जठराग्नि में वृद्धि करने वाला, हृदय को अहितकर तथा वात, श्रम, तृषा, खाँसी, ज्वर, अरुचि, कृमि, व्रण, पित्त, कफ, वमन, कुष्ठ, हृल्लास तथा प्रमेह इन सभी रोगों का नाशक होता है। *नीम* के पत्ते नेत्र को हितकर, कृमि-पित्त-विष के नाशक, वातकारक, पाक में कटुरसयुक्त, तथा सभी प्रकार की अरुचि और कुष्ठ को दूर करने वाले होते हैं। *नीम* का फल रस में तिक्त, पाक में कटु, मल का भेदन करने वाला, स्निग्ध, लघु, उष्णवीर्य, कुष्ठ, गुल्म, बवासीर, कृमि तथा प्रमेह का नाशक होता है।

Nimba, picumarda, picumanda, tiktaka, arista, paribhadra, hinguniryasa - are its names. *Nimba* is cold in potency, easy for digestion, causes constipation, pungent after digestion, enhances digestive fire and vāta, not good to the heart/ unpleasant to the mind, cures fatigue, thirst, cough fever, loss of taste, appetite, and worms, wounds, mitigates pitta, kapha, vomiting, cures leprosy, nausea and diabetes.

Nimbapatra (leaves) is good for eyes (vision), cures worms, pitta diseases and poison, aggravates vāta, pungent after digestion, cures all varieties of loss of taste and leprosy (and some skin deseases).

Nimba phala (fruit) is bitter in taste and pungent after digestion, causes purgations, is unctuous, hot in potency, cures leprosy, abdominal tumour, piles, worms (bacteria etc.) and diabetes.

85. नेनुआ, बड़ी तोराई
Nenuā, Badi torai

संस्कृत – *Mahakosataki (महाकोशातकी)*
अंग्रेज़ी – Sponge gourd
बोटेनिकल – *Luffa cylindrica*



नेनुआ, बड़ी तोराई - Nenuā, Badi torai

तोरई एक प्रकार की लता (बेल) होती है। यह लम्बी, खूब फैलने वाली आरोही लता होती है। इसकी पत्तियाँ लौकी की पत्तियों के समान होती हैं परन्तु थोड़ी पतली तथा चमकीली होती हैं जो 15 से 20 से.मी लम्बी, पञ्चकोणीय तथा कटे हुए किनारों वाली होती हैं। इसका पुष्पकाल एवं फलकाल जून से सितम्बर तक होता है। यह खुरदरी त्वचा तथा कोमल त्वचा वाली दोनों प्रकार की होती है। *तोरई* का प्रयोग शरीर के अनेक रोगों में लाभदायक होता है।

Torai is a creeper. It is long, grows upwards and spreads very fast. Its leaves are like the leaves of *lauki* but slightly thin and bright. The length of the leaves is 15 to 20 cm having five corners with edges cut on sides. Its flowers and fruits appear from June to September. It is of two varieties: hard and soft. Use of *torai* is benefical in many diseases of body.

धामार्गवो घोषकश्च हस्तिपर्णश्च स स्मृत:।
महाकोशातकी स्निग्धा रक्तपित्तानिलापहा॥

(भा.प्र.शा.व. 66)

धमार्गव, घोषक तथा हस्तिपर्ण महाकोशातकी ये सब *नेनुआ* के संस्कृत नाम हैं। यह स्निग्ध तथा रक्तपित्त एवं वायु को नष्ट करने वाली होती है।

Dharmargava, ghosaka and hastiparn are synonyms. Its *Mahakosataki* is unctuous, mitigates bleeding disease and diseseses of *vāta.*

86. पाचोली
Pācolī

संस्कृत – *Parpatī (पर्पटी)*
अंग्रेज़ी – Pacouli
बोटेनिकल – *Pogostemon patchouli Hook*



पाचोली- Pācolī

यह मध्यम ऊँचाई वाला पौधा होता है। यह वनों में पाया जाता है। इसके पत्ते अण्डाकार हरे रंग के तथा फूल सुगंधित सफेद रंग के तुलसी दल की तरह खिलते हैं। इनके पत्तों में औषधीय गुण होता है।

Pacoli (parpati) is a medium size plant. It grows wild in the forest. Its leaves are egg shaped. The colour of these leaves are green. Its flowers are very fragrant and bloom like tulsi leaves. These leaves have medicinal qualities.

पर्पटी तुवरा तिक्ता शिशिरा वर्णकृल्लघुः।
विषव्रणहरी कण्डूकफपित्तास्रकुष्ठनुत्॥

(भा.प्र.कर्पूर.व. 128)

पाचोली अधिक तिक्त, शीतल, कान्तिवर्धक, पाचन में लघु, विष एवं व्रण रोग को दूर करने वाली, खुजली, कफ, पित्त, रक्त तथा कुष्ठ रोगों में लाभकारी होती है तथा पाचन में हल्की होती है।

Parpati is astringent bitter, cold in potency, bestows colour, easily digestible, cures poison, ulcers, itching, leprosy and other skin diseases, mitigates kapha, pitta and asra (blood).

87. पालक
Pālak

संस्कृत – *Pālakya* (पालक्या)
अंग्रेज़ी – Spinach
बोटेनिकल – *Spinacia oleracea*



पालक - Pālak, Palaki

पालक एक शाकीय पौधा होता है जो छोटा, सीधा, लगभग 30 से 60 से.मी. ऊँचा होता है। इसकी जड़ गुच्छेदार होती है तथा इसके पत्ते जितने काटे जाते हैं उतने ही शीघ्र बढ़कर पुन: आ जाते हैं। इस पौधे की पत्तियों का प्रयोग औषधि में किया जाता है। इसकी खेती भारत में सभी जगह की जाती है।

Palak is a vegetable plant which grows straight and is 30 to 60 cm tall. It has intertwined roots and its leaves regrows very fast after cutting. Its leaves are used in medicine. It is cultivated everywhere in India.

पालक्या वातला शीता श्लेष्मला भेदिनी गुरु:।
विष्टम्भिनी मदश्वासपित्तरक्तकफापहा॥

(भा.प्र.शा.व. 16)

पालक वातजनक, शीतल, कफकारक, मलभेदक, गुरु, विष्टम्भ उत्पन्न करने वाला एवं मद, श्वास सम्बन्धी समस्याओं, पित्त, रक्त तथा कफ को दूर करने वाला होता है।

Purgstive, hard for digestion, causes flatuence, relievs intoxication, dyspnoea, mitigates pitta, rakta and kapha diseases. Palak increases vāta, is cold in potency increase slesma (cough with mucus) vata and kaph, softens the stool, cures drowsiness cures respiratory diseases vitiates pitta, rakt and kahph.

88. परवल, परोरा
Pārval, Parora

संस्कृत – *Patola (पटोल:)*
अंग्रेज़ी – Pointed - Gourd
बोटेनिकल – *Trichosanthens-dioicia-Roxb.*



परवल - Parval, Parora

परवल एक बेल (लता) होती है। यह काफी लम्बी होती है। इसके पत्ते 3 से 4 इंच लम्बे, 2 इंच चौड़े और नुकीले होते हैं। इसका फूल सफेद रंग वाला तथा 2 से 4 इंच का लम्बा और गोल होता है। *पटोल या परवल* का फल हरे रंग का होता है तथा बीच-बीच में सफेद रंग की धारियाँ होती हैं। इसकी भारत में सभी क्षेत्रों में खेती की जाती है। इसके पत्र एवं फल का प्रयोग औषधि के रूप में करते हैं।

Parval is a long vine (creeper plant). *Patola* fruit is green in colour having white stripes. Its leaves are pointed and 3 to 4 inches long and 2 inches wide. Its flower is white, round and 2 to 4 inches long. It is cultivated all over India. Its leaves are used in medicine.

पटोलं पाचनं हृद्यं वृष्यं लघ्वग्निदीपनम्।
स्निग्धोष्णं हन्ति कासास्रज्वरदोषत्रयंकृमीन्॥

(भा.प्र.शा.व. 70)

परवल पाचक, हृदय के लिए रुचिकर, बलवर्धक, पाचन में लघु अग्निदीपक स्निग्ध तथा उष्ण होता है। कफ, रक्त, ज्वर, दोषत्रय एवं कृमि का नाशक होता है।

Patola is digestive, good for the heart, aphrodisiac, easily digestible, increases digestive fire and unctuousness, hot in potency, cures cough bleeding diseases, fever, mitigates all the three dosas and cures diseases of worms.

89. पीप्पली
Pīppalī

संस्कृत – *Pippali (पिप्पली)*
अंग्रेज़ी – Long pepper
बोटेनिकल – *Piper longum linn*



पीप्पली - Pīppalī

पीप्पली ज़मीन पर अथवा वृक्ष के सहारे फैलने वाली बेल (लता रूपी पौधा) होता है। इसकी पत्तियाँ पान के समान 2 से 3 इंच लम्बी होती हैं। पौधे का फल *पीप्पली* के पत्तों के साथ ही पुष्पदण्ड की तरह होता है प्रारम्भ में हरे रंग और सूखने पर काले रंग का हो जाता है। यह 1 से 2 इंच लम्बा होता है। इसके जड़ एवं फल औषधि के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

Pippali is a creeper which grow along the land or tree. Its leaves are like those of betel leaves which are 2 to 3 inches long. Fruit of plant grows with pippali leaves and look like flower stem. It is green in the beginning and turns black when it is dried. Its height is 1 to 2 inches long. It is found everywhere in India. Its root and fruits are used in medicine.

पिप्पली दीपनी वृष्या स्वादुपाका रसायनी।
अनुष्णा कटुका स्निग्धा वातश्लेष्महरी लघु: ॥
पिप्पली रेचनी हन्ति श्वासकासोदरज्वरान्।
कुष्ठप्रमेहगुल्मार्श: प्लीहशूलाममारुतान् ॥
आर्द्रा कफप्रदा स्निग्धा शीतला मधुरा गुरु:।
पित्तशमनी सा तु शुष्का पित्तप्रकोपिणी ॥
पिप्पलीमधुसंयुक्ता मेद:कफविनाशिनी।
श्वासकासज्वरहरी वृष्या मेध्याऽग्निवर्द्धिनी ॥
जीर्णज्वरेऽग्निमान्द्ये च शस्यते गुडपिप्पली।

कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डुकृमिरोगनुत् ।।
द्विगुण: पिप्पलीचूर्णाद् गुडोऽत्र भिषजां मत: ।।

(भा.प्र.ह.व. 54, 55, 56, 57, 58)

पीप्पली जठराग्निवर्धक, कामोद्दीपनी, विपाक में मधुर, रसायनी, अनुष्णा, कटु तथा स्निग्ध होती है। वात एवं श्लेष्मा (बलगमी कफ) को दूर करने वाली तथा पाचन में लघु होती है।

पीप्पली रेचनी होती है। श्वास, कास, उदर फूलना, ज्वर, कुष्ठ, मधुमेह, गुल्म, अर्श, उदर शूल आम वात में लाभकारी। आर्द्र *पीप्पली* स्निग्ध, शीतल, मधुर, गुरु तथा पित्त को शान्त करने वाली होती है, शुष्क होने पर यही पित्तप्रकोपिणी बन जाती है।

शहद से युक्त *पीप्पली* चर्बी तथा कफ को दूर करती है, श्वास, कास, ज्वर की नाशक, कामोद्दीपक, मेधा तथा जठराग्नि में वृद्धि करने वाली होती है।

पुराने ज्वर में तथा मन्द जठराग्नि में गुड़ *पीप्पली* का संयोग लाभप्रद है साथ ही यह कास, अजीर्ण, अरुचि, साँस फूलना, पाण्डु तथा कृमिरोग में भी लाभकारी है। वैद्यों के मतानुसार ऐसी स्थिति में पीप्पली चूर्ण को गुड़ से मिलाना आदर्श होगा और गुड़ की मात्रा *पीप्पली* चूर्ण से दुगनी होनी चाहिये।

Pippali is promotor of digestive fire, aphrodisiac, sweet after digestion, rejuvenator, not hot in potency (mildly hot), pungent in taste, unctuous, mitigates vāta and ślesma (kapha) and easily digestible.

It is purgative, cures dyspnoea, cough, enlargement of the abdomen, fever, leprosy (and other skin diseases), diabetes, haemorrhoids, disease of the spleen, pain in the abdomen, rheumatism.

When wet (moist, green) it increases kapha, is unctuous cold in potency, sweet, hard for digestion and mitigates pitta. The same when dry, increases pitta.

Used with honey it mitigates fat and kapha, cures dyspnoea, cough, fever, is aphrodisiac, improves intelligence, increases digestive fire. In chronic fevers, dyspepsia, cough, indigestion, loss of taste, appetite, dyspnoea, heart disease, anaemia, intestinal worms— it is ideal to use it mixed with guda (jaggery). Physicians opine that quantity of guda (jaggery) should be double of that powder of pippali.

90. प्याज़, पियाज
Pyaj, Piyāja

संस्कृत – *Palandu (पलाण्डु:)*
अंग्रेज़ी – Onion
बोटेनिकल – *Allium cepa*



प्याज, पियाज - Pyaj, Piyāja

प्याज़ कन्दीय मूल है। *प्याज* दो रंग का होता है सफेद और लाल। यह लगभग सम्पूर्ण भारत में पैदा होता है। विशेषत: महाराष्ट्र, गुजरात, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश एवं दक्षिण भारत में इसकी खेती होती है। *प्याज* में दुर्गन्ध से धर्म ग्रन्थों में इसका सेवन निषिद्ध माना है लेकिन आयुर्वेद में एक गुणकारी कन्द है।

Onion is tuberal plant. It is of two colours: white and red. Because of its odour its use is prohibited in religious texts. In ayurveda it is considered to be a significantly useful tuber. It grows all over country specially in Maharashtra, Gujrat, West Bengal, Uttar Pradesh and South India are the places where its farming is done.

पलाण्डुस्तु बुधैर्ज्ञेयो रसोनसदृशो गुणै: ॥
स्वादु: पाके रसेऽनुष्ण: कफकृन्नातिपित्तला।
हरते केवलं वातं बलवीर्यकरो गुरु: ॥

(भा.प्र.ह.व. 226, 227)

विद्वज्जन गुणों में प्याज़ को लहसुन के समान ही मानते हैं। *प्याज़* पाक तथा विपाक में स्वादिष्ट होती है, अनुष्ण, कफकारक परन्तु पित्त को किञ्चित् बढ़ाने वाली होती है केवल वातनाशक है (अन्य दोषों के साथ नहीं), बल तथा वीर्य को बढ़ाने वाली एवं पाचन में गरिष्ठ है।

The wise say that palandu has properties similar to garlic. It is sweet both in taste and after digestion, not hot in potency, increases kapha, not increasing pitta greatly (incrases slightly), mitigates vāta alone (not associated with other dosas), bestows strength and vitality and is not easily digestible.



प्याज, पियाज - Pyaj, Piyāja

91. सदाबहार
Sādabāhar

संस्कृत – *सदापुष्पा, नित्यकल्याणी*
अंग्रेज़ी – Medagascar Periwinkle
बोटेनिकल – *Catharanthus roseus (Linn.)*



सदाबहार - Sadabahar

सदाबहार एक लघु आकार का पौधा होता है। यह 30-90 से.मी. ऊँचा, सीधा, शाखा-प्रशाखायुक्त, सुंदर, बहुवर्षायु पौधा होता है। इसके पत्र गहरे हरित वर्ण के, चमकीले, अग्र भाग पर गोलाकार तथा आधार पर नुकीले होते हैं। इसके पुष्प श्वेत से गुलाबी-बैंगनी वर्ण के होते हैं। इसके बीज अनेक, छोटे, तथा कृष्ण वर्ण के होते हैं। इसमें वर्ष पर्यन्त पुष्प लगे रहते हैं। यह हमेशा हरा भरा रहने वाला औषधीय गुणों से भरपूर पौधा है।

यह घरों, मन्दिरों, व बगीचों में शृङ्गारिक पौधे के रूप में लगाया जाता है। यह मूलत: मेडागास्कर का पौधा माना जाता है।

It is 30 to 90 cms high, straight, beautiful, having multiple branches. It is a long living plant. Its leaves are bright, round, pointed and dark green in colour. Its flowers are white, pink and violet. Its seeds are small and black in colour. It blossoms and bears fruit throughout the year.

Sadabahar is an evergreen flowery plant full of medicinal properties. grown as a decorative plant in temples, gardens and homes.

सदां पुष्पा कषाय स्यात् तिक्तोष्णा कफवातहृत।
सौमनस्यायनी रक्तभाराधिक्यनिवारणी ।
चित्तोद्वेगहरी हृद्या रक्ताबुर्दविनाशिनी ॥

(सुश्रु.गुडू.वि. -2,पृ: 832)

सदाबहार एक औषधीय गुणों से युक्त पुष्पीय पौधा होता है। *सदाबहार* का पुष्प कषैला तथा तिक्तोष्ण होता है। यह कफ और वात का नाशक है, मन को अच्छा न लगने वाला तथा रक्त चाप को दूर करता है, चित्त के उद्वेग (मन की अशान्ति) को दूर करता है, रक्त कैंसर को दूर करने में सक्षम है।

Sadabahar plant is bitter and pungent. It mitigates 'Kaph' and 'Vaat' dosh. It removes mental disturbance, cures blood pressure and is effective in treating blood cancer.

92. सफेद कद्दू
Safed Kaddu

संस्कृत – *Kusmandi (कुष्माण्डी)*
अंग्रेज़ी – Field pumpkin
बोटेनिकल – *Cucurbita Pepo*



सफेद कद्दू- Safed Kaddu

कद्दू का पौधा एक प्रकार की बेल होती है। इसकी बेल पर पीले फूल आते हैं। इसका फल गोल तथा काफी बड़ा होता है। पेठा भी इसी प्रजाति का होता है। इसके फल, बीज एवं तेल का प्रयोग औषधि के रूप में किया जाता है।

Safed Kaddu (Kusmandi) is a kind of vine which bears yellow flowers. Its fruit is big and round. It belongs to the family of 'petha'. Its fruit, seeds and oil are used in medicines.

कर्कारुर्ग्राहिणी शीता रक्तपि त्तहरा गुरु: ।
पक्का तिक्ताऽग्निजननी सक्षारा कफवातनुत् ॥

(भा.प्र.शा.व. 56)

कद्दू- कब्ज़कारी शीतल, रक्त, पित्तदोष में लाभकारी पाचन में गुरु होता है। पकने पर तिक्त फल बुभुक्षा वर्धक, क्षारीय तथा कफ एवं वात को दूर करने वाला होता है।

Karkaru is constipating, cold in potency, cures bleeding disease, heavy for digestion, the ripe fruit is bitter and slighty alkaline, produces digestive fire and mitigates kapha and vata.

93. सफेद पुनर्नवा, रक्त पुनर्नवा
Safed Punernavā, Rakta Punernavā

संस्कृत – *Punarnavā*
(पुनर्नवा-श्वेता रक्ता च)
अंग्रेज़ी – Hogweed
बोटेनिकल – *Boerhavia repens*
Boerhavia diffusa



सफेद पुनर्नवा, - Safed Punarnavā

पुनर्नवा शाकीय पौधा है। यह प्रसरणशील या ज़मीन पर फैलने वाली वनस्पति होती है। इसकी रक्त और श्वेत दो प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इसके पत्ते और फूल लाल वर्ण के होते हैं। यह सम्पूर्ण उत्तर भारत में पाई जाती है। फलों के पक जाने पर वायवीय भाग सूख जाता है परन्तु मूल भूमि में पड़ी रहती है जो वर्षा ऋतु में फिर से उग आती है इसलिए इसका नाम पुनर्नवा है। इसके पंचांग (मूल, तना, पत्र, पुष्प, बीज) का प्रयोग औषधार्थ करते हैं।

Punernavā is a spreading weed which falls in the category of vegetation. It is found in two forms : white and red. Its leaves and flowers are red in colour. It is found in whole of North India. After its fruits have ripened, the upper portion dries up but the root lies in the soil which grows again during the rainy season that is why it is called 'punernava', the one which grows again. All its parts (root, trunk, leaf, flower, fruit) are used in medicine.

कटु कषायानुरसा पाण्डुघ्नी दीपनी परा।
शोफानिलगरश्लेष्महरी ब्रघ्नोदरप्रणुत्॥
पुनर्नवाऽपरा रक्ता रक्तपुष्पा शिलाटिका।
शोथघ्नी क्षुद्रवर्षाभूवर्षकेतु: कटिल्लक:॥
पुनर्नवाऽरुणा तिक्ता कटुपाका हिमा लघु:।
वातला ग्राहिणी श्लेष्मपित्तरक्तविनाशिनी॥
(भा.प्र.,गुडू.व. 231, 232, 233)

पुनर्नवा कटु-कषाय रस वाली, रक्ताल्पता को दूर करने वाली, जठराग्नि को तीव्रता से बढ़ाने वाली, सूजन तथा वात (मूल वाली) बीमारियों को दूर करने वाली, विष, श्लेष्म (बलगमी कफ) आँत तथा उदरवृद्धि की समस्या को दूर करने वाली है।

अन्य *रक्त पुनर्नवा* रक्तपुष्पा, शिलाटिका, शोथघ्नी क्षुद्रवर्षाभ, वर्षकेतु तथा कट्टिलक कहलाता है।

यह *रक्त* पुनर्नवा तिक्त विपाक में कटु वीर्य में शीतल, पाचन में लघु, वातवर्धक, कब्ज़कारी, श्लेष्म, पित्त तथा रक्त व्याधियों को नष्ट करने वाली है।

It is pungent with astringent as secondary taste, cures anaemia, increases digestive fire greatly, dropsys, diseases of anila (vāta) origin, homicidal poison, diseases of slesma (kapha) original hernia scrotal enlargement, and enlargement of the abdomen.

*Rakta punarnav*ā is known as raktapuspa, śilātikā, śothaghn*ī*, ksudravarsābhū, varsaketu and kathillaka.

*Aruna (Rakta) punarnav*ā is bitter, pungent after digestion, cold in potency, easy for digestion, increases vāta, causes constipation and cures diseases of kapha, pitta and rakta.

94. सहतूत, तूत
Sahatūta, Tūta

संस्कृत –*Tūtah (तूत:)*
अंग्रेज़ी – Mulberry plant
बोटेनिकल – *Morus indica Griff*



सहतूत, तूत - Sahatuta, Tuta

तूत (सहतूत) औसत ऊँचाई का वृक्ष होता है। इसके तने और छाल मटमैले रंग के होते हैं। इसके पत्ते आगे से कटी आकृति वाले त्रिकोणात्मक होते हैं। इसके फल 2 से 2.5 इंच लम्बे सफेद व गुलाबी (बैंगनी) रंग के होते हैं। इसके छाल, मूल, फल और पत्तियों में औषधीय गुण होते हैं। यह भारत में सभी क्षेत्रों में पाया जाता है।

Sahatuta (Tutah) is a medium sized tree. Its trunk and bark is of brown. Its fruits are 2 to 2.5 inches long white and purplish in colour. Its leaves, bark, root and fruits have medicinal value. It is found all over India.

तूतं पक्वं गुरु स्वादु हिमं पित्तानिलापहम् ॥
तदेवामं गुरु सरमम्लोष्णं रक्तपित्तकृत् ॥

(भा.प्र.आम्रा.व. 100)

सहतूत पका हुआ पाचन में भारी, स्वादिष्ट, शीतल, पित्त रोग, वातरोग नाशक होता है। उदर अग्निशामक, नमकीन, अम्लीय और रक्तदोष में लाभदायक होता है। *कच्चा तूत* भी गुरु (पचने में भारी), मल को निकालता है। इसका रस अम्ल, वीर्य उष्ण होने के कारण रक्त-पित्त को उत्पन्न करता है।

Ripe fruit is hard for digestion, sweet, cold in potency, mitigates pitta and vāta, while unripe fruit is also hard for digestion, laxative, sour, hot in potency and aggravates rakta and pitta.

95. सहिजन
Sahijan

संस्कृत – *Śigrū (शिग्रू)*
अंग्रेज़ी – Drum stick
बोटेनिकल – *Moringa oleiferda*



सहिजन - Sahijan

सहिजन मध्यम आकार का वृक्ष होता है। यह 15 से 24 फुट तक ऊँचा होता है। इसके तने की छाल भूरे रंग वाली होती है। इसमें दरारें पड़ी होती हैं। इसके पत्ते नीम सदृश पत्तों के हल्के हरे रंग के होते हैं। इसकी फलियाँ 20 से 50 से.मी.लम्बी, ड्रम बजाने वाली लकड़ी की जैसी होती हैं। इसके फूल सफेद रंग के गुच्छेदार होते हैं।

Sahijan (Sigru) is a medium size tree, which is 15 to 24 feet high. Its trunk is brown , its bark has cracks. Its leaves are like those of neem trees leave and light green colour. Its legume is 20 to 50 cms long, look like drum beating sticks. Its white flowers grow in panicles (bunches).

शिग्रु: कटु: कटु: पाके तीक्ष्णोष्णो मधुरो लघु: ॥
दीपनो रोचनो रूक्ष: क्षारस्तिक्तो विदाहकृत्।
संग्राही शुक्रलो हृद्य: पित्तरक्तप्रकोपण: ॥
चक्षुष्य: कफवातघ्नो विद्रधिश्वयथुकृमीन्।
मेदोऽपचीविषप्लीहगुल्मगण्डव्रणान् हरेत् ॥
श्वेत: प्रोक्तगुणो ज्ञेयो विशेषाद्दाहकृद्भवेत्।
प्लीहानं विद्रधिं हन्ति व्रणघ्न: पित्तरक्तहृत्।
मधुशिग्रु: प्रोक्तगुणो विशेषाद्दीपन: सर: ॥
शिग्रुवल्कलपत्राणां स्वरस: परमार्त्तिहृत् ॥
चक्षुष्यं शिग्रुजं बीजं तीक्ष्णोष्णं विषनाशनम्।

अवृष्यं कफवातघ्नं तन्नस्येन शिरोऽर्त्तिनुत् ॥

(भा.प्र.,गुडू.व. 105, 106, 107, 108, 109, 110)

शिग्रु अर्थात् *सहिजन*-स्वाद तथा पाक में कटुरसयुक्त, तीक्ष्ण, उष्णवीर्य, मधुर, लघु, अग्निदीपक, रोचक, रूक्ष, क्षार, तिक्तरसयुक्त, विदाहकारक, मलावरोधक, शुक्रजनक, हृदय को हितकर, पित्त तथा रक्त के प्रकोप को बढ़ाने वाला, नेत्रों के लिए हितकर, कफवात-नाशक एवं फोड़े फुंसियों, सूजन, कृमि, मेदरोग, अपच, विष, प्लीहा, गुल्म, गलगण्ड और व्रण का नाशक होता है। इसी प्रकार से सफेद सहिजन के भी गुण हैं किन्तु यह विशेष करके दाहकारक तथा प्लीहा, फोड़े फुंसियों, व्रण रक्तपित्त का नाशक होता है।

मधुशिग्रु अर्थात् *लाल सहिजन* के भी पूर्वोक्त सभी गुण हैं, किन्तु विशेष करके वह अग्निदीपक तथा सारक (दस्तावर) होता है। *सहिजन* की छाल तथा पत्तों का स्वरस असह्य पीड़ा को दूर करता है। इसके बीज नेत्रों को हितकर, तीक्ष्ण, उष्णवीर्य, विषनाशक, अवृष्य और कफ वातनाशक होते हैं। *सहिजन* के बीजों का चूर्ण करके नस्य लेने (सूंघने) से सिर की पीड़ा दूर होती है।

Śigrū is pungent both in taste and after digestion, penetrating, hot in potency, sweet, easy for digestion, augments digestive fire and taste, causes dryness, alkaline, bitter, causes burning sensation during digestion, constipating, increases semen, good for heart, aggravates pitta and rakta, good for eyes/ vision, mitigates kapha and vāta, cures abscess, swelling, dropsy, worms, obesity, goitre poison enlargement of spleen, abdominal tumour, lymph glands, ulcers, mitigates pitta and rakta; madhusigru (copper coloured variety) also has similar properties and especially increases digestive fire and is laxative.

Svarasa (fresh juice) of bark and leaves is best to relieve pain. Bija (seeds) is good for eyes (vision) penetrating, hot in potency, destroys poison, non-aphrodisiac, mitigates kapha and vata and when used for nasal medication it cures headaches.

96. संतरा, नारङ्गी
Santarā, Nāraṅgī

संस्कृत – *Nāranga (नारङ्गः)*
अंग्रेज़ी – Orange
बोटेनिकल – *Citrus reticulata Blanco Citrus aurantium*



संतरा - Santara, Narangi

सन्तरा एक फल है। इसका वृक्ष मध्यम आकार का होता है। यह सदाहरित (सदाबहार) कण्टक युक्त रहता है। पत्ते छोटे व कोमल होते हैं। इसके फूल सफेद व सुगन्धित होते हैं। इसका फल गोल गेंद के आकार का हरे व नारंगी रंग का होता है, इसीलिए इसका एक नाम नारंगी भी है। इसमें खटास युक्त मीठा रस भरा होता है। औषधि के रूप में पत्र, पुष्प, फल एवं त्वक् का प्रयोग किया जाता है।

Sanatrā (Nāranga) is a fruit. Its tree is of medium size and is evergreen. Its leaves are small and tender. The flowers are white and fragrant. The fruit is round like a ball, green and orange in colour; because of its colour it is also called narangi. It is sweet and sour in taste. Its leaves, flowers, fruit and bark of the fruit have medicinal value.

नारङ्गो नागरङ्गः स्यात्त्वक्सुगन्धो मुखप्रियः।
नारङ्गो मधुराम्लः स्याद्रोचनो वातनाशनः।
अपरं त्वम्लमत्युष्णं दुर्जरं वातहृत् सरम्॥

(भा.प्र.आम्रा.व. 63, 64)

संतरे के अन्य नाम नारंग, नागरंग, त्वक्सुगन्ध तथा मुखप्रिय है। यह मधुराम्ल रुचिकर एवं वातनाशक होता है। अन्य जो अम्लीय सरस होता है वह अति उष्ण, गुरु, वात को दूर करने वाला तथा कब्ज़नाशक होता है।

Naranga, nagranga, tvaksugandha and mukhpriya are synonyms. *Nāranga* is sweet, sour, helps taste, mitigates vāta; that variety which is very sour is hot in potency, hard for digestion, mitigates vāta and is laxative.



संतरा - Santara, Narangi

97. शालवन
Śārivan, Śālavan

संस्कृत – *Śalaparnī (शालपर्णी)*
अंग्रेज़ी – Shal leafeel bush
बोटेनिकल – *Desmodium gangeticum*



शालवन - Sarivan, Salavan

शालवन (शालपर्णी) एक बेलनुमा झाड़ीदार पौधा होता है। इसकी ऊँचाई 60-120 से.मी. होती है। इसकी टहनियाँ झुकी हुई होती हैं। इसके पत्ते शालवृक्ष के पत्तों के समान होते हैं। इसी कारण इसे शालपर्णी कहते हैं। इसके फूल श्वेताभ गुलाबी अथवा गहरे नीले रंग के होते हैं। इसके पंचांग (मूल, पत्र, तना, पुष्प, फल) को औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है।

Salavan (Salaparni) is diffusely branched (spread in all directions) undershrub. It is about 60 to 120 cm high. Its branches droop. Its leaves are like that of *'Shalvriksh'*, that is why it is named as *'Salaparni'*. Its flowers are purplish or whitish in colour.

शालपर्णी गुरुश्छर्दिज्वरश्वासद्वितसारजित्॥
शोषदोषत्रयहरी बृंहण्युक्ता रसायनी।
तिक्ता विषहरी स्वादु: क्षतकासकृमिप्रणुत्॥

(भा.प्र.गुडू.व. 32, 33)

शालपर्णी– पाचन में गुरु, वमनशामक, ज्वर, श्वास, अतिसार में लाभकारी होती है। त्रिदोषनाशक तथा रसायन औषधि में परिगणित होती है। यह तिक्त, विषहारक, स्वादिष्ट, कास, तथा कृमि नाशक होती है।

Śā*laparni* is hard for digestion, cures vomiting, fever, dyspnoea diarrhoea, and consumption, mitigates all the three dosas, nutritious, rejuvenator, bitter, sweet, antipoisonous, cures cough due to injury to lungs and worms.

98. शतावरी, शतमूली
Śatāvari, Satamuli

संस्कृत – *Śatāvari*
(शतावरी महाशतावरी च)
अंग्रेज़ी – Indian asparagus
बोटेनिकल – *Asparagus racemosus*



शतावरी, शतमूली -
Śatāvari, Satamuli

शतावरी काँटोंवाली झाड़ीदार बेल (लता) होती है। यह 0.05 से 1.3 से.मी. तक लम्बी होती है। इसके पत्ते सुई के आकार के गुच्छेदार होते हैं। इसके फूल सफेद एवं सुगंधित होते हैं। शतावरी के फल हरे रंग के होते हैं। जो पकने पर लाल रंग के हो जाते हैं। इसके फलों में एक या दो कठोर बीज होते हैं। इसकी कम से कम सौ से अधिक जड़े होती हैं।

Satāvari is branched spinous shrub. It is 0.05 to 1.3 cm long. Its leaves are like spines in bunches. It has white fragrant flowers. Satavari fruits are green in colour which turn red when ripe. The fruits have one or two hard seed and have minimum of hundred or more than hundred roots.

महाशतावरी चान्या शतमूल्यूर्ध्वकण्टिका।
सहस्रवीर्या हेतुश्च ऋष्यप्रोक्ता महोदरी॥
शतावरी गुरुः शीता तिक्ता स्वाद्वी रसायनी।
मेधाऽग्निपुष्टिदा स्निग्धा नेत्र्या गुल्मातिसारजित्॥
शुक्रस्तन्यकरी बल्या वातपित्तास्रशोथजित्।
महाशतावरी मेध्या हृद्या वृष्या रसायनी॥
शीतवीर्या निहन्त्यर्शोग्रहणीनयनामयान्।
स्रितदङ्गुरस्रिदोषघ्न लघुरर्शःक्षयापहा॥
(भा.प्र.,गुडू.व. 185,186, 187, 188)

महाशतावरी, शतावरी का भिन्न रूप शतमूली, ऊर्ध्वकण्टिका, सहस्रवीर्या हेतु ऋष्यप्रोक्ता तथा महोदरी भी कही गई है। *शतावरी* पाचन में गुरु, वीर्य में शीतल, तिक्त स्वादिष्ट, रसायनी, बुद्धिवर्धिका, जठराग्नि प्रदीपनी, पुष्टिकारक, स्निग्ध, नेत्रों के लिए लाभकारी, गुल्म तथा अतिसार को दूर करने वाली होती है। शुक्रवर्धिका, स्तनों में दुग्धवर्धिका, बलदायिका, वातपित्त, रक्तदोष तथा सूजनादि की नाशिका है। *महाशतावरी* मेधावर्धिका, हृदय के लिए लाभकारी, कामोद्दीपिका, रसायनी, वीर्य में शीतल, अर्श, छोटी आँत के फोड़े तथा नेत्ररोग में लाभकारी है।

शतावरी के अङ्कुर त्रिदोषनाशक, पाचन में लघु, अर्श तथा क्षयरोग को दूर करने वाले हैं।

Mahasatāvari, another variety is also known as *satamūi, urdhvakantika, sahasravirya (sahasra) hetu, rsyaprokta* and *mahodari.*

Satavari is hard for digestion, cold in potency, bitter, sweet, rejuvenator, increases intellegence, digestive fire and nutrition, is unctuous, good for eyes (vision), cures abdominal tumour and diarrhoea, produces semen and breastmilk, gives strength, mitigates vāta, pitta asra (rakta), cures dropsy; mahasatavari is strengthening, good for intellegence and heart, aphrodisiac, rejuvenator, cold in potency, cures haemorrhoids, duodenal disease and eye diseases.

Its sprouts mitigates all three dosas, easily digestible, cures haemorrhoids and consumption.

99. सेम
Sema

संस्कृत – *Simbī-Pustasimbī*
(शिम्बी, पुस्तशिम्बी)
अंग्रेज़ी – Aliegume
बोटेनिकल – *Dolichos lablab*



सेम - Sema

सेम (शिम्बी) मज़बूत आरोहिणी लता (बेल) होती है। इसके पत्ते त्रिपत्रक (तीन पत्तों का मेल) वाले होते हैं तथा लट्वाकार या त्रिभुजाकार होते हैं। इसकी फलियाँ 2 से 4 इंच लम्बी होती हैं। इसके फूल सफेद व बैंगनी रंग के होते हैं। इसके फल, पत्ती, फूल और बीज का प्रयोग औषधि के रूप में किया जाता है। यह भारत में सभी जगह पाया जाता है।

Sema is strong upward moving creeper. *Sema* three leaves are joined at one stalk that is why called *'tripatrak'*. Its leaves are either like spinning top or triangular in shape. Its legumes are 2 to 4 inches long and its flowers are white and purple in colour. Its fruits, leaves, flower and seeds are used in the form of medicine. It is found all over India.

शिम्बीद्वयं च मधुरं रसे पाके हिमं गुरु ॥
बल्यं दाहकरं प्रोक्तं श्लेष्मलं वातपित्तजित् ॥

(भा.प्र.शा.व. 75)

सेम- दो प्रकार की होती है, दानों रस तथा विपाक में मधुर तथा पाचन में गुरु होती है। यह बलकारक दाहकारक कही गई है श्लेष्म (बलगमी कफ) को बढ़ाने वाली तथा वात्तपित्तनाशिका है। तथा वात-पित्त में लाभकारी होती है।

Simbika are two varieties of legumes. Both simbi are sweet in taste, and also after digestion, cold in potency, heavy for digestion, strengthening, produces burning sensation, increases kapha (with mucus) and mitigates vāta and pitta.

100. शङ्खहुली
Shankhhuli

संस्कृत – *शङ्खपुष्पी*
अंग्रेज़ी – Speedwheel
बोटेनिकल – *Convolvulus pluricaulis chois*



शङ्खहुली- Shankhhuli

शङ्खपुष्पी (शङ्खहुली) ज़मीन पर फैलने वाली बेल होती है। इसके पत्ते 0.2 से 1.5 इंच तक लम्बे होते हैं। इसके फूल शङ्ख के समान शंक्वाकार एवं सफेद होते हैं। इसीलिए इसे *शङ्खपुष्पी* कहते हैं। मई से दिसम्बर तक इसमें फूल और फल लगते हैं।

Shankhpushpi (Shankhhuli) is a creeper which spreads on the ground. Its leaves are 0.2 to 1.5 inches long. Its flowers are conical shaped white in colour, that is why it is called *shankhpushpi*. It bears flowers and fruit during the months of May to December.

शङ्खपुष्पी कम्बुपुष्पी शङ्खाह्वा कम्बुमालिनी।
तिलकी शङ्खकुसुमा मेध्या वनविलासिनी॥
शिङ्खिनी कटुतिक्तोष्णा कासपित्तबलासजित्।
विषापस्मारभूतादीन् हन्ति मेध्या रसायनी॥

कम्बुपुष्पी, शङ्खाह्वा, कम्बुमालिनी, तिलकी, शङ्खकुसुमा, मेध्या और *वनविलासिनी* – ये *शङ्खपुष्पी* के पर्याय हैं। *शिङ्खिनी (शङ्खपुष्पी)* रस में कटु-तिक्त एवं वीर्य में उष्ण होती है। यह कास, पित्त, कफ, विष, अपस्मार, भूतबाधा आदि का नाश करती है तथा मेधावर्धिका और रसायनी होती है।

Kambupuspi, sankhahva, kambumalini, tilaki, sankhakusuma, medhya and *vanavitasini* these are synonyms of *shankhpushpi*. It is bitter in taste and hot in potency. It is useful in Kasa (cough), pitta, Kapha, poison, histeria, and Bhutabadha. It increases intellegence and is reguvenator.

101. सिंदुवार, निर्गुण्डी
Sinduvāra

संस्कृत – *Sinduvāra (सिन्दुवार:)*
अंग्रेज़ी – Indian privet
बोटेनिकल – *Vitex negundo*



सिंदुवार, निर्गुण्डी - Sanduvāra

निर्गुण्डी एक पौधा होता है यह लगभग 3 से.मी. ऊँचा होता है। इसकी टहनियाँ झाड़ीदार तथा ऊपर की ओर उठी होती हैं। इसकी छाल पतली, चिकनी व धूसर वर्ण की होती है। इसके पत्ते पञ्चपत्रक (पाँच पत्तों के समूह वाले) होते हैं। इसके पर्णवृन्त (पत्तों की तीलियों) 2.5 से 3.8 से.मी. के होते हैं। इसके फूल पाण्डुर नील अथवा नीली आभा वाले बैंगनी रंग के होते हैं।

Nirgundi is a plant. It is about 3 cm tall with branches rising upward in the form of a bush. Its bark is thin, smooth and dirty grey. Its leaves grow in bunches of 5. Its leafstalks are 2.5 to 3.8 cm long. Its flowers are purple in colour with bluish tinge.

सिन्दुक: स्मृतिदस्तिक्त: कषाय: कटुको लघु:।
केश्यो नेत्रहितो हन्ति शूलशोथाममारुतान्।
कृमिकुष्ठारुचिश्लेष्मज्वरान्नीलापि तद्विधा॥
सिन्दुवारदलं जन्तुवातश्लेष्महरं लघु॥

(भा.प्र.,गुडू.व. 113, 114, 115)

सिन्दुवार स्मृति को बढ़ाने वाला, तिक्त, कषाय कटु तथा पाचन में लघु होता है। बालों (केश) एवं नेत्र के लिए लाभप्रद होता है। उदरशूल, सूजन, कृमि, कुष्ठ (तथा अन्य त्वचा रोगों में भी) अरुची, श्लेष्मा तथा ज्वर रोगों में लाभप्रद होता है। नीले पत्तों वाले *सिन्दुवार* के भी समान गुण होते हैं। *सिन्दुवार* का पत्ता आँतों के कीड़े दूर करने में लाभप्रद, वात एवं श्लेष्मा को दूर करने वाला एवं लघु होता है।

Sinduka bestows memory, bitter, astringent and pungent, easily digestible, good for hair and eyes (vision), cures pain/pain in the abdomen, swelling/dropsy, rheumatism, worms (intestinal), leprosy (and some skin diseases) loss of taste and fever of kapha origin, the blue flowered variety is similar in properties. Leaves of *sinduvāra* cures worms (intestinal), mitigates vāta and slesma (kapha) is easily digestible.

102. सौंफ, बड़ी सौंफ
Somph, Badi Somph

संस्कृत – *Satapuspā Misreya*
(शतपुष्पा-मिश्रेया)
अंग्रेज़ी – Fennel seeds
बोटेनिकल – *Peucedanum graveolens*



सौंफ, बड़ी सौंफ -
Somph, Badi Somph

सौंफ का पौधा 5 से 6 फीट ऊँचा होता है। इसके फूल हरे व पीले रंग के होते हैं इन्हीं फूलों के साथ छत्ते की तरह जो छोटे-छोटे बीज होते हैं, वही सौंफ कहे जाते हैं। एक ही डंठल में कई हरे रंग की पत्तियाँ निकलती हैं। यह भारत में सभी जगह होता है।

The plant of *satapuspa* is 5 to 6 feet high. It has green and yellow flowers. Along with these flowers there are seeds in umbicle form, which are called somph. So many green leaves are found on one stem. It is found all over India.

छत्रा शालेयशालीना मिश्रेया मधुरा मिसि:।
शतपुष्पा लघुस्तीक्ष्णा पित्तकृद्दीपनी कटु:॥
उष्णा ज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत्।
मिश्रेया तद्गुणा प्रोक्ता विशेषाद्यो त्रिशूलनुत्॥
अग्निमान्द्यहरी हृद्या बद्धविट्कृमिशुक्रहृत्।
रूक्षोष्णा पाचनी कासवमिश्लेष्मानिलान्हरेत्॥

(भा.प्र.ह.व. 90, 91, 92)

छत्रा, शालेया, शालीना, मिश्रेया, मधुरा, मिसि- *शतपुष्पा* के ही अन्य नाम हैं। *शतपुष्पा (सौंफ)* पाचन में लघु, तीक्ष्ण, वीर्य में उष्ण, ज्वर, वात, श्लेष्मा (बलगमी कफ) अल्सर, उदरशूल तथा नेत्ररोग को ठीक करने वाली है।

मिश्रेया के भी यही सब गुण हैं विशेष रूप से ये योनिशूल निवारक, अपच, हृदय के लिए हितकर, अवरूद्ध मल निवारक, आंत कृमि निवारक है। शुक्रनाशक, रूक्ष, वीर्य में उष्ण और पाचन में लघु है। यह कफ निवारक, वमन शामक और कफ एवं वात को कम करता है।

Chatra, saleya, salina, misreya, madhura, misi are the names of misreya. *Satapuspa* is easily digestible, penetrating, increases pitta, augments digestive, fire, pungent, hot in potency, cures fever, diseases of vāta, kapha, ulcers, pain in the abdomen and diseases of the eye.

Misreya is also similar in properties, especially it cures pain of the vagina, dyspepsia, good for the heart, removes obstructed faeces, intestianl worms and destroys semen, causes dryness, hot in potency, digestive, cures cough, vomiting, mitigates kapha and vata.

103. सोंठ
Sonţ

संस्कृत – Śunthī *(शुण्ठी)*
अंग्रेज़ी – Dry ginger
बोटेनिकल – *Zingiber officinale roscoe*



सोंठ - Sonţ

सूखे अदरक को *सोंठ* कहते हैं। *अदरक* का पौधा कोमल तथा 4 से 5 फुट ऊँचा पौधा होता है। इसकी शाखाएँ 2 से 4 फुट लम्बा होता है। इसके पत्ते 6 से 13 लम्बे, 1 इंच चौड़े अग्रभाग नुकीले तथा नीचे का भाग चिकना होता है। इसके फूल हल्के पीले तथा एक डंठल में 2 से 4 होते हैं। इसकी जड़ में औषधि गुण विद्यमान होता है। यह भारत में सभी जगह होता है।

Dried ginger is called *sonth*. This plant is soft and its heights is 4 to 5 feet. It leaves are 6 to 13 inches long. Its upper part is pointed and lower part is oily. Its flowers are light yellow and there are 2 to 4 flowers in one stalk. Its root has medicinal properties. It is found everywhere in India.

शुण्ठी रुच्यामवातघ्नी पाचनी कटुका लघु:।
स्निग्धोष्णो मधुरा पाके कफवातविबन्धनुत्॥
वृष्या स्वर्य्यावमिश्वासशूलकासहृदामयान्।
हन्ति श्लीपदशोथार्श आनाहोदरमारुतान्॥
आग्नेयगुणभूयिष्ठात् तोयांशपरिशोषि यत्।
संगृह्णाति मलं तत्तु ग्राहि शुण्ठ्यादयो यथा॥
विबन्धभेदिनी या तु सा कथं ग्राहिणी भवेत्।
शक्तिर्विबन्धभेदे स्याद्यतो न मलपातनो॥

(भा.प्र.ह.व. 45, 46, 47, 48)

सोंठ रुचिकर, गठिया रोग तथा पाचन में लाभप्रद,पाचक, कटु तथा पाचन में लघु स्निग्ध, वीर्य में उष्ण, विपाक में मधुर, कफवातनाशक, कब्ज़निवारक, कामोद्दीपक, स्वर को मधुर बनाने वाली, वमननिवारक होती है। यह साँस फूलने में , उदरशूल, हृदय रोग में लाभप्रद है। अर्श रोग, समस्त उदर रोग तथा वायु दोष में लाभकारी होता है।

आग्नेय गुण की अधिकता के कारण यह मल के जल तत्त्व को सुखा देती है। अत: कब्ज़कारक हो जाती है इसीलिए *सोंठ* इत्यादि को ग्राही माना गया है।

पूर्व में इसे कब्ज़नाशक बताया गया है तो ये कब्ज़कारक कैसे हो सकती है तो इसका उत्तर यही है कि सोंठ में अवरोध नाशक शक्ति है पर मल बाहर धकेलने की नहीं।

Ś*unthī* helps taste perception, cures rheumatism, is digestive, pungent in taste, easily digestible, unctuous, hot in potency, sweet after digestion, mitigates kapha and vāta, relieves constipation, is aphrodisiac good for voice, cures vomiting, dyspnoea, abdominal pain, diseases of the heart, filariasism dropsy, haemorrhoids, flatulance, abdomianal enlargement, diseases of maruta. (vāta).

Because of predominance of agneya guna (qualities of fire) it dries up the watery portions (in faeces etc.) and withhold their elimination—these drugs are known as grahi (water absorbants/constipative) such as sunthi etc.

It (*sunthī*) is described earlier as vibandhabhedini (remover of constipation) how can it become grahi (constipating) the explanation for this, it has the power to break up the obstruction but not to push the faeces out.



सोंठ - Sonth

104. सुदर्शन
Sudarsan, Sukhadarsan

संस्कृत – *Sudarsana (सुदर्शन)*
अंग्रेज़ी – Wide-leaved crinum
बोटेनिकल – *Crinum latifolium*



सुदर्शन -
Sudarsan, Sukhadarsan

यह पौधा 2 से 4 फुट ऊँचा होता है। इसके हरे पत्ते 2 से 4 फुट लम्बे 3 से 4 इंच चौड़े होते हैं। इसके फूल पौधे के बीच में निकलते हैं। यह फूल सफेद रंग का तथा इसमें बीच-बीच में गुलाबी रंग के धब्बे दिखाई देते हैं। यह भारत में सभी जगह होता है। इसकी पत्तियों और जड़ में औषधीय गुण होता है।

Sudarsana plant is 2 to 4 feet high. Its leaves are 2 to 4 feet long and 3 to 4 inches wide. Its flowers come out from the centre of this plant. It has white colour flowers which have dotted with pink colour patches. Its root and leaves have medicinal properties. It is found all over India.

सुदर्शना सोमवल्ली चक्राह्वा मधुपर्णिका।
सुदर्शना स्वादुरुष्णा कफशोथास्रवातजित्॥

(भा.प्र.व. 307)

सुदर्शन को सुदर्शना, सोमवल्ली, चक्राह्वा, मधुपर्णिका भी कहते हैं। यह स्वादु और उष्ण होता है। यह कफ, सूजन, रक्तविकार तथा वात रोग में लाभप्रद होता है ।

Sudarsana is called *sudarshna, somvalli, chakraahva* and *madhuparnika* also. *Sudarsana* is sweet, hot in potency, mitigates kapha, cures oedema, gout and diseases of vata origin.

105. सुपारी
Suparī

संस्कृत – *Ghontā/puga*
(घोण्टा-पूग:)
अंग्रेज़ी – Arecanut/betel nut
बोटेनिकल – *Areca catechu*



सुपारी- Suparī

सुपारी का वृक्ष 40 से 60 फुट ऊँचा होता है। इसके पत्ते 4 से 6 फुट लम्बे होते हैं। इसके फल गुच्छों में होते हैं। यह फल 2 से 2.5 इंच लम्बे अण्डे आकार वाले चिकने होते हैं। यही फल सुपारी कहा जाता है। इसके फूल छोटे आकार के होते हैं। यह भारत के दक्षिणी भू-भाग में पाया जाता है।

The height of *suparī* tree is 40 to 60 feet long. Its leaves are 4 to 6 feet long. Its fruit are in bunches. These fruits are called *suparī* 2 to 2.5 inches long, egg shaped and smooth. Its flowers are small. It is found in southern part of India.

पूगं गुरु हिमं रूक्षं कषायं कफपित्तजित्।
मोहनं दीपनं रुच्यमास्यवैरस्यनाशनम् ॥50॥
आर्द्रं तद् गुर्वभिष्यन्दि वह्निदृष्टिहरं स्मृतम्।
स्विन्नं दोषत्रयच्छेदि दृढमध्यं तदुत्तमम् ॥

(भा.प्र.आम्रा.व. 50, 51)

सुपारी कठिन, पाचक, वीर्य में शीतल, कषाय, कफ तथा पित्तरोगनाशक होता है। यह रुचिकार, मुख की स्वादहीनता का नाशक होता है। आर्द्र सुपारी (ताज़ी, अपक्व) पाचन में गुरु होता है तथा शरीर में ऐसे द्रव्यों का निर्माण करता है जो ऊतकों एवं रोमछिद्रों को अवरुद्ध कर देते हैं। साथ ही जठराग्नि को मन्द भी बना देता है।

Puga is hard for digestion, cold in potency, causes dryness, astringent, mitigates kapha and pitta, produces intoxication, increases digestive fire, helps taste, removes bad teste in the mouth.

Moist Nut (fresh, raw, uncooked) is hard for digestion, causes obstruction of tissue, pores etc. by producing more secretion inside, reduces the digestive fire.



सुपारी- Suparī

106. सूरन
Sūran

संस्कृत – *वेण*
अंग्रेज़ी – Yam
बोटेनिकल – *Amorphophallus campanulatum blume*



सूरन- *Sūran*

सूरन एक लाभदायक कन्द होता है। इसका पौधा 1 से 3 फीट ऊँचा होता है। इसमें 1 से 2 पत्ते निकलते हैं जो 30 से.मी. लम्बे तथा 1 से.मी. चौड़े छतरीनुमा होते हैं। इसका डंठल 60 से 90 से.मी. लम्बा कांटे की तरह उभरा हुआ होता है। इसके फूल बैंगनी रंग के तथा फल लाल रंग के दो तीन बीजों वाले होते हैं। यह भारत में सभी जगह होता है।

Sūran is a beneficial tuber. Its plant is 1 to 3 feet tall. It grows 1 to 2 leaves which are about 30 cm long and a centimetre wide forming into an umbrella shape. Its stalk is about 60 to 90 cm long bulging like a thorn. Its flowers are purple and fruits are red coloured and contain 2 to 3 seeds. This plant is found all over India.

स्थूलशूरणमाणकप्रभृतय: कन्दा ईषत्कषाया: ।
कटुका रूक्षा विष्टम्भिनो गुरव: कफवातला: पित्तहराश्च ॥

(भा.प्र.शु.सु. 306)

सूरन कफ तथा वायु दोष में लाभप्रद होता है। मोटा सूरन शकरकन्द के समान कुछ कसेले, कटु, रूक्ष, पेट को साफ करने वाला, विष्टम्भी, गुरु, कफ, वातकारक तथा पित्त हारक होते हैं।

Tuber of sthulakanda, *surana*, manaka etc. are slightly astringent, pungent, rough, constipating, heavy, increase kapha and vata and mitigates pitta.

107. तरबूज
Tarbuj

संस्कृत – *Kālinda (कालिन्दम्)*
अंग्रेज़ी – Water melon
बोटेनिकल – *Citrullus vulgaris schrad*



तरबूज- Tarbuj

तरबूज एक फल होता है इसका पौधा बेल (लता) होता हैं। इसके पत्ते हरे और हल्के सफेद 20 इंच चौड़े तक होते हैं। इसके फूल पीत वर्ण के और फल (अर्थात् तरबूज) 25 से.मी. तक चौड़ा गोलाकार, चिकना हरे रंग के धब्बों से युक्त होता है। भारत के सभी क्षेत्रों में यह पाया जाता है।

Tarbuj (kalinda) is a fruit. It is creeper plant. Its leaves are green and whitish in colour and are approximately 20 inches wide. Its flowers are yellow in colour. Its fruit is 25 cm wide spherical, smooth and has stripes on its surface. It is found everywhere in India.

कालिन्दं कृष्णबीजं स्यात्कालिङ्गश्च सुवर्त्तुलम्।
कालिन्दं ग्राहि दृक्पित्तशुक्रह्रच्छीतलं गुरु॥
पक्वं तु सोष्णं सक्षारं पित्तलं कफवातजित्॥

(भा.प्र.आम्रा.व. 43)

तरबूज को कालिन्द, कृष्णबीज, कालिङ्ग और सुवर्त्तुल कहते हैं। यह ग्राही (कब्ज़कारक) नेत्र, दृष्ट, पित्त तथा शुक्रह्रासक, शीतल, पाचन में गुरु होता है। पका हुआ तरबूज उष्ण, क्षारयुक्त पित्तवर्धक, कफ तथा वात में लाभदायक होता है।

Kālinda, krsnabija, kalinga and suvartulam are its names. *Kālinda* is constipating, destroys vision, mitigates pitta and semen, cold in potency, hard for digestion. Ripe fruit is hot in potency, alkaline, aggravates pitta and mitigates kapha and vata.

108. तुलसी
Tulasī

संस्कृत – *Tulasī*
तुलसी
अंग्रेज़ी – Holy basil
बोटेनिकल – *Ocimum sanctum*



तुलसी - Tulasī

तुलसी मध्यम कद का पौधा होता है। यह 30 से 60 से.मी. तक ऊँचा अनेक शाखाओं वाला सुगन्धित पौधा होता है। इसकी पत्तियाँ मुलायम हल्की रोएँदार 2.5 से 6.3 से.मी. लम्बी 1 से 3 से.मी. चौड़ी होती हैं। इसके फूल छोटे सफेद बैंगनी और लाल रंग के होते हैं इसकी पत्ती, जड़, बीज सभी प्रयोग में आते हैं। इसकी कई जातियाँ होती हैं। जैसे कृष्णा, गौरी आदि। यह भारत में सभी जगह पर होता है।

Tulsi is a medium size plant. Its height is 30 to 60 cm. It has numerous branches. It is an aromatic plant. Its leaves are smooth, light and hairy, 2.5 to 6.3 cm long and 1 to 3 cm wide. The colour of its flowers are red, white and purple. It has many varieties for e.g. krishana, gauri. Its leaves and seeds are all very useful. It is found everywhere in India.

तुलसी कटुका तिक्ता हृद्योष्णा दाहपित्तकृत्।
दीपनी कुष्ठकृच्छ्रास्रपार्श्वरुक्कवातजित्॥
शुक्ला कृष्णा च तुलसी गुणैस्तुल्या प्रकीर्त्तिता॥

(भा.प्र.पु.व. 63)

तुलसी कटु, तिक्त, दाह हृद्य, उष्ण और पित्तकारक, भूख को बढ़ाने वाली, कुष्ठ को नष्ट करने वाली, मूत्रकृच्छ्र, रक्तदोष, पाशर्वपीड़ा, कफ तथा वात को नष्ट करने वाली होती है। यह शुक्ल और कृष्ण भेद से दो प्रकार की होती है। ये दोनों समान गुणकारी होती हैं।

Tulasi is pungent, bitter, good for the heart, hot in potency, produces burning sensation and thirst, increases digestive fire, cures leprosy (and other skin diseases), dysuria, diseases of blood, pain in the flanks and mitigates kapha and vata.

Its two varieties sukla (white) and krishana (black) are similar in properties.

109. तुम्बी, लौकी
Tumbī, Laukī

संस्कृत – Alabū (अलाबू)
अंग्रेज़ी – White gourd
बोटेनिकल – *Lagenaria siceraria*



लौकी - Lauki

लौकी एक सब्ज़ी है। इसका पौधा बेल की तरह ज़मीन पर फैलता है। इसके पत्ते 15 से 18 से.मी. चौड़े गोलाकार हरे रंग के होते हैं। इसके फूल सफेद रंग के होते हैं। इसके फल लम्बे (लौकी) तथा गोल (लौकी) दो प्रकार के होते हैं। भारत में इसकी सब जगह खेती की जाती है।

Laukī is a vegetable. Its plant spreads on the ground like creeper. Its leaves are 15 to 18 cm wide circular and green in colour. Its flowers are white. Its fruit are long and circular in shape. It is cultivated everywhere in India.

मिष्टतुम्बीफलं हृद्यं पित्तश्लेष्मापहं गुरु।
वृष्यं रुचिकरं प्रोक्तं धातुपुष्टिविवर्धनम्॥

(भा.प्र.शा.व. 58)

मीठी लौकी– हृदय, पित्त, श्लेष्म के रोग में लाभकारी होती है तथा पाचन में गुरु होती है। यह कामोद्दीपक, रुचिकर एवं शरीर के पोषण में लाभकारी होती है।

Fruit of *tumbī* which is sweet in taste is good for the heart, mitigates pitta and slesma (kapha) and is hard for digestion, is aphrodisiac, helps taste, helps nourishment and growth of tissues.

110. वच, बच
Vac, Bac

संस्कृत – Vacā (वचा)
अंग्रेज़ी – Sweet flag
बोटेनिकल – *Acorus calamus*



वच, बच- Vac, Bac

वच एक छोटे कद का पौधा होता है। इसके पत्ते गन्ने की पत्तियों की तरह ज़मीन से 2 से 3 फुट ऊँचे होते हैं। इसके पत्ते नुकीले धारीदार 1 से 1.5 फुट लम्बे होते हैं। इसकी जड़ में औषधीय गुण होता है। यह भारत में सभी जगह होता है।

Vach (vac) is a small size plant. It is 2 to 3 feet high from the ground. Its leaves are those of like sugarcane leaves. These are pointed and 1 to 1.5 feet long. Its root has medicinal qualities. It is found everywhere in India.

वचोग्रगन्धा कटुका तिक्तोष्णा वान्तिवह्निकृत्।
विबन्धाध्मानशूलघ्नी शकृन्मूत्रविशोधिनी॥
अपस्मारककफोन्मांद भूतजन्त्वनिलान् हरेत्॥

(भा.प्र., ह.व. 103)

वच कटु, तिक्त, उष्ण, वमनकारक जठराग्नि उद्दीपक में राहत देने वाली मलमूत्रशोधक, मिरगी, कफ, उन्माद में लाभप्रद तथा भूत-प्रेत की बाधा को एवं वातमूल वाली व्याधियों को दूर करती है।

Vaca is pungent, bitter, hot in potency, produces vomiting, enhances digestive fire, relieves constipation, flatulence, pain in the abdomen, cleanses faeces and urine, cures epilepsy, insanity caused by kapha and bhuta (evil spirits), worms and diseases of vata origin.

111. वकायन
Vakāyan

संस्कृत – *महानिम्ब: (निम्बविशेष:)*
Mahanimba
अंग्रेज़ी – Bead tree
बोटेनिकल – *Melia azedarach linn*



वकायन - Vakāyan

वकायन का वृक्ष 30 से 40 फीट ऊँचा होता है। इसके पत्ते 3 इंच तक लम्बे 1.4 से 1.6 इंच चौड़े होते हैं। इसके फूल नीम फल के समान अपरिपक्वास्था में हरे तथा पकने पर पीले होते हैं। इसकी छाल भूरी, खुरदुरी होती है। इसकी जड़, छाल, फल में औषधीय गुण होता है। यह भारत में सभी जगह होता है।

The height of *vakāyan* tree is 30 to 40 feet. Its leaves are 3 inches long and 1.4 to 1.6 inches wide. Its flowers are green in the beginning like those of *neem* fruit but turn yellow when ripe. Its bark is hard and brown in colour. Its root and fruits are full of medicinal properties. It is found everywhere in India.

महानिम्ब: स्मृतोद्रेकी कार्मुको विषमुष्टिक:। केशमुष्टिर्निम्बरको रम्यकोऽक्षीर एव च ॥
महानिम्बो रसे तिक्त: शीत: पित्तकफापह:। कुष्ठरक्तविनाशी च विषूची हन्ति शीतल: ॥

(ध.नि, गुडू. प्र.व., 31, 32)

उद्रेकी, कार्मुक, विषमुष्टिक, केशमुष्टि, निम्बरक, रम्यक और अक्षीर, ये महानिम्ब के पर्याय हैं।

महानिम्ब तिक्त एवं वीर्य में शीत तथा विपाक में भी शीतल है। यह पित्त, कफ को नष्ट करने वाला, कुष्ठ एवं रक्तविकार का विनाश करनेवाला और विषूची रोग (कालरा) में लाभदायक तथा शीतल होता है।

The other names of Mahānimba are: Udrekī, Karmuka, Viśmustika, Keśmuśti, Nimbaraka, Ramyaka and Akśīr.

It tastes bitter, cold in potency and cold after digestion. It mitiages pitta, kapha, bleeding,Leprosy and Visuchi (Cholera).

112. वृद्धारु
Vriddhadāru

संस्कृत – *Vrddhadaruka*
(वृद्धदारुक:)
अंग्रेज़ी – Elephant creeper
बोटेनिकल – *Argyreia-nervosa*



वृद्धारु - Vriddhadāru

यह एक झाड़ीदार लम्बी लता होती है। इसकी टहनियाँ स्थूल होती हैं। इसके पत्ते 7.5 से 30 से.मी. लम्बे तथा अग्रभाग नुकीला होता है। इसका फूल गुलाबी, बैंगनी रंग का 7.15 से.मी.लम्बा तथा 2 से.मी. चौड़ा गोलाकार होता है। इसका फल कच्ची अवस्था में हरिताभ तथा पकने पर भूरे पीले रंग का होता है। इसकी पत्ती और जड़ का प्रयोग औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह भारत में सभी जगह होता है।

It is a long bushy plant. Its branches are thick. Its leaves are 7.5 to 30 cm long. Its front portion is pointed. Its flower are pink and purple. It is 7.15 cm long and 2 cm wide. It is circular in shape. Its fruit is green when raw and turns into brown and yellow when it is ripe. Its leaves and stem are used in making medicines. It is found everywhere in India.

वृद्धदारुक आवेगी छागान्त्री वृष्यगन्धिका।
वृद्धद्वारु: कषायोष्ण: कटफस्तिक्तो रसायन: ॥
वृष्यो वातामवातार्श:शोथमेहकफप्रणुत्।
शुक्रायुर्बलमेधोऽग्निस्वरकान्तिकर: सर: ॥

(भा.प्र.गुडू.व. 211)

वृद्धारु को आवेगी, छागांत्री तथा वृष्यगन्धिका कहते हैं। यह कषाय, उष्ण, कटु, तिक्त, रसायन, कामोद्दीपक, वात, अर्श, मधुमेह, कफ, शुक्र, आयु, बल, चर्म के लिए लाभप्रद होता है। यह अग्नि, स्वर एवं कान्ति को बढ़ाने वाला भी होता है।

Vrddha, daruka, avegi, chagantri, vrsyagandhika are its names. *Vrddhadāru* is astringent, hot in potency, pungent, bitter, is rejuvenator, aphrodisiac, cures diseases of vata, rheumatism, piles, dropsy, diabetes, mitigates, kapha, increases semen, lifespan, strength, intellegence, digestive fire, voice and bright complexion and is laxative.



21121

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5007-812-9